राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

सितंबर - 2024

मूल्य ₹ 50/-

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

प्रतिमा का गिरना...

राष्ट्रीय शर्म, प्रशासनिक भ्रष्टाचार, गुणवत्ता और लापरवाही को करता उजागर !

असुरक्षित दुनिया...

लड़कियों और महिलाओं के प्रति क्रूरता की पराकाष्ठा!

जल है।
तो कल है।
पृथ्वी के सतह पर दो-तिहई
जल है, लेकिन 0.002% ही
ताजा जल है पृथ्वी पर।
ताजा जल
अपशिष्ट
ना करें

Save Water !

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

•वर्ष : 9 •अंक: 06 •मुंबई •सितंबर -2024

मुद्रक-प्रकाशक,संपादक

नटराजन बालसुब्रमणियम

कार्यकारी संपादक

मंगला नटराजन अय्यर

उप संपादक

भाग्यश्री कानडे, तोषिर शुक्ला,
संतोष मिश्रा, जेदवी आनंद

ब्यूरो चीफ

ओडिशाः अशोक पाण्डेय
उत्तर प्रदेशः विजय दूबे
पटनाः राय यशेन्द्र प्रसाद

टंकन व पृष्ठ सज्जा

ज्योति पुजारी, सोमेश

मार्केटिंग मैनेजमेंट

राजेश अय्यर, शैफाली

संपादकीय कार्यालय

Add: Tirupati Ashish CHS., A-102, A-1 Wing , Near Shahad Station , Kalyan (W) , Dist: Thane, PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in, mangsom@rediffmail.com
Website: swarnimumbai.com

मालिक, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक : बी. नटराजन द्वारा तिरुपति को. ऑप, हॉसिंग सोसायटी, ए-१ विंग १०२, नियर शहाड स्टेशन, कल्याण (वेस्ट)-४२११०३, जिलाः ठाणे, महाराष्ट्र से प्रकाशित व *महेश प्रिन्टर्स, बिरला कॉलेज, कल्याण से मुद्रित।*

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

सभी विवादों का निपटारा मुंबई न्यायालय होगा।

इस अंक में...

महाराष्ट्र की राजनीति में तूफान ..	05
लड़कियों और महिलाओं के प्रति क्रूरता की पराकाष्ठा	10
देश-दुनिया	18
पकवान	20
राशिफल	24
शिल्पकला और चित्रकला का शानदार उदाहरण...	26
सिनेमा	29
कीस का ५वां गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड...	30
ओडिशा हलचल	32
विविधा	34
'जब द्वारकाधीश श्रीकृष्ण ने महामुनि दुर्वासा के क्रोध को शांत ...'	37
माटी वाली ..	40
एक छोटा-सा मज़ाक	43
दूसरी नाकी ...	46
'फसलों की रानी'	56

सुविचारः

सादगी से बड़ा कोई श्रृंगार नहीं है और विनम्रता से बड़ा कोई व्यवहार नहीं है।' -अशोक पाण्डेय

संपादकीय

शिवाजी महाराज की प्रतिमा का गिरना

मराठा पहचान और परम्परा के प्रतीक पुरुष, प्रथम हिन्दू नेता छत्रपति शिवाजी महाराज की प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा हाल ही में की गयी ३५ फीट ऊंची प्रतिमा का थरथरा कर गिर जाना राष्ट्रीय शर्म एवं प्रशासनिक भ्रष्टाचार का दुःखद अध्याय है। सिंधु दुर्ग में शिवाजी महाराज की इस प्रतिमा के गिर जाने से महाराष्ट्र की राजनीति में उबाल आना स्वाभाविक है, इससे लोगों का आहत होना भी उचित हैं। क्योंकि छत्रपति शिवाजी महाराज महाराष्ट्र के महानायक एवं जन-जन की आस्था के केन्द्र हैं। इस तरह हमारे एक महानायक की महान स्मृतियों से जुड़ी इस प्रतिमा का गिरना एवं ध्वस्त होना सरकार में गहरे पैठ चुके भ्रष्टाचार, लापरवाही एवं रिश्वतखोरी को उजागर करता है। नई संसद की छत क्यों टपकती है? नए मंदिर में पानी क्यों टपकता है? नया सबवे कैसे जलमग्न हो जाता है? इसी श्रृंखला में कोई पूछ सकता है कि नई खाली मूर्ति को पैरों से कैसे उखाड़ा जाता है। वस्तु एवं सेवा कर लागू करना हो, सरदार वल्लभ भाई पटेल की प्रतिमा का निर्माण हो या अटल सेतु का निर्माण या नए संसद भवन का उद्घाटन हो या राम मंदिर। एक देश कालातीत है, और कोई फर्क नहीं पड़ता कि कितना दिव्य, दिव्य और जिस व्यक्ति को इसका नेतृत्व करने का अवसर मिला है, उनके कार्यकाल की समय सीमाएं हैं।

कोई भी मनुष्य नश्वर है और भूमि शाश्वत और अनंत है। ऐसे में कोई अपनी छवि बनाने की कितनी भी कोशिश करे और इस देश के कार्यकाल पर छाप छोड़े, जो हमसे पहले कई साल और हमारे बाद कई साल खुशी से जिया है, उसकी सफलता की सीमाएं हैं। इस दुर्भाग्यपूर्ण श्रृंखला में, छत्रपति शिवाजी महाराज की मूर्ति, जो हिंदवी स्वराज्य के पहले, एकमात्र संस्थापक थे, को उखाड़ दिया जाता है। छत्रपति अन्य सभी की तुलना में अधिक दुर्भाग्यपूर्ण हैं। शिवाजी महाराज की प्रतिमा, जिन्होंने मुगल, आदिलशाही, निजामशाही जैसे कई 'शाही' तूफान पैदा किए, को केवल ४५ किमी प्रति घंटे की रफ्तार से चलने वाली हवाओं से नीचे लाया गया था, इस मूर्ति के बिल्डरों का कहना है। इतना ही नहीं, जो लोग शिक्षा विभाग के प्रभारी हैं, जिन्हें छत्रपति ने प्राथमिकता दी, वे कहते हैंः यह मूर्ति एक दुर्घटना थी क्योंकि बुराई से कुछ अच्छा निकलेगा!

यानी इन ज्ञानियों के अनुसार कुछ अच्छा होने के लिए छत्रपति की प्रतिमा पर गिरना जरूरी था। लेकिन इस तर्क को संतुष्ट नहीं किया जाना है। गिरी हुई मूर्ति ३५ फीट की थी। चलिए इसके स्थान पर १०० फुट की प्रतिमा बनाते हैं। दूसरे शब्दों में, वे ३५ फीट पर जो हुआ उससे संतुष्ट नहीं हैं। दरअसल, जिसने भी मालवन की मूर्ति देखी होगी, उसने देखा होगा कि वहां शिवाजी महाराज की प्रतिमा कैसे नहीं होनी चाहिए। महाराज समुद्र के तूफान में खड़े हैं। तथाकथित मूर्तिकार ने सोचा होगा कि महाराज जैसे छोटे लेकिन भव्य व्यक्तित्व वाला व्यक्ति कैसे खड़ा होगा, उसके दोनों पैरों के बीच की दूरी क्या होगी, हवा के कपड़े उसके शरीर पर कैसे होंगे और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि चेहरे पर सामान्य से अधिक ठोस भाव कैसे होंगे, आदि।

मूर्ति निर्माण और बुनियादी ढांचा हाल के शासनों का जुनून है। केवल ऊंचाई जो मूर्ति में मायने रखती है और अनुबंधों का आकार जो बुनियादी ढांचे में मायने रखता है। दोनों में, न तो सौंदर्य और न ही भविष्य है।

जेआरडी टाटा, जो इस देश में पले-बढ़े हैं और अब विदेशी महसूस करते हैं, कहते थे कि 'फोकस उत्कृष्टता के लिए होना चाहिए। अगर आपकी इच्छा अच्छे काम की है तो किया गया काम 'अच्छा' के गुण का होगा। जेआरडी पिछली पीढ़ी से है। तो उन्होंने कहा कि मनीषा 'अच्छी' हैं। अब, यह महसूस करते हुए कि यदि वे होते, तो इन चर्चों का लक्ष्य एक 'अच्छा' काम करना होता, और जेआरडी सड़कों पर छेद और गिरती मूर्तियों का अर्थ खो देता। सौंदर्य दृष्टि की कमी एक वास्तविकता है जिसे हम दिल्ली से मालवन तक देखते हैं। लक्ष्य कुछ करना है, अनुबंध देना है। लेकिन उन्हें एहसास नहीं है कि कुछ कुछ है, न ही उन्हें इसे समझने की आवश्यकता है। अगर वह वहां होतीं तो महाराष्ट्र में शिवाजी महाराज की इतनी खूबसूरत मूर्तियां हैं कि उन्हें देखकर वे कुछ ऐसी मूर्तियां बनाना चाहते जो उनके करीब जाएं।

प्रतापगढ़ या गेटवे ऑफ इंडिया पर छत्रपति प्रतिमाओं का दिखना भी गर्व की भावना पैदा करता है। उन दोनों जगहों पर छत्रपति के घोड़े, उसकी जांघ की मुड़ी हुई नसें, सभी में बहादुरी का भाव था। इसकी तुलना में मालवन की मूर्ति! खैर, जिसने भी इसे बनाया होगा, उसने उतना ध्यान नहीं दिया होगा, इस संदर्भ में बहाने हो सकते हैं कि इसे तीन सप्ताह में खड़ा किया जाना था, आदि। लेकिन जिसने भी इसका अनावरण किया, उसे यह नहीं पता होना चाहिए कि हम किसकी प्रतिमा का अनावरण कर रहे हैं? कि वे धन्य हैं कि उनके नाम पर एक और आधारशिला है! सभी रुचि सिर्फ संख्याओं में है। अनुबंधों और आधारशिला की! यह शिवाजी महाराज के जीवन और उपलब्धियों का अपमान है। महाराज उनीपुरी ५० वर्ष तक जीवित रहे। लेकिन जो काम आम आदमी अपने सामने के ५०० सालों में नहीं कर पाया, वो उसने सिर्फ ५० साल में कर दिखाया।

महाराज के जन्म से पहले, न केवल यह महाराष्ट्र, बल्कि पूरा दक्कन शांत था और लोग भूल गए थे कि उनकी रीढ़ की हड्डी है। महाराज ने इस पिछले जीवन के समाज में जीवन लाने और पूरे लोगों की रीढ़ को सीधा करने का एक अविश्वसनीय काम किया। उन्होंने जो बनाया वह आज भी उतना ही मजबूत है। लेकिन उन लोगों के खोखलेपन के बारे में क्या जो उनकी स्मृति में खड़े थे? एक समय शिवाजी महाराज के महाराष्ट्र ने देश का नेतृत्व किया था और शिवाजी महाराज के शासनकाल की शुरुआत पुणे देश की राजनीतिक राजधानी थी। कभी आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, वैचारिक जैसे कई क्षेत्रों में देश का नेतृत्व करने वाला महाराष्ट्र आज उस प्रतिमा की तरह हल्की हवा में नजर आ रहा है। प्रतिमा फिर से उठेगी - शायद विधानसभा चुनाव से पहले; लेकिन महाराष्ट्र का क्या, छत्रपति शिवाजी महाराज की प्रतिमा पूछ रही होगी। संभावना है कि यह सवाल भी फिर से खड़ी की गई मूर्ति के नीचे और आत्म-घृणा चीखों में दफन हो जाएगा! ■

महाराष्ट्र की राजनीति में तूफान

उद्धव ने CM की फोटो पर चप्पल मारी तो शिंदे बोले- जनता इन्हें जूतों से पीटेगी

महाराष्ट्र के कोल्हापुर में छत्रपति शिवाजी महाराज की मूर्ति गिरने के मामले में सिंधुदुर्ग पुलिस ने स्ट्रक्चरल कंसल्टेंट और ठेकेदार चेतन पाटिल को गिरफ्तार किया है। चेतन को आज सिंधुदुर्ग लाया जाएगा। चेतन पाटिल को गुरुवार रात कोल्हापुर में उसके रिश्तेदार के घर से गिरफ्तार किया गया। चेतन ने पहले दावा किया था कि वह प्रोजेक्ट के स्ट्रक्चरल कंसल्टेंट नहीं थे। इधर, महाराष्ट्र कला निदेशालय के डायरेक्टर राजीव मिश्रा का कहना है कि हमने सिर्फ ६ फीट के लिए परमिशन दी थी। नौसेना ने बिना बताए इसकी ऊंचाई ३५ फीट कर दी।

२६ अगस्त को छत्रपति शिवाजी महाराज की ३५ फीट ऊंची प्रतिमा गिरने के बाद सिंधुदुर्ग पुलिस स्टेशन में FIR दर्ज की गई थी। इसमें ठाणे के मूर्तिकार जयदीप आप्टे का नाम भी शामिल था।

महाराष्ट्र कला निदेशालय के डायरेक्टर राजीव मिश्रा का कहना है कि उन्होंने केवल ६ फीट की मूर्ति लगाने की परमिशन दी थी। इसके लिए मूर्तिकार ने मिट्टी का मॉडल दिखाया था। मंजूरी मिलने के बाद

छत्रपति शिवाजी महाराज महाराष्ट्र के महानायक एवं जन-जन की आस्था के केन्द्र हैं। वे महाराष्ट्र के जीवन का अभिन्न अंग हैं एवं वहां की राजनीति उनके नाम के इर्द-गिर्द घूमती है। महाराष्ट्र ही नहीं सम्पूर्ण देश में शिवाजी महाराज के प्रशंसक हैं। मराठों के अस्तित्व एवं अस्मिता के वे प्राण रहे हैं, मराठों को उन्होंने ने ही लड़ना सिखाया, उनके जीवन को उन्नत बनाया। उन्होंने बिना किसी भेदभाव के महाराष्ट्र की सभी जातियों को एक भगवा झंडे के नीचे एकत्रित किया और मराठा साम्राज्य की स्थापना की। शिवाजी ने अपने राज्य-शासन में मानवीय नीतियां अपनाई थी जो किसी धर्म पर आधारित नहीं थी। महाराष्ट्र क्योंकि उनकी जन्मस्थली ही नहीं कर्मस्थली भी रहा इसलिए महाराष्ट्र की आबोहवा में वे आज भी जीवंत हैं। ऐसे महानायक की प्रतिमा के गिर जाने के बाद महाराष्ट्र की राजनीति में तूफान खड़ा हो गया है।

नौसेना ने निदेशालय को यह नहीं बताया कि मूर्ति ३५ फीट ऊंची होगी। न ही यह बताया गया कि इसमें स्टील की प्लेटों का इस्तेमाल किया जाएगा।

स्टेट PWD ने नौसेना को २.४४ करोड़ रुपए ट्रांसफर किए थे। नौसेना ने मूर्तिकार और सलाहकार नियुक्त किए और डिजाइन फाइनल होने के बाद इसे निदेशालय को मंजूरी के लिए भेजा गया। बाद में ऊंचाई बढ़ा ली होगी। मिश्रा ने कहा कि अब से कल ाकारों और मूर्तिकारों को प्रतिमा स्थापित होने के बाद निदेशालय से अंतिम मंजूरी लेने के लिए कहा जाना चाहिए, न कि केवल मिट्टी के मॉडल के आधार पर। मंजूरी के लिए यह एक शर्त होनी चाहिए।

जब शिवाजी महाराज की प्रतिमा लगाई गई थी तब चेतन पाटिल स्ट्रक्चरल कंसल्टेंट थे। वे २०१० से कोल्हापुर के एक एजुकेशनल इंस्टीट्यूट में प्रोफेसर भी रहे। चेतन ने २ दिन पहले एक मराठी न्यूज चैनल को दिए इंटरव्यू में कहा था, 'प्रतिमा के निर्माण से मेरा कोई लेना-देना नहीं हैं। मैंने मूर्ति के लिए केवल प्लेटफॉर्म का डिजाइन तैयार किया था। मूर्ति का काम पुणे की कंपनी को दिया गया था।'

महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने २९ अगस्त को कहा था कि राज्य सरकार छत्रपति शिवाजी महाराज की प्रतिमा दोबारा बनवाने के लिए युद्धस्तर पर फैसला ले रही है। घटना की जांच के लि ए दो समितियां बनाई गई हैं। इसके लिए नौसेना के अधिकारी, आईआईटियन्स, वास्तुकारों, इंजीनियरों और अंतरराष्ट्रीय नामी मूर्तिकारों को बुलाया गया है। विपक्षी दल इस मामले में राजनीति न करें। छत्रपति शिवाजी महाराज को सम्मान देना सभी का कर्तव्य है।

छत्रपति शिवाजी महाराज की प्रतिमा का अनावरण पिछले साल ४ दिसंबर को नौसेना दिवस समारोह के दौरान किया गया था। इस प्रतिमा को लगाने का मकसद, छत्रपति शिवाजी महाराज की विरासत और मराठा नौसेना के आधुनिक भारतीय नौसेना के साथ ऐतिहासिक संबंधों का सम्मान करना था। प्रतिमा का अनावरण इश्र नरेंद्र मोदी ने किया था।

जल्द बनवाएंगे बड़ी प्रतिमा, शिवाजी की मूर्ति ढहने को लेकर पवार के बाद अब CM शिंदे ने मांगी माफी

एकनाथ शिंदे ने हाल ही में मालवन में राजकोट किले में छत्रपति शिवाजी महाराज की मूर्ति के ढहने की घटना की जांच के लिए विशेषज्ञों, संरचनात्मक इंजीनियरों और भारतीय नौसेना और राज्य सरकार के अधिकारियों की एक संयुक्त तकनीकी समिति के गठन का आदेश दिया है। समिति को दुर्भाग्यपूर्ण घटना के पीछे सटीक कारणों का निर्धारण करने और यह सुनिश्चित करने का काम सौंपा गया है कि भविष्य में ऐसी घटनाएं न हों।

छत्रपति शिवाजी महाराज की मूर्ति के ढहने को लेकर अब डिप्टी सीएम अजित पवार के बाद मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने माफी मांगी है। इसके साथ ही मुख्यमंत्री शिंदे ने जल्द से जल्द एक बड़ी मूर्ति बनाने का ऐलान किया है। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने हाल ही में मालवन में राजकोट किले में छत्रपति शिवाजी महाराज की मूर्ति के ढहने की घटना की जांच के लिए विशेषज्ञों, संरचनात्मक इंजीनियरों और भारतीय नौसेना और राज्य सरकार के अधिकारियों की एक संयुक्त तकनीकी समिति के गठन का आदेश दिया है। समिति को दुर्भाग्यपूर्ण घटना के पीछे सटीक कारणों का निर्धारण करने और यह सुनिश्चित करने का काम सौंपा गया है कि भविष्य में ऐसी घटनाएं न हों।

१. दिसंबर २०२३ में PM मोदी ने अनावरण किया था

२. २६ अगस्त को प्रतिमा के गिरने की तस्वीरें सामने आई थीं। अब इस चबूतरे को ढंक दिया गया है।

३. कला निदेशालय के डायरेक्टर बोले- मिट्टी का मॉडल दिखाकर परमिशन ली

४. स्टेट PWD ने नौसेना को २.४४ करोड़ रुपए ट्रांसफर किए थे।

५. सिंधुदुर्ग पुलिस के मुताबिक चेतन पाटिल ही छत्रपति शिवाजी महाराज की प्रतिमा का कंसल्टेंट और ठेकेदार थे।

६. सिंधुदुर्ग के मालवण पहुंचे डिप्टी CM अजित पवार ने प्रतिमा स्थल का जायजा लिया।

7. CM शिंदे ने कहा था- २ कमेटी करेंगी जांच

८. मूर्ति का काम पुणे की कंपनी को दिया गया था।'

हों।

महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री अजीत पवार ने हाल ही में छत्रपति शिवाजी महाराज की एक प्रतिमा के ढहने के बाद बुधवार को सार्वजनिक माफी जारी की, जिसे पिछले साल बनाया गया था। मराठा योद्धा राजा के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व को देखते हुए, इस घटना ने राज्य भर में व्यापक चिंता और आलोचना पैदा कर दी है। अजित पवार ने कहा कि 'शिवाजी महाराज हमारे देवता हैं, मैं उनकी प्रतिमा ढहने के लिए महाराष्ट्र के १३ करोड़ लोगों से माफी मांगता हूं।

शिवाजी महाराज की मूर्ति ढहने को लेकर शिवसेना (यूबीटी) प्रमुख उद्धव ठाकरे ने बुधवार को

एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली महाराष्ट्र सरकार की आलोचना की। ठाकरे ने कहा कि विपक्षी महा विकास अघाड़ी (एमवीए) एक सितंबर को मुंबई में मूर्ति ढहने के खिलाफ विरोध मार्च निकालेगी। महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री ने महाराष्ट्र के मंत्री दीपक केसरकर पर यह कहने के लिए निशाना साधा कि शिवाजी महाराज की मूर्ति ढहने से कुछ अच्छा हो सकता है। उन्होंने यह भी कहा कि यह दावा करना कि मालवन किले में शिवाजी महाराज की मूर्ति हवा के कारण गिर गई, बेशर्मी की पराकाष्ठा है।

छत्रपति शिवाजी महाराज की मूर्ति घटना को लेकर महाराष्ट्र के डिप्टी सीएम अजित पवार माफी मांगी है. एक बयान में उन्होंने कहा, 'इस संबंध में मैं महाराष्ट्र के १३ करोड़ लोगों से माफी मांगता हूं. छत्रपति शिवाजी महाराज हमारे देवता हैं और एक साल के भीतर उनकी मूर्ति का इस तरह गिरना हम सभी के लिए सदमा है.' अजित पवार के अलावा मुंबई बीजेपी अध्यक्ष आशीष शेलार ने भी माफी मांगी है. महाराष्ट्र के सिंधुदुर्ग जिले में अनावरण के करीब नौ महीने बाद छत्रपति शिवाजी महाराज की प्रतिमा के गिरने को लेकर आलोचनाओं से घिरी महाराष्ट्र की महायुति सरकार ने मंगलवार को कहा कि प्रतिमा का निर्माण नौसेना ने किया था, जबकि विपक्ष ने राज्य में सत्तारूढ़ गठबंधन पर निशाना साधा और मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के इस्तीफे की मांग की.

वहीं नौसेना के एक अधिकारी ने बताया कि नौसेना और लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) के कर्मियों ने मंगलवार को ढही हुई मूर्ति के स्थल का दौरा किया. सिंधुदुर्ग जिले में शिवाजी महाराज की प्रतिमा गिरने का मामला विधानसभा चुनावों से पहले एक बड़े विवाद का रूप लेने की आशंका के बीच, महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने कहा कि राज्य सरकार ने अब उसी स्थान पर १७वीं सदी के मराठा योद्धा राजा की एक बड़ी प्रतिमा स्थापित करने का निर्णय किया है. सिंधुदुर्ग से ताल्लुक रखने वाले महाराष्ट्र के मंत्री दीपक केसरकर ने उसी स्थान पर शिवाजी महाराज की १०० फुट ऊंची प्रतिमा स्थापित करने का प्रस्ताव रखा. मुंबई से लगभग ४८० किलोमीटर दूर इस तटीय जिले के मालवन तहसील के राजकोट किले लगी प्रतिमा ३५ फुट ऊंची थी, जो सोमवार को गिर गयी. आक्रोश के बाद, सिंधुदुर्ग पुलिस ने प्रतिमा गिरने की घटना को लेकर परियोजना में शामिल ठेकेदार जयदीप आप्टे और स्ट्रक्चरल कंसल्टेंट चेतन पाटिल के खिलाफ एक मामला दर्ज किया.

अयोध्या के राम मंदिर में पानी टपकने के बाद अब महाराष्ट्र के सिंधुदुर्ग जिले में छत्रपति शिवाजी महाराज की प्रतिमा ढहने को लेकर सरकार पर निशाना साधने वाली कांग्रेस खुद अपने ही बयान में फंसती नजर आ रही है. दोनों ही मामलों में केंद्र को घेरने वाली कांग्रेस अगर खुद सोच-विचार करती, तो ऐसे आरोप नहीं लगाती. दरअसल, सिंधुदुर्ग के एक किले में मराठा शासक छत्रपति शिवाजी महाराज की ३५ फुट ऊंची प्रतिमा सोमवार को तेज हवाओं के बीच गिर गई. घटना के बाद, विपक्षी दलों ने राज्य सरकार की आलोचना की और आरोप लगाया कि काम की गुणवत्ता पर कम ध्यान दिया गया था.

अधिकारियों ने बताया कि छत्रपति शिवाजी की प्रतिमा मालवन स्थित राजकोट किले में २६ अगस्त की दोपहर करीब एक बजे ढह गई, जिसके बाद विपक्ष ने सरकार पर हमला बोला. कांग्रेस नेता मनिकाम टैगोर ने शिवाजी की मूर्ति ढहने पर कहा, 'राम मंदिर और संसद में पानी का रिसाव हुआ था... जब हमने उनकी प्रतिमा देखी तो यह एक बहुत ही विचलित करने वाली तस्वीर थी... इससे काम की गुणवत्ता और इसमें शामिल भ्रष्टाचार का पता चलता है.'

इसी तरह से, राकांपा (एसपी) के प्रदेश अध्यक्ष एवं पूर्व मंत्री जयंत पाटिल ने कहा था, 'महाराष्ट्र सरकार इस घटना के लिए जिम्मेदार है क्योंकि

उसने उचित देखरेख नहीं की. सरकार ने काम की गुणवत्ता पर बहुत कम ध्यान दिया.' उन्होंने कहा कि मौजूदा महाराष्ट्र सरकार केवल नया टेंडर जारी करती है, कमीशन लेती है और उसके अनुसार ठेके देती है. शिवसेना (यूबीटी) विधायक वैभव नाइक ने भी काम की कथित खराब गुणवत्ता के लिए राज्य सरकार की आलोचना की. इस प्रतिमा का अनावरण नौसेना दिवस के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पिछले साल चार दिसंबर को किया था.

लेकिन आरोप लगाने से पहले विपक्ष यह भूल गया कि इस प्रतिमा का निर्माण नौसेना ने करवाया

था. ऐसे में सरकार पर आरोप लगाना कहीं से भी सही नहीं है. इस बीच, महाराष्ट्र के मंत्री दीपक केसरकर ने मंगलवार को सुझाव दिया कि छत्रपति शिवाजी महाराज की प्रतिमा गिरने पर राजनीति नहीं होनी चाहिए और उसी स्थान पर १०० फुट ऊंची एक नई प्रतिमा स्थापित करने का प्रस्ताव किया.

महाराष्ट्र में २०२३ में अनावरण की गई ३५ फीट ऊंची शिवाजी प्रतिमा गिरी, इसके पीछे का कारण

शिवाजी प्रतिमा गिरने पर मोदी बोले- मैं माफी मांगता हूं: २६ अगस्त को मूर्ति गिरी थी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शुक्रवार को महाराष्ट्र के दौरे पर हैं। पालघर के सिडको ग्राउंड में ७६ हजार करोड़ के प्रोजेक्ट्स का उद्घाटन करने के बाद उन्होंने छत्रपति शिवाजी की प्रतिमा गिरने के मामले पर माफी मांगी। सिंधुदुर्ग में लगाई गई यह प्रतिमा २६ अगस्त को गिरकर टूट गई थी। मोदी ने कहा- छत्रपति शिवाजी महाराज मेरे और मेरे दोस्तों के लिए सिर्फ एक नाम नहीं हैं। हमारे लिए छत्रपति शिवाजी महाराज सिर्फ एक महाराजा नहीं हैं। हमारे लिए वे पूजनीय हैं। आज मैं छत्रपति शिवाजी महाराज के सामने नतमस्तक हूं और उनसे क्षमा मांगता हूं। महाराष्ट्र के सिंधुदुर्ग जिले में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने छत्रपति शिवाजी महाराज की मूर्ति का अनावरण वर्ष २०२३ में ही किया था। अनावरण किए जाने के कुछ ही महीनों के बाद ये विशाल प्रतिमा ढह गई है। इस प्रतिमा के ढहे जाने के बाद विवाद भी उत्पन्न हो गया है। इस घटना के संबंध में प्राथमिकी दर्ज कर ली गई है और मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने जांच के आदेश दे दिए हैं। इसने विपक्षी दलों की ओर से भी भारी आलोचना को जन्म दिया है, जिन्होंने राज्य प्रशासन पर मराठा योद्धा का अनादर करने और कार्य की गुणवत्ता पर 'कम ध्यान' देने का आरोप लगाया है।

टाइम्स ऑफ इंडिया के अनुसार, सिंधुदुर्ग के मालवन में राजकोट किले में छत्रपति शिवाजी महाराज की मूर्ति सोमवार को दोपहर करीब १ बजे ढह गई। एक अधिकारी ने बताया कि घटना के तुरंत बाद, वरिष्ठ पुलिस और जिला प्रशासन के अधिकारी स्थिति का जायजा लेने और नुकसान का आकलन करने के लिए घटनास्थल पर पहुंचे। जिन्हें नहीं पता, उन्हें बता दें कि ३५ फुट ऊंची स्टील की प्रतिमा का अनावरण प्रधानमंत्री मोदी ने ४ दिसंबर, २०२३ को नौसेना दिवस समारोह के अवसर पर किले में किया था। प्रतिमा पर काम ८ सितंबर को शुरू हुआ और भारतीय नौसेना को यह काम सौंपा गया, क्योंकि उसे प्रतिमा निर्माण में कोई विशेषज्ञता नहीं है।

घटना के बाद एक बयान जारी करते हुए नौसेना ने कहा कि वह 'आज सुबह छत्रपति शिवाजी महाराज की प्रतिमा को हुई क्षति पर गहरी चिंता व्यक्त करती हैष्ठ राज्य सरकार और संबंधित विशेषज्ञों के साथ, नौसेना ने इस दुर्भाग्यपूर्ण दुर्घटना के कारण की तुरंत जांच करने और जल्द से जल्द प्रतिमा की मरम्मत, पुनर्स्थापना और पुनर्स्थापना के लिए कदम उठाने के लिए एक टीम तैनात की है।'

सिंधुदुर्ग के संरक्षक मंत्री रवींद्र चव्हाण, जो पीडब्ल्यूडी विभाग भी संभालते हैं, ने कहा कि कंपनी के ठेकेदार जयदीप आप्टे और संरचनात्मक सलाहकार चेतन पाटिल के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की कई धाराओं के तहत मामला दर्ज किया गया है। एनडीटीवी के अनुसार, इन आरोपों में मिलीभगत, धोखाधड़ी और सार्वजनिक सुरक्षा को खतरे में डालना शामिल है। एफआईआर लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) की शिकायत के बाद दर्ज की गई है, जिसमें आरोप लगाया गया है कि प्रतिमा का निर्माण घटिया गुणवत्ता का था।

इसमें आरोप लगाया गया है कि ढांचे के निर्माण में इस्तेमाल किए गए नट और बोल्ट जंग खाए हुए थे।

विभाग ने २० अगस्त को क्षेत्रीय तटीय सुरक्षा अधिकारी को मूर्ति की खराब स्थिति के बारे में पत्र भी लिखा था। टाइम्स ऑफ इंडिया के अनुसार, इसमें बताया गया था कि जून में मरम्मत कार्य के बावजूद स्थानीय ग्राम पंचायत और पर्यटकों ने शिकायत की थी कि मूर्ति कमजोर दिख रही है। हालाँकि, कोई निवारक कार्रवाई नहीं की गई। अखबार के अनुसार, भाजपा मंत्री चव्हाण ने कहा, 'मूर्ति बनाने में इस्तेमाल किए गए स्टील में जंग लगना शुरू हो गया था। पीडब्ल्यूडी ने नौसेना को पत्र लिखकर मूर्ति में जंग लगने की जानकारी दी थी और उनसे उचित कदम उठाने का अनुरोध किया था। नौसेना ने यह भी कहा कि उसने जल्द से जल्द मूर्ति की मरम्मत और उसे बहाल करने के लिए एक टीम तैनात की है।'

प्रतिमा ढहने के तुरंत बाद विपक्षी नेताओं ने महायुति सरकार की आलोचना की और कहा कि यह शिवाजी महाराज के प्रति बेहद अपमानजनक है। शिवसेना (यूबीटी) के आदित्य ठाकरे ने दावा किया कि चुनाव को देखते हुए स्मारक जल्दबाजी में बनाया गया था। उन्होंने कहा, 'उस अहंकार के कारण, महाराज के स्मारक को उसकी गंभीरता पर विचार किए बिना जल्दबाजी में बनाया गया था। इरादा केवल महाराज की छवि का उपयोग करना था, इसलिए स्मारक की गुणवत्ता को ध्यान में नहीं रखा गया,' उन्होंने आगे कहा कि 'महाराजा का अपमान करने वाली सरकार और भाजपा नामक जहरीले सांप को अब डसना चाहिए! महाराष्ट्र के गौरव छत्रपति शिवराय की हर छवि का ख्याल रखा जाना चाहिए!'

द हिंदू के अनुसार, विपक्ष के नेता विजय वडेट्टीवार ने कहा, 'यह शर्मनाक है कि इस सरकार ने छत्रपति शिवाजी महाराज की प्रतिमा के निर्माण में भी कथित रूप से धन की हेराफेरी की है।' उन्होंने इस घटना को भ्रष्टाचार में डूबी सरकार का 'शर्मनाक उदाहरण' बताया और इसकी गहन जांच की मांग

शिवाजी महाराज की मूर्ति गिरने के मामले में स्ट्रक्चरल कंसल्टेंट और ठेकेदार चेतन पाटिल गिरफ्तार...

महाराष्ट्र के कोल्हापुर में छत्रपति शिवाजी महाराज की मूर्ति गिरने के मामले में सिंधुदुर्ग पुलिस ने स्ट्रक्चरल कंसल्टेंट और ठेकेदार चेतन पाटिल को गिरफ्तार किया है। चेतन पाटिल को गुरुवार रात कोल्हापुर में उसके रिश्तेदार के घर से गिरफ्तार किया गया। चेतन ने पहले दावा किया था कि वह प्रोजेक्ट के स्ट्रक्चरल कंसल्टेंट नहीं थे। इधर, महाराष्ट्र कला निदेशालय के डायरेक्टर राजीव मिश्रा का कहना है कि हमने सिर्फ ६ फीट के लिए परमिशन दी थी। नौसेना ने बिना बताए इसकी ऊंचाई ३५ फीट कर दी।

२६ अगस्त को छत्रपति शिवाजी महाराज की ३५ फीट ऊंची प्रतिमा गिरने के बाद सिंधुदुर्ग पुलिस स्टेशन में FIR दर्ज की गई थी। इसमें ठाणे के मूर्तिकार जयदीप आप्टे का नाम भी शामिल था। २६ अगस्त को प्रतिमा के गिरने की तस्वीरें सामने आई थीं। अब इस चबूतरे को ढंक दिया गया है। महाराष्ट्र कला निदेशालय के डायरेक्टर राजीव मिश्रा का कहना है कि उन्होंने केवल ६ फीट की मूर्ति लगाने की परमिशन दी थी। इसके लिए मूर्तिकार ने मिट्टी का मॉडल दिखाया था। मंजूरी मिलने के बाद नौसेना ने निदेशालय को यह नहीं बताया कि मूर्ति ३५ फीट ऊंची होगी। न ही यह बताया गया कि इसमें स्टील की प्लेटों का इस्तेमाल किया जाएगा।

स्टेट PWD ने नौसेना को २.४४ करोड़ रुपए ट्रांसफर किए थे। नौसेना ने मूर्तिकार और सलाहकार नियुक्त किए और डिजाइन फाइनल होने के बाद

महाराष्ट्र कला निदेशालय के डायरेक्टर राजीव मिश्रा

इसे निदेशालय को मंजूरी के लिए भेजा गया। बाद में ऊंचाई बढ़ा ली होगी। मिश्रा ने कहा कि अब से कलाकारों और मूर्तिकारों को प्रतिमा स्थापित होने के बाद निदेशालय से अंतिम मंजूरी लेने के लिए कहा जाना चाहिए, न कि केवल मिट्टी के मॉडल के आधार पर। मंजूरी के लिए यह एक शर्त होनी चाहिए। जब शिवाजी महाराज की प्रतिमा लगाई गई थी तब चेतन पाटिल स्ट्रक्चरल कंसल्टेंट थे। वे २०१० से कोल्हापुर के एक एजुकेशनल इंस्टीट्यूट में प्रोफेसर भी रहे। चेतन ने २ दिन पहले एक मराठी न्यूज चैनल को दिए इंटरव्यू में कहा था, 'प्रतिमा के निर्माण से मेरा कोई लेना-देना नहीं हैं। मैंने मूर्ति के लिए केवल प्लेटफॉर्म का डिजाइन तैयार किया था। मूर्ति का काम पुणे की कंपनी को दिया गया था।'

की। शिवसेना (यूबीटी) के विधायक वैभव नाइक ने कथित तौर पर सिंधुदुर्ग के पीडब्ल्यूडी कार्यालय में तोड़फोड़ की, जो 'घटिया' काम के लिए जिम्मेदार था। उन्पूर्व राज्यसभा सांसद और कोल्हापुर राजघराने के उत्तराधिकारी ने कहा, 'अब उस स्थान पर छत्रपति शिवाजी महाराज के लिए एक उचित स्मारक बनाना आवश्यक है। हालांकि, चुनाव से पहले इसे पूरा करने की जल्दबाजी में हमें वही गलतियाँ दोहराने से बचना चाहिए। यह महत्वपूर्ण है कि इस स्मारक का वैज्ञानिक तरीके से पुनर्निर्माण किया जाए, भले ही इसमें अधिक समय लगे।' एआईएमआईएम के असदुद्दीन ओवैसी ने कहा कि शिवाजी की मूर्ति का गिरना 'मोदी सरकार द्वारा बनाए गए बुनियादी ढांचे की खराब गुणवत्ता का प्रतिबिंब है। शिवाजी समानता और धर्मनिरपेक्षता के प्रतीक थे, उनकी मूर्ति का गिरना पीएम मोदी की शिवाजी के दृष्टिकोण के प्रति प्रतिबद्धता की कमी का एक उदाहरण है।'

सीएम शिंदे ने घटना को स्वीकार किया और कहा कि यह घटना तेज हवाओं के कारण हुई है। उन्होंने कहा, 'यह घटना दुर्भाग्यपूर्ण है। छत्रपति शिवाजी महाराज महाराष्ट्र के पूज्य देवता हैं। यह प्रतिमा नौसेना द्वारा स्थापित की गई थी। उन्होंने इसे डिजाइन भी किया था। लेकिन करीब ४५ किलोमीटर प्रति घंटे की तेज हवाओं के कारण यह गिर गई और क्षतिग्रस्त हो गई।' उन्होंने कहा, 'कल पीडब्ल्यूडी और नौसेना के अधिकारी घटनास्थल का दौरा करेंगे और घटना के पीछे के कारणों की जांच करेंगे। मैंने घटना के बारे में सुनते ही पीडब्ल्यूडी रवींद्र चव्हाण को घटनास्थल पर भेजा। हम इस घटना के पीछे के कारणों का पता लगाएंगे और प्रतिमा को उसी स्थान पर फिर से स्थापित करेंगे।' भाजपा मंत्री चव्हाण ने कहा, 'राज्य ने प्रतिमा की स्थापना के लिए नौसेना को २.३६ करोड़ रुपये का भुगतान किया। लेकिन कलाकारों के चयन की पूरी प्रक्रिया, इसका डिजाइन नौसेना के अधिकारियों द्वारा किया गया।' महाराष्ट्र के मंत्री दीपक केसरकर ने कहा, 'मेरे पास घटना के बारे में पूरी जानकारी नहीं है। हालांकि, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि पीडब्ल्यूडी मंत्री रवींद्र चव्हाण, जो सिंधुदुर्ग जिले के संरक्षक मंत्री भी हैं, ने कहा है कि मामले की गहन जांच की जाएगी।' उन्होंने कहा, 'हम उसी स्थान पर एक नई प्रतिमा स्थापित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। पीएम मोदी द्वारा अनावरण की गई यह प्रतिमा, समुद्र में किला बनाने में शिवाजी महाराज के दूरदर्शी प्रयासों को श्रद्धांजलि देती है। हम इस मामले को तुरंत और प्रभावी ढंग से हल करने के लिए सभी आवश्यक कदम उठाएंगे।

लड़कियों और महिलाओं के प्रति क्रूरता की पराकाष्ठा

किसी की लाडली बेटी, प्यारी बहन, प्यारी पोती, भतीजी, प्रेमिका, पत्नी होने के बावजूद वासना विकार का शिकार होने से बेहतर है इस दुनिया में आकर मर जाना। माता-पिता जो अपनी बेटी को प्यार, प्यार से पालना चाहते थे, उसे सिखाना चाहते थे, और वह सब कुछ प्राप्त करना चाहते थे जो वे चाहते थे, एक बार एक छिपे हुए, लेकिन भयानक राक्षस द्वारा आतंकित किया गया था जिसे दहेज कहा जाता था। आज, इसे बलात्कार से बदल दिया गया है, सबसे भयानक शैतान।

ये सभी माता-पिता कोलकाता में एक डॉक्टर ल ड़की की नृशंस हत्या के बाद देश भर में उत्पन्न गुस्से का प्रतिनिधित्व करते हैं। चाहे वह दिल्ली हो, हैदराबाद हो, कोलकाता हो या उत्तराखंड... क्या हम वास्तव में २१ वीं सदी में रह रहे हैं यदि एक महिला जो किसी भी कारण से घर छोड़ती है, पुरुषों की विकृत क्रूरता का शिकार होती रहती है? कितनी बार लोग इस सब पर अपना गुस्सा व्यक्त करने के लिए सड़कों पर उतरते हैं? हर कुछ मिनटों में, जब ऐसा कुछ फिर से होता है, तो आप क्रोध, निराशा, हताशा के साथ मार्च करते हैं, और संतुष्ट होते हैं कि आपकी बेटी उसकी जगह नहीं थी? वर्षों से लगातार होने वाले अपराधों के संदर्भ में बलात्कार और क्रूर हत्या के भावनात्मक स्पेक्ट्रम को

बदलापुर के आदर्श स्कूल में बच्चों के साथ कथित दुर्व्यवहार के बाद सुबह से शहर में सख्त बंद का आयोजन किया गया था। अभिभावकों का धरना सुबह ६ बजे से आदर्श स्कूल के सामने चलता रहा। रात ९.३० बजे के बाद प्रदर्शनकारियों ने रेलवे स्टेशन की ओर मार्च किया। प्रदर्शनकारियों ने रेलवे ट्रैक पर धरना दिया। इस वजह से बदलापुर कर्जत ट्रेन सेवा पूरी तरह से ठप हो गई। हजारों लाखों रेल यात्री प्रभावित हुए। पुलिस की बार-बार अपील के बावजूद प्रदर्शनकारी टस से मस नहीं हुए। रेलवे पुलिस, वरिष्ठ पुलिस अधिकारी, मंत्री गिरीश महाजन और स्थानीय जन प्रतिनिधि प्रदर्शनकारियों के साथ खड़े थे। लेकिन इसके बाद भी प्रदर्शनकारी टस से मस नहीं हुए। करीब नौ से १० घंटे तक ट्रेन को रोका गया। आखिरकार शाम करीब ६.४५ बजे पुलिस ने प्रदर्शनकारियों पर लाठीचार्ज शुरू कर दिया। १० से १५ मिनट में पटरियां साफ कर दी गईं। लाठीचार्ज के बाद प्रदर्शनकारी भड़क गए। उन्होंने पुलिस पर पथराव भी शुरू कर दिया। रेलवे स्टेशन से प्रदर्शन हटाए जाने के बाद प्रदर्शनकारी स्टेशन के बाहर रेलवे स्टेशन में घुसने की कोशिश कर रहे थे। हालांकि पुलिस ने उन्हें खदेड़ दिया। पिछले नौ से १० घंटों से निलंबित स्थानीय सेवाओं को फिर से शुरू करने की आवश्यकता है। रेलवे पुलिस आयुक्त रवींद्र शिस्वे ने मीडिया को बताया कि सड़क को अब साफ कर दिया गया है और ट्रेन सेवाओं को फिर से शुरू करने के लिए सही परिस्थितियों का निर्माण करना होगा।

छोड़कर, एकमात्र सच्चाई जो बची है वह व्यवस्था है। इन सबके लिए पुरुष प्रधान व्यवस्था जिम्मेदार है। एक महिला के खिलाफ यह सबसे घृणित, क्रूर अत्याचार उसे एक पुरुष के दिमाग में अपनी जगह दिखाने के लिए है, उसे यह दिखाने के लिए है कि चाहे जो भी हो, मैं सामाजिक शक्ति के पदानुक्रम में आपसे बेहतर हूं। यह पुरुषों और महिलाओं के बीच संबंधों में शक्ति का संतुलन है। वास्तव में, यह संतुलित नहीं है। यह भावना कि आप एक महिला से श्रेष्ठ हैं, पुरुषों के दिमाग में न केवल खुद में बल्कि दुनिया की अधिकांश सामाजिक प्रणालियों में बचपन से ही पैदा होती है। वे इसके साथ बढ़ते हैं। शिक्षा, घर के माहौल, नारीवादी विचारों और संबंधित व्यक्ति की संवेदनशीलता के परिणामस्वरूप, कुछ पुरुष इस सब से बचते हैं और अपवाद बन जाते हैं।

लेकिन कई अन्य लोग सुस्त व्यवहार करना जारी रखते हैं क्योंकि उनके पास साहस नहीं है या उन्हें मौका नहीं मिलता है। घर पर मारपीट, सड़क पर छेड़छाड़ करना, अश्लील बातें कहना, अश्लील क्लिप भेजना, रिंग में जाना, सब 'पुरुषार्थ' से आते हैं। हजारों वर्षों से, जो महिला अपने घर तक सीमित है, केवल एक स्टोव और एक बच्चा करने के लिए बनाई गई है, आधुनिकता के युग में एक व्यक्ति के रूप में विकसित हुई है, जो उस पर लगाए गए बंधनों को फेंक देती है। बाधाओं पर काबू पाने। उन्होंने लिंग, जाति और वर्ग के पुरुष एकाधिकार को चुनौती दी है। बलात्कार और क्रूरता के अलावा एक आदमी के पास इसे रोकने और खत्म करने का और क्या तरीका हो सकता है? जब कुछ साल पहले एक सर्वेक्षण में महिलाओं से पूछा गया कि उन्हें सबसे ज्यादा क्या डर है, तो ज्यादातर महिलाओं ने 'बलात्कार' के साथ जवाब दिया। दूसरे शब्दों में, वे अपने जीवन के डर से अधिक बलात्कार से डरते थे। यही कारण है कि जब किसी के साथ बलात्कार होता है, तो सौ लड़कियों का स्थान सीमित हो जाता है।

वे खुले रहने, व्यवहार करने, देर से बाहर रहने आदि से प्रतिबंधित हैं। विचार यह है कि जब आपका बलात्कार होता है, तो पूरा जीवन 'बर्बाद' हो जाता है। उसकी पहचान छिपी हुई है ताकि उसे ठेस न पहुंचे। लेकिन यह सब एक ही तरह से क्यों करते रहें? मूल रूप से, स्थिति बदलने की संभावना बहुत कम है जब तक कि हम यह नहीं समझते कि एक महिला का वुजू कांच का बर्तन नहीं है, बलात्कार व्यक्ति के खिलाफ एक व्यक्तिगत अपराध नहीं है, बल्कि पितृसत्तात्मक मानसिकता द्वारा किया गया एक 'राजनीतिक' अपराध है, और इसे लड़कियों के दिमाग पर थोपता है। यह स्पष्ट है कि हमारे राजनेताओं में यह परिपक्वता नहीं है। वरना कुछ साल पहले हैदराबाद में बलात्कारियों का 'एनकाउंटर' हुआ था। यह समझ में आता है कि बलात्कारियों को तत्काल फांसी देने की मांग आम जनता से बहुत मजबूत है। लेकिन जब ममता बनर्जी जैसी मजबूत राजनीतिक नेता भी सिर्फ अपनी राजनीति के लिए कोलकाता में बलात्कार हत्या मामले में रविवार तक केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) को मौत की सजा की धमकी देती है, तो सब कुछ हास्यास्पद हो जाता है। हजारों सालों से चली आ रही मानसिकता को मौत की सजा कैसे ठीक कर सकती है? इसके विपरीत, निर्भया अधिनियम एक ऐसी तस्वीर पेश करता है कि यह केवल इसे बदतर बना देगा। ३५-३७ वर्षों में, १९७५ में मथुरा बलात्कार मामले से लेकर २०१२ में दिल्ली में निर्भया मामले तक, बलात्कार विरोधी कानून के बारे में कई विकास हुए हैं। निर्भया केस के बाद जब अपराध के लिए फांसी की सजा का प्रावधान पेश किया गया तो यह भी कहा गया कि इससे बलात्कारियों की हत्याओं की संख्या बढ़ेगी। यह कुछ हद तक सच होता दिख रहा है। जैसे ही कोलकाता मामले का विवरण सामने आया है, उनमें से कई सभी को गहराई से परेशान कर रहे हैं।

रेप के बाद डॉक्टर चिंतित युवती के मामले में की गई क्रूरता, जिस तरह से उसके शरीर को क्षत-विक्षत किया गया, वह इसे ईशनिंदा कहने से परे है। क्या कोई आदमी किसी आदमी के साथ ऐसा व्यवहार कर सकता है? आरोपी पुलिस का दोस्त बताया जा रहा है। पुलिस और अपराधियों के बीच की सीमा रेखा बेहद धुंधली बताई जा रही है, जिसे यह मामला एक बार फिर साबित करता दिख रहा है. इतने बड़े अस्पताल के सेमिनार हॉल में सीसीटीवी नहीं होना एक और खास बात है। अस्पताल ने शुरू में मामले को आत्महत्या के रूप में खारिज करने की कोशिश की, जो कि हर समय हमारे साथ होने वाले प्रकारों में से एक है। और इस सब के कारण, अस्पताल पर हमला करने वाली भीड़ ने आकर अस्पताल को अंधाधुंध नुकसान पहुंचाया, जो हमारी समग्र मानसिकता के अनुरूप भी है। जब पूछा गया कि कौन सा आम आदमी एक समूह के साथ जाने और ऐसा कुछ करने की हिम्मत कर सकता है, तो जवाब अलग हैं। जिस तरह दिल्ली की एक लड़की को निर्भया कहा जाता था, उसी तरह इस लड़की को अब अभया कहा जा रहा है। लेकिन अभया हो या निर्भया, घर पर, काम पर, कहीं भी कोई भी सुरक्षित नहीं है। ऐसी असुरक्षित दुनिया में, आपको लड़की पैदा नहीं होना चाहिए, बस।

घर पर मारपीट, सड़क पर छेड़छाड़ करना, अश्लील बातें कहना, अश्लील क्लिप भेजना, रिंग में जाना, सब 'पुरुषार्थ' से आते हैं। हजारों वर्षों से, जो महिला अपने घर तक सीमित है, केवल एक स्टोव और एक बच्चा करने के लिए बनाई गई है, आधुनिकता के युग में एक व्यक्ति के रूप में विकसित हुई है, जो उस पर लगाए गए बंधनों को फेंक देती है। बाधाओं पर काबू पाने। उन्होंने लिंग, जाति और वर्ग के पुरुष एकाधिकार को चुनौती दी है। बलात्कार और क्रूरता के अलावा एक आदमी के पास इसे रोकने और खत्म करने का और क्या तरीका हो सकता है? जब कुछ साल पहले एक सर्वेक्षण में महिलाओं से पूछा गया कि उन्हें सबसे ज्यादा क्या डर है, तो ज्यादातर महिलाओं ने 'बलात्कार' के साथ जवाब दिया। दूसरे शब्दों में, वे अपने जीवन के डर से अधिक बलात्कार से डरते थे। यही कारण है कि जब किसी के साथ बलात्कार होता है, तो सौ लड़कियों का स्थान सीमित हो जाता है। वे खुले रहने, व्यवहार करने, देर से बाहर रहने आदि से प्रतिबंधित हैं। विचार यह है कि जब आपका बलात्कार होता है, तो पूरा जीवन 'बर्बाद' हो जाता है। उसकी पहचान छिपी हुई है ताकि उसे ठेस न पहुंचे। लेकिन यह सब एक ही तरह से क्यों करते रहें?

बदलापुर बालिका मारपीट मामले में मंत्री गिरीश महाजन प्रदर्शनकारियों से विचार-विमर्श करने के लिए बदलापुर रेलवे स्टेशन पहुंचे। हालांकि, प्रदर्शनकारियों ने विरोध प्रदर्शन रोकने के उनके अनुरोध को अस्वीकार कर दिया। गिरीश महाजन ने प्रदर्शनकारियों को सरकार द्वारा उठाए जा रहे कदमों के बारे में जानकारी दी। मंत्री गिरीश महाजन प्रदर्शनकारियों से बातचीत करने के लिए करीब एक घंटे तक बदलापुर स्टेशन पर रहे। उन्होंने लगातार माइक पर मौजूद प्रदर्शनकारियों से संवाद करने की कोशिश की। हालांकि, विरोध को रोकने के उनके अनुरोध को प्रदर्शनकारियों ने ठुकरा दिया था। प्रदर्शनकारियों ने आरोपियों को यहां लाकर फांसी देने की मांग की। आखिरकार प्रदर्शनकारियों से एक घंटे की बातचीत के बाद आखिरकार गिरीश महाजन वहां से चले गए. जाने के बाद, उन्होंने मीडिया से बात कीः 'क्या विरोध राजनीति से प्रेरित है? महाजन ने कहा कि प्रदर्शन में 'लड़की बहन' योजना के बैनर लगे थे और कुछ लोग राजनीति से प्रेरित हैं। उन्होंने कहा, 'अब मैं इस बारे में क्या कह सकता हूं? कुछ लोग यहां 'मेरी प्यारी बहन' का बोर्ड लेकर खड़े हैं। इनमें से कुछ लोग राजनीति से प्रेरित हैं। उन्होंने कहा, 'यहां कोई नेतृत्व नहीं है. लेकिन यहाँ प्यारी बहन के कुछ बोर्ड हैं। कुछ बोर्ड छपे हुए प्रतीत होते हैं। अधिकांश भाग के लिए, वे रात में मुद्रित किए गए प्रतीत होते हैं। उन बोर्डों को यहां लाया जा रहा है। किसी को भी इस घटना का राजनीतिक लाभ नहीं उठाना चाहिए। कई लोग अपने मुंह का आनंद ले रहे हैं। यह घटना बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है। लेकिन कुछ लोग राजनीतिक लाभ लेने की कोशिश कर रहे हैं।

सरकार की ओर से क्या कार्रवाई? इस दौरान गिरीश महाजन ने इस मामले में सरकार द्वारा की जा रही कार्रवाई की जानकारी दी। उन्होंने कहा, देवेंद्र फडणवीस ने इसे स्पष्ट कर दिया है। एसआईटी का गठन किया गया है। स्कूल के प्रिंसिपल को सस्पेंड कर दिया गया है। दो और शिक्षकों को भी निलंबित कर दिया गया है। मामले को फास्ट ट्रैक कोर्ट में ले जाया गया है। काम में देरी करने वाले पुलिसकर्मियों को निलंबित कर दिया गया है। वहां के निरीक्षकों को भी निलंबित कर दिया गया है। लेकिन प्रदर्शनकारियों का कहना है कि आरोपियों को यहां लाकर यहां मारना चाहिए. हमारे पास ऐसा कोई कानून नहीं है। उन्होंने कहा, 'इस आंदोलन में कोई नेतृत्व नहीं है. मुझे नहीं पता कि किससे बात करनी है। कोई किसी की नहीं सुन रहा है। युवाओं का गुस्सा स्वाभाविक है। लेकिन ऐसा करने का तरीका रेलवे लाइन को बंद करना नहीं है। इसलिए हमने उनसे उनकी सभी मांगों को स्वीकार करने का अनुरोध किया। हम मामले को फास्ट ट्रैक कोर्ट में ले जाएंगे और यह सुनिश्चित करने की कोशिश करेंगे कि आरोपी को जल्द से जल्द कड़ी सजा मिले। कोई रास्ता निकलेगा। लेकिन समस्या यह है कि यहां कोई नेतृत्व नहीं है। देश के अलग-अलग हिस्सों के युवा एक साथ आए हैं। तो मुझे किससे बात करनी चाहिए? सवाल यह है कि इसे कौन किसको समझाएगा। कसाब को सजा मिलने में २-३ साल लग गए। लाखों लोग ट्रेन से घर जाना चाहते हैं, आवाजाही शुरू होनी चाहिए। यह मांग न करें कि यह संभव नहीं है। जो हुआ वह अपमानजनक है। हम भी उतने ही गुस्से में हैं। लेकिन उसे कानून द्वारा दंडित किया जाना होगा। कसाब ने अपने कई लोगों को मारा, पाकिस्तान से आए थे। लेकिन उसे भी सजा देने में २-३ साल ल

'हमारे अक्षय को धोखा दिया जा रहा है', माता-पिता का दावा

बदलापुर में यौन उत्पीड़न मामले में नागरिकों की नाराजगी के बाद पूरा मामला सुर्खियों में आ गया था। इस मामले में स्कूल के सफाई कर्मचारी अक्षय शिंदे को गिरफ्तार किया गया है। इसी बीच कल (२१ अगस्त) रात करीब ८ बजे कुछ लोग अचानक अक्षय शिंदे के घर में घुस गए और उनके सामान में तोड़फोड़ की। यह भी आरोप है कि उसके परिवार के सदस्यों के साथ भी मारपीट की गई। इस बीच पहली बार आरोपी अक्षय शिंदे के माता-पिता ने पूरे मामले पर प्रतिक्रिया दी है। अक्षय के माता-पिता ने एबीपी माझा को फोन पर जवाब दिया है।

अक्षय के माता-पिता ने कहा, 'यह सब झूठ है, अक्षय को काम करते हुए सिर्फ १५ दिन ही हुए थे। हमें १३ तारीख को ऐसी घटना के बारे में पता चला और १७ तारीख को अक्षय को पुलिस ने उठा लिया। उन्होंने हमें कुछ नहीं बताया। वहां काम करने वाली महिला ने हमें बताया कि अक्षय को ले जाया गया है।

अक्षय को पुलिस ने पीटा था। मेरे जवान बेटे को भी पुलिस ने मार डाला। जब आप चौकी पर गए तो पुलिस ने कहा कि आपके बेटे ने गलत काम किया है। लेकिन हमारे अक्षय को धोखा दिया जा रहा है।

'स्कूल में अक्षय का एकमात्र काम बाथरूम धोना था। अक्षय सुबह ११ बजे ही बाथरूम धोने जा रहे थे। कोई और काम नहीं दिया गया। इसके बाद वह स्कूल में झाड़ू लगाता था। जब स्कूल शाम ५:३० बजे खत्म होता था, तो हम झाड़ू लगाने जाते थे। हमारा पूरा परिवार हाउसकीपिंग का काम करता है। हमारा पूरा परिवार स्कूल में काम करता है।

क्या अक्षय धीमे हैं? इस सवाल के बारे में बात करते हुए अक्षय की मां ने कहा, 'नहीं, इतना नहीं है। एक बच्चे के रूप में, उसे थोड़ा दर्द था, उसके सिर में थोड़ा कमजोर था। लेकिन वह दवा पर था।

जब घर में तोड़फोड़ की गई थी तब आप वहां थे और क्या हुआ था?

इस पर अक्षय के पिता ने कहा, 'सीधे जनता घर में आई, छोटे लड़के से लेकर बड़े आदमी तक, हम सभी को मार दिया गया, मार दिया गया और घर से बाहर निकाल दिया गया। उसने हमसे कुछ नहीं कहा। हमें बताया गया था कि आप यहां नहीं रहना चाहते हैं .. यदि आपने ऐसा नहीं किया है, तो आप नहीं रहना चाहते हैं, 'आरोपी अक्षय शिंदे के माता-पिता ने कहा, जिन्होंने खुद का बचाव करने की कोशिश की।

ग गए। आखिरकार, हमने उसे फांसी दे दी है। हमें कानून का पालन करना होगा।

मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे और उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने घटना की जांच के आदेश दिए हैं। उन्होंने यह भी आश्वासन दिया कि आरोपियों को कठोरतम सजा दी जाएगी। जिस स्कूल में विध्वंस हुआ था, उसके अध्यक्ष ने हाथ मिलाया है और उनसे स्कूल में तोड़फोड़ नहीं करने का अनुरोध किया है। स्कूल अध्यक्ष ने क्या कहा? स्कूल अध्यक्ष ने प्रदर्शनकारियों से शांत होने की अपील की। उन्होंने कहा, 'पिछले सप्ताह स्कूल में जो हुआ वह निंदनीय और घृणित है। हम पुलिस के साथ यथासंभव सहयोग कर रहे हैं। हम प्रशासन और लड़की के माता-पिता के साथ भी सहयोग कर रहे हैं। 'हम यह भी देख रहे हैं कि हम अपने स्कूल सिस्टम को कैसे ठीक और सुरक्षित कर सकते हैं। मैं सभी से अनुरोध करता हूं कि किसी बात (बदलापुर अपराध) के लिए इस स्कूल से नाराज न हों। तुम भी उसी स्कूल में पढ़े हो, मैं भी... ' यह वाक्य कहते ही स्कूल अध्यक्ष का गला फड़क उठा। इसके बाद वह बोल नहीं पाए और आंख पर रूमाल रखकर वहां से चले गए। विद्यालय अध्यक्ष जय कोतवाल ने लोगों से अनुरोध किया है कि हाथ जोड़कर तोड़फोड़ न करें। आज सुबह से बदलापुर बंद का आह्वान बदलापुर में दो लड़कियों के यौन उत्पीड़न के मामले में आज बदलापुर बंद बुलाया गया था। इसके बाद से ही स्कूल के बाहर नागरिकों की भारी भीड़ जमा हो गई थी। हालांकि वहां तैनात पुलिस टीम ने भीड़ को रोक दिया। हालांकि, कुछ ही देर में प्रदर्शनकारियों की भीड़ ने पुलिस के सुरक्षा घेरे को तोड़ा और अंदर घुस गए। प्रदर्शनकारियों ने स्कूल में तोड़फोड़ की और उसे नष्ट कर दिया। कुछ प्रदर्शनकारी पेट्रोल लेकर आए थे, जिसे डाला गया और स्कूल में आग लगाने की कोशिश की गई। हालांकि पुलिस ने इस कोशिश को नाकाम कर दिया। पुलिस ने प्रदर्शनकारियों को तितर-बितर करने के लिए स्कूल परिसर में आंसू गैस के गोले दागे। वर्तमान में, स्कूल परिसर एक पुलिस शिविर बन गया है। स्कूल और बदलापुर स्टेशन के आसपास बड़ी संख्या में नारे लगाए जा रहे हैं।

कोलकाता में एक रेजिडेंट महिला डॉक्टर के बलात्कार और हत्या के मामले ने देश भर में कई रैलियां शुरू कर दी हैं। इस तरह के विरोध प्रदर्शनों में हमेशा एक आवाज होती है। जो कोलकाता से आए थे, अभी वही आवाज बदलापुर से आ रही है। 'आरोपी को हमें सौंप दो', 'आरोपी को फांसी दो'! इसका क्या होगा? राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो २०२२ के आंकड़ों से पता चलता है कि हर दिन लगभग ८६ बलात्कार होते हैं। तो क्या समाज हर दिन ८६ बलात्कारियों को फांसी देगा या सामूहिक बलात्कार होने पर अधिक पुरुष? अक्सर बलात्कार एक ज्ञात, ज्ञात, रिश्ते में पुरुषों द्वारा किए जाते हैं। मेरा मतलब है, पिता, चाचा, चाचा, भाई, पड़ोसी, गैंगस्टर, राजनेता, सुरक्षा गार्ड ... क्या यह पुरुष प्रधान व्यवस्था आगे आकर उन्हें फांसी देने की बात कहेगी? क्या फांसी के बाद बलात्कार रुक जाएगा? मुद्दा यह नहीं है कि बलात्कार के आरोपी को फांसी दी जानी चाहिए या नहीं, बल्कि 'बलात्कार क्यों होता है' की जड़ है। कई बलात्कार और बाल यौन हिंसा ने इस बात पर प्रकाश डाला है कि चार दीवारें - सुरक्षित घर - इस 'परिवार प्रणाली' द्वारा परिभाषित कितनी सुरक्षित हैं। बलात्कार महिलाओं के खिलाफ यौन हिंसा के हिमशैल का सिरा है। महिलाओं के खिलाफ हिंसा और बलात्कार एक स्पष्ट परिणाम है। इससे भी बदतर, राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़ों से पता चलता है कि हर तीन मिनट में एक महिला के साथ छेड़छाड़ की जाती है। और ये 'रिकॉर्डेड' नंबर! तो असूचित संख्या क्या होगी? यह एक ऐसी गंभीर वास्तविकता है और ऐसा लगता है कि यह दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। चौराहों, बस स्टॉप, ट्रेनों और स्टेशनों, सड़कों, स्कूलों, कॉलेजों, भीड़-भाड़, सुनसान जगहों और कभी-कभी सुरक्षित घरों में भी महिलाएं शिकार होती हैं। फिर नियम और प्रतिबंध हैं जो महिलाओं पर लगाए गए हैं। सात के भीतर, लड़कियां घर पर थीं। क्यों? जिन लोगों ने असुरक्षा पैदा की है, उन्हें सात बजे से पहले घर क्यों नहीं बुलाया जाता? कॉलेजों और चौकों में पुरुष हैं। वे सीटी बजाते हैं। छेड़छाड़ के कारण लड़कियों और महिलाओं के कॉलेज बंद कर दिए गए। नौकरी बंद करना। घर से बाहर निकलना बंद करें। लेकिन समाज छेड़खानी पर प्रतिबंध लगाने की बात भी नहीं करता। क्या महिलाओं को घूंघट और हिजाब पहनना चाहिए क्योंकि पुरुषों की दृष्टि खराब होती है? लेकिन पुरुषों की बुरी नजर का उपाय क्या है? यह इस पितृसत्ता व्यवस्था का उल्टा कानून है, जिसे पूरा समाज चुपके से स्वीकार करता है। यह हमारी तथाकथित गौरवशाली पितृसत्तात्मक व्यवस्था है! इस दमनकारी मर्दानगी की जड़ों को जड़ से उखाड़ने के लिए आपको खुद से शुरुआत करनी होगी। गर्भ में बेटे-बेटी की जांच रोकना, लड़की के जन्मदिन पर गिफ्ट में ज्वैलरी/भटूकली/बार्बी/गुड़िया नहीं देना... इसे निर्णायक रूप से किया जाना है। वह एक बैटबॉल और एक कार पसंद करेगी। वह कम उम्र से ही चिल्लाना, चिल्लाना, गलतियाँ करना सीख जाएगी। शुरू से ही उस पर भरोसा जगाएं। एक जैसे कपड़े, हेयर स्टाइल न पहनें, उसकी तरफ मत देखो। उसे अपनी रुचियों और जीवन शैली का फैसला करने दें। उसकी आवाज़, उसकी मुस्कान, उसका क्रोध, उसकी ताकत, उसकी बुद्धि, विश्वास मत खोना। उसे एक बच्चे के रूप में कूदने और सड़क पार करने का साहस रखने दें। उसकी बाहों को भी मजबूत करें, जो खुद की रक्षा कर सके। ताकत, ताकत, प्रवंचना, बुद्धिमान, चतुर, चतुर के साथ बड़े हों। उसे आश्रित, सहिष्णु, डरपोक, सामाजिक-व्यावहारिक अज्ञानी, संस्कृति-संचालित, कमजोर, कमजोर के रूप में सोचना बंद करो। उसे सिखाएं कि, मानव इतिहास के बाद से, वह एक नेता, एक लड़ाकू, एक बहादुर आदमी है जो समाज का नेतृत्व करता है। स्वाभाविक है कि ऐसी कर्तव्यपरायण, स्वतंत्र, आत्मनिर्भर, निर्णय लेने वाली 'वह' तब तक चुप नहीं रहेगी जब तक वह अपनी या समाज की रक्षा नहीं कर लेती। आधुनिक-वैश्वीकरण के युग में, क्या हम प्रतिस्पर्धा और विपणन में विज्ञापनों, टीवी, फिल्मों, ओटीटी जैसे प्लेटफार्मों पर महिला शरीर, अश्लील, हिंसक सेक्स के गंदे प्रदर्शन को अस्वीकार या बढ़ावा देते हैं? कभी भ्रामक और अश्लील विज्ञापनों के बारे में सोचते हैं? महिलाओं के शरीर का विपणन करके अधिक लाभ कमाने के लिए पूंजीवाद असभ्यता क्यों है? हम कितनी आसानी से गोरे और प्यारे और निष्पक्ष और सुंदर भूल जाते हैं? क्या हम इसे अलग कर सकते हैं? यह पुरुष प्रधान व्यवस्था लोकतंत्र के सभी स्तंभों में भी स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। क्या इसे सुधारा नहीं जा सकता? यहां पुरुष बनाम महिला का कोई मुद्दा नहीं है। इस व्यवस्था में पुरुष और महिला दोनों पितृसत्तात्मक विचारों के शिकार होते हैं। दोनों के लिए, यह सिस्टम द्वारा एक सेट-अप है। बेशक, दोनों कारक इस अराजक जीवन के साथ बाधाओं पर हैं। यही वजह है कि आजादी के ७८वें साल में भी 'आधा समाज' डरा हुआ है। फुटपाथ पर,

सड़क पर, यात्रा पर, सुनसान जगह पर, भीड़-भाड़ वाली जगह पर और यहां तक कि एक सुरक्षित 'घर' में भी। हम डरे हुए हैं... एक ही समाज, परिवार और गर्भ में पैदा होने वाले लड़कों और लड़कियों की देखभाल दो चरम सीमाओं पर क्यों की जाती है? असुरक्षा का जाल इतना व्यापक है कि यह कल्पना करना असंभव है कि इस समाज में एक महिला सुरक्षित हो सकती है ... और यह ईर्ष्या करने के लि ए एक 'आदमी' होने के लिए आकर्षक है! महिलाओं के खिलाफ अन्याय समाज पर एक कलंक है। हम सभी को इसके खिलाफ कदम उठाना होगा। क्या हम उन कई पुरुषों और महिलाओं को बधाई देते हैं जिन्होंने पितृसत्ता को तोड़ा है? हमारी जिम्मेदारी है कि हम सावित्री और ज्योतिबा की विरासत को आगे बढ़ाएं। चलो खुद से शुरू करते हैं। हिंसा बर्दाश्त मत करो, हिंसा मत होने दो। आइए परिवार के फैसलों, शिक्षा, नौकरियों, राजनीतिक और प्रशासनिक मशीनरी के साथ-साथ धन के बराबर हिस्से पर जोर दें। आइए अपने घरों, समुदायों, स्कूलों और कॉलेजों में महिलाओं के लिए असुरक्षित स्थानों को सुरक्षित करने के लिए एक संगठित पहल करें ... आइए हम सभी इस बात पर जोर देते रहें कि महिलाओं की सुरक्षा के लिए त्वरित और ठोस उपायों को कार्यस्थलों/यात्रा स्थलों, सरकार, प्रशासन, पुलिस, न्याय प्रणाली के माध्यम से लागू किया जाना चाहिए। यह कहना कि 'एक बलात्कारी को फाँसी दो' ठीक 'घाव को रगड़ने' जैसा है। यदि मूल संक्रमण को ठीक करना है, तो यह पुरुष शक्ति है जिसे मुट्ठी दी जानी है।

-शकुंतला भालेराव

कोलकाता रेप मर्डर : क्या थे पीड़िता के सपने, कैसी चाहती थी जिंदगी; सामने आए डायरी के पन्ने...

पीड़िता डॉक्टर ऑफ मेडिसीन (MD) की पढ़ाई में गोल्ड मेडल पाना चाहती थी. वो बड़ी डॉक्टर बनना चाहती थी. इस डायरी में उसने अपने सपनों को शब्दों में बयां किया था. उसने कुछ अस्पताल के नाम का जिक्र किया था, जिसमें वो आगे प्रैक्टिस करना चाहती थी.

पश्चिम बंगाल की राजधानी कोलकाता में जूनियर डॉक्टर से रेप और मर्डर के मामले में हर दिन नई जानकारी सामने आ रही है. इस केस को लेकर पश्चिम बंगाल की ममता बनर्जी सरकार पर सवाल उठ रहे हैं. देशभर में लोगों का आक्रोश दिख रहा है. इस बीच मामले की जांच कर रही CBI की टीम को पीड़िता की डायरी मिली है. इस डायरी में पीड़िता ने उन बातों का जिक्र किया था, जिन्हें वो जिंदगी में करना चाहती थी. दरिंदगी का शिकार हुई पीड़िता पढ़ाई में गोल्ड मेडल हासिल करना चाहती थी. वह अपने परिवार का बहुत अच्छे से ख्याल रखना चाहती थी. पीड़िता की डायरी से इन बातों का खुलासा हुआ है. हालांकि, इस डायरी के कुछ पन्ने फटे हुए हैं.

सूत्रों के मुताबिक, पीड़िता डॉक्टर ऑफ मेडिसीन (MD) की पढ़ाई में गोल्ड मेडल पाना चाहती थी. वो बड़ी डॉक्टर बनना चाहती थी. इस डायरी में उसने अपने सपनों को शब्दों में बयां किया था. उसने कुछ अस्पताल के नाम का जिक्र किया था, जिसमें वो आगे प्रैक्टिस करना चाहती थी.

लाश के पास बरामद हुई थी डायरी, कुछ पन्ने थे फटे इस मामले की जांच पहले कोलकाता पुलिस कर रही थी. पुलिस को पीड़िता की लाश के पास ये डायरी मिली थी, जिसमें कुछ पन्ने फटे हुए थे. पुलिस ने कहा है कि पीड़िता के शव के पास से जो डायरी उसे मिली थी, उस डायरी को सीलबंद हालत में CBI अधिकारियों को सौंप दिया गया था.

पीड़िता की हैंडराइटिंग कैसी थी? ये जानने के लि ए CBI ने उसके घर से कुछ नोट्स भी हासिल किए हैं. उन्हें जांच के लिए हैंडराइटिंग एक्सपर्ट को भेजा गया है.

कोलकाता के आरजी कर हॉस्पिटल में ट्रेनी डॉ क्टर की ८-९ अगस्त की रात को रेप के बाद हत्या कर दी गई थी. उसकी लाश कॉलेज के सेमिनार हॉल में मिली. उसकी दोनों आंखों, मुंह और प्राइवेट पार्ट से खून बह रहा था. गर्दन और जबड़े की हड्डी टूटी थी. पुलिस ने केस दर्ज किया. इस मामले में मुख्य आरोपी संजय रॉय को गिरफ्तार किया गया है. आरोपी कोल काता पुलिस का एक नागरिक स्वयंसेवक है. बताया जा रहा है कि अस्पताल के सभी विभागों में उसकी पहुंच थी. कई आरोपियों की तलाश जारी है.

इस बीच कोलकाता रेप मर्डर केस में पीड़िता के पोस्टमॉर्टम से नया खुलासा हुआ है. पुलिस ने ट्रेनी डॉ क्टर के परिवार को १२ अगस्त को पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट सौंपी थी. इसमें बताया गया कि ८-९ अगस्त की रात रेप और मारपीट के बाद ट्रेनी डॉक्टर की गला और मुंह दबाकर हत्या हुई थी. आरोपी ने डॉक्टर का बुरी तरह शोषण किया था. उसपर इतने जोर से हमल ा हुआ कि उसके चश्मे का कांच आंख में धंस गया था. एबनॉर्मल सेक्शुअलिटी और जेनाइटल टॉर्चर के कारण उसके प्राइवेट पार्ट पर गहरा घाव पाया गया.

इस केस में पश्चिम बंगाल सरकार ने बुधवार को २ असिस्टेंट पुलिस कमिश्नर समेत ३ अधिकारियों को सस्पेंड कर दिया है. १५ अगस्त को देर रात आरजी कर मेडिकल कॉलेज अस्पताल में हजारों की भीड़ ने तोड़फोड़ की थी. सरकार ने इसी मामले में इन अधिकारियों पर कार्रवाई की. वहीं, सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद आरजी कर मेडिकल कॉलेज की सुरक्षा CISF ने अपने हाथ में ले ली है.

हम रियायतें नहीं मांग रहे हैं, हम सुरक्षा मांग रहे हैं ...

कोलकाता के आर जी कर मेडिकल कॉलेज और अस्पताल में एक महिला रेजिडेंट डॉक्टर के क्रूर बलात्कार और हत्या के मामले में यह निश्चित है कि पूरे भारत में स्वास्थ्य कर्मियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए एक राष्ट्रीय कानून की तत्काल आवश्यकता है। यह डॉक्टर हैं जो दूसरों की देखभाल करने के लिए अपना जीवन समर्पित करते हैं जिन्हें संबोधित करने की आवश्यकता है। मेडिकल, पैरामेडिकल और सहायक कर्मचारियों सहित डॉक्टरों और स्वास्थ्य कर्मियों के पूरे समुदाय की सुरक्षा महत्वपूर्ण है। आवश्यक स्वास्थ्य देखभाल प्रदान करने में शामिल किसी भी व्यक्ति को हिंसा का सामना करना पड़ता है ... यहां तक कि अगर यह एक मरीज के भावनात्मक रिश्तेदारों द्वारा हमला है, तो यह आपको मार भी सकता है। देश भर के रेजिडेंट डॉक्टर स्वास्थ्य कर्मियों की सुरक्षा के लिए एक केंद्रीय कानून लागू करने की मांग करते हुए हड़ताल पर चले गए। कोलकाता की घटना के बाद आक्रोश के बावजूद, नीति निर्माताओं ने अब तक कोई कदम नहीं उठाया है। भारत के संविधान के अनुसार, सार्वजनिक स्वास्थ्य और अस्पताल राज्य के विषय हैं; यह तथ्य समस्या की जटिलता को जोड़ता है।

केंद्र सरकार ने पहले स्वास्थ्य देखभाल कर्मचारी और नैदानिक प्रतिष्ठान (हिंसा और संपत्ति को नुकसान की रोकथाम) विधेयक, २०१९ नामक एक मसौदा विधेयक प्रस्तावित किया था। सुझाव और आपत्तियां आमंत्रित की गई थीं। हालांकि, गृह मंत्रालय ने इस मामले को आगे नहीं बढ़ाने का फैसला किया। इसका कारण यह है कि 'अन्य व्यावसायिक समुदायों के लिए समान सुरक्षा की संभावना के बारे में चिंताएं' - अर्थात, अन्य प्रकार के पेशेवरों से डर जो आपको हमारे लिए करना चाहिए जैसा कि आपने चिकित्सा पेशेवरों की सुरक्षा के लिए किया है। सभी को समान सुरक्षा प्रदान करना न केवल राज्य का कर्तव्य है, बल्कि इससे पहले यह स्वीकार करना महत्वपूर्ण है कि स्वास्थ्य सेवा एक आवश्यक सेवा है, जहां डॉ क्टर या अन्य कर्मचारी अक्सर अत्यधिक तनाव में काम करते हैं और ये कर्मचारी सबसे कमजोर और भावनात्मक रूप से कमजोर लोगों के साथ बातचीत करते हैं। यह वातावरण हिंसा का कारण बन सकता है, जिससे कानूनी सुरक्षा का एक मजबूत ढांचा और भी जरूरी हो जाता है।

डॉक्टर, नर्स और संबंधित पैरामेडिकल स्टाफ अक्सर रोगी देखभाल को प्राथमिकता देने के लिए अपनी सुरक्षा, स्वास्थ्य और व्यक्तिगत जरूरतों की अनदेखी करते हैं। वे कई घंटे भारी दबाव में काम करते हैं, बार-बार अपनी जान जोखिम में डालते हैं। यह निराशाजनक है कि सुरक्षा के लिए वास्तविक और आसानी से देखने की आवश्यकता के बावजूद, स्वास्थ्य कर्मियों को अभी तक कानूनी सुरक्षा नहीं मिली है। पिछले कुछ वर्षों में स्वास्थ्य पेशेवरों के खिलाफ हिंसा खतरनाक स्तर तक पहुंच गई है। हिंसा में यह वृद्धि सीधे तौर पर स्वास्थ्य कर्मियों के लिए कानूनी सुरक्षा की कमी के कारण है। देश भर में डॉक्टरों द्वारा चल रहा आंदोलन स्वास्थ्य कर्मचारियों के लिए केंद्रीय सुरक्षा अधिनियम के कार्यान्वयन की मांग को लेकर है।...

डॉक्टर, नर्स और संबंधित पैरामेडिकल स्टाफ अक्सर रोगी देखभाल को प्राथमिकता देने के लिए अपनी सुरक्षा, स्वास्थ्य और व्यक्तिगत जरूरतों की अनदेखी करते हैं। वे कई घंटे भारी दबाव में काम करते हैं, बार-बार अपनी जान जोखिम में डालते हैं। यह निराशाजनक है कि सुरक्षा के लिए वास्तविक और आसानी से देखने की आवश्यकता के बावजूद, स्वास्थ्य कर्मियों को अभी तक कानूनी सुरक्षा नहीं मिली है। राष्ट्रीय राजधानी में एक प्रमुख शिक्षण अस्पताल में काम करने वाले और देश भर के कई राज्यों में सेवा करने वाले एक स्वास्थ्य पेशेवर के रूप में, मैं स्पष्ट रूप से कह सकता हूं कि पिछले कुछ वर्षों में स्वास्थ्य पेशेवरों के खिलाफ हिंसा खतरनाक स्तर तक पहुंच गई है।

हिंसा में यह वृद्धि सीधे तौर पर स्वास्थ्य कर्मियों के लिए कानूनी सुरक्षा की कमी के कारण है। देश भर में डॉक्टरों द्वारा चल रहा आंदोलन स्वास्थ्य कर्मचारियों के लिए केंद्रीय सुरक्षा अधिनियम के कार्यान्वयन की मांग को लेकर है। भारत में स्वास्थ्य कर्मियों के खिलाफ हिंसा बिना इलाज के नहीं जाना चाहिए और आपातकालीन सेवाएं बाधित नहीं होनी चाहिए। क्योंकि डॉक्टर अपने काम की गंभीरता को जानते हैं। जनता और नीति निर्माताओं के लिए इसे पहचानने और समर्थन करने का समय आ गया है। यह उन लोगों की रक्षा के लिए बहुत जरूरी कानून है जो अपनी भलाई के लिए अपना जीवन समर्पित करते हैं, इसलिए हमें एक साथ आना चाहिए।

U-Tropicana-Beach-Resort-in-Alibaug

One of the most beautiful resorts near Mumbai for family is the U Tropicana at Alibaug

उद्धव ने CM की फोटो पर चप्पल मारी तो शिंदे बोले- जनता इन्हें जूतों से पीटेगी

महाराष्ट्र के कोल्हापुर में छत्रपति शिवाजी महाराज की मूर्ति गिरने के विरोध में आज रविवार को महाविकास अघाड़ी (र्श्ञ्ञ) मुंबई में प्रदर्शन कर रही है। इसे जोड़े मारो (जूता मारो) आंदोलन नाम दिया गया है। MVA ने साउथ मुंबई के हुतात्मा चौक से गेटवे ऑफ इंडिया तक पैदल मार्च निकाला। इसमें उद्धव ठाकरे, आदित्य ठाकरे, शरद पवार, सुप्रिया सुले, नाना पटोले समेत MVA की तीनों पार्टियों के बड़े नेता शामिल हुए हैं।प्रदर्शन के दौरान उद्धव ठाकरे ने ण्श शिंदे, डिप्टी CM देवेंद्र फडणवीस और अजित पवार के पोस्टर पर चप्पल मारी। उन्होंने कहा- मोदी की माफी अंहकार से भरी हुई थी। वहीं, शरद पवार ने कहा- मूर्ति गिरना भ्रष्टाचार का एक उदाहरण है। इधर, ण्श शिंदे ने कहा- विपक्ष मामले पर राजनीति कर रहा है। जनता यह देख रही है। आने वाले चुनाव में महाराष्ट्र की जनता इन्हें जूतों से पीटेगी। भाजपा ने भी विपक्ष के प्रदर्शन के खिलाफ मुंबई में प्रोटेस्ट किया है।

भारत रूस से सबसे ज्यादा तेल खरीदने वाला देश बना

एक भारतीय रिफाइनिंग सूत्र ने कहा कि जब तक प्रतिबंधों को और कड़ा नहीं किया जाता, रूसी तेल के लिए भारत की आवश्यकता बढ़ती रहेगी। फरवरी २०२२ में रूस द्वारा यूक्रेन के खिलाफ युद्ध शुरू करने के बाद से रूस के साथ भारत का व्यापार बढ़ गया है, जिसका मुख्य कारण तेल और उर्वरक आयात है, जो वैश्विक कीमतों पर नियंत्रण रखने और मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने में मदद करता है। जुलाई में भारत चीन को पछाड़कर रूसी तेल का दुनिया का सबसे बड़ा आयातक बन गया है। ताजा घटनाक्रम ऐसे वक्त में सामने आया है जब चीनी रिफाइनरियों ने ईंधन उत्पादन से घटते लाभ मार्जिन के कारण अपनी तेल खरीद कम कर दी। जुलाई में, भारत के कुल तेल आयात में रूसी कच्चे तेल की हिस्सेदारी रिकॉर्ड ४४ प्रतिशत थी, जो अभूतपूर्व २.०७ मिलियन बैरल प्रति दिन (बीपीडी) तक पहुंच गई। यह आंकड़ा जून की तुल ना में ४.२ प्रतिशत की वृद्धि और पिछले वर्ष की समान अवधि की तुलना में १२ प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है। समाचार एजेंसी रॉयटर्स के अनुसार, चीनी सीमा शुल्क के आंकड़ों के आधार पर पाइपलाइन आपूर्ति और शिपमेंट दोनों सहित, रूस से चीन का तेल आयात जुलाई में कुल १.७६ मिलियन बीपीडी था।

भारतीय रिफाइनरों द्वारा किए गए आर्थिक लाभों और रणनीतिक निर्णयों से प्रेरित, रूसी कच्चे तेल पर भारत की बढ़ती निर्भरता को दर्शाता है। आयात में

वृद्धि वैश्विक ऊर्जा व्यापार गतिशीलता में बदलाव को रेखांकित करती है, जिसमें भारत तेल बाजार में एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में उभर रहा है। यूक्रेन पर रूस के हमले के जवाब में पश्चिमी देशों द्वारा मास्को के खिलाफ प्रतिबंध लगाने और अपनी ऊर्जा खरीद में कटौती करने के बाद भारतीय रिफाइनरियां छूट पर बेचे जाने वाले रूसी तेल पर भारी पड़ रही हैं।

रॉयटर्स के अनुसार, एक भारतीय रिफाइनिंग सूत्र ने कहा कि जब तक प्रतिबंधों को और कड़ा नहीं किया जाता, रूसी तेल के लिए भारत की आवश्यकता बढ़ती रहेगी। फरवरी २०२२ में रूस द्वारा यूक्रेन के खिल ाफ युद्ध शुरू करने के बाद से रूस के साथ भारत का व्यापार बढ़ गया है, जिसका मुख्य कारण तेल और उर्वरक आयात है, जो वैश्विक कीमतों पर नियंत्रण रखने और मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने में मदद करता है। भारत की बढ़ती तेल खरीद रूसी ईएसपीओ ब्लेंड क्रूड के प्रवाह को नया आकार दे रही है, जिसे पारंपरिक रूप से चीनी खरीदार दक्षिण एशिया की ओर पसंद करते हैं। आंकड़ों के अनुसार, जुलाई में भारत का ईएसपीओ क्रूड का आयात बढ़कर १८८,००० बैरल प्रति दिन (बीपीडी) हो गया, जो बड़े स्वेजमैक्स जहाजों के उपयोग से सुगम हुआ। आमतौर पर, पूर्वोत्तर चीन की रिफाइनरियां अपनी भौगोलिक निकटता के कारण ईएसपीओ की प्राथमिक उपभोक्ता हैं, लेकिन ईंधन की सुस्त मांग के बीच उनकी मांग में गिरावट आई है। रूस से भारत के बढ़ते आयात के बावजूद, इराक ने जुलाई में भारत के दूसरे सबसे बड़े तेल आपूर्तिकर्ता के रूप में अपनी स्थिति बनाए रखी, इसके बाद सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात रहे। आंकड़ों के अनुसार, इसके अतिरिक्त, मध्य पूर्व से भारत का कच्चा तेल आयात जुलाई में ४ प्रतिशत बढ़ गया, जिससे भारत की कुल तेल आपूर्ति में क्षेत्र की हिस्सेदारी बढ़कर ४० प्रतिशत हो गई, जो जून में ३८ प्रतिशत थी।

पोस्टमार्टम हाउस में लाशों के बीच दो लोगों ने मिटाई अपनी हवस!

उत्तर प्रदेश के गौतमबुद्ध नगर में स्थित एक 'पोस्टमार्टम हाउस' के अंदर सफाईकर्मी और एक महिला के बीच प्रेम-प्रसंग का विचित्र मामला सामने आया है। इस प्रेम प्रसंग का एक ६.१७ मिनट का वीडियो सोशल मीडिया के विभिन्न मंचों पर बुधवार से वायरल हो रहा है जिस पर लोग तरह-तरह की टिप्पणी कर रहे हैं।

नोएडा। मुर्दाघर जहां मुर्दों को रखा जाता है और पोस्टमार्टम हाउस (झ्दू श्दूास्प्दले) में लाशों की चीर-फाड़ की जाती है। लाशों का जहां पोस्टमार्टम किया जाता है वहां आम इंसान की जाते वक्त रूह कांप जाती है। केवल कुछ डॉक्टर और मजबूत दिल वाले स्टाफ के लोग ही ऐसे वातावरण में रह पाते हैं। लाशों के बीच और डरावनी जगह जहां आम आदमी के जाने की मनाही होती है वहां से एक रासल ीला करने का वीडियो सामने आया हैं। लाशों के बीच एक आदमी और औरत यौन संबंध बनाते हुए देखे गये। यौन संबंध बनाने का पूरा ६ मिनट का वीडियो सोशल मीडिया पर आ गया।

उत्तर प्रदेश के गौतमबुद्ध नगर में स्थित एक 'पोस्टमार्टम हाउस' के अंदर सफाईकर्मी और एक महिला के बीच प्रेम-प्रसंग का विचित्र मामला सामने आया है। इस प्रेम प्रसंग का एक ६.१७ मिनट का वीडियो सोशल मीडिया के विभिन्न मंचों पर बुधवार से वायरल हो रहा है जिस पर लोग तरह-तरह की टिप्पणी कर रहे हैं। यह मामला नोएडा के सेक्टर ९४ में स्थित पोस्टमार्टम हाउस का है जहां पर मौत के कारण का पता लगाने के लिए लोगों के शवों का पोस्टमार्टम किया जाता है। यहां पर अस्पताल की तरफ से कड़ी सुरक्षा व्यवस्था का दावा किया जाता है क्योंकि कई पोस्टमार्टम काफी संवेदनशील प्रकृति के होते हैं और शवों के साथ की गई छेड़छाड़ से आरोपी बच सकते हैं।

इसके बावजूद यहां पर कार्यरत सफाईकर्मी एक बाहर की महिला को प्यार करने के लिए पोस्टमार्टम हाउस में बुलाता है। वायरल वीडियो में वह महिल ा के साथ जमीन पर बिछी चादर पर आपत्तिजनक स्थिति में दिख रहा है। सफाईकर्मी महिला से जोर जबरदस्ती करता भी दिखाई दे रहा है। इस बाबत पूछने पर पोस्टमार्टम हाउस के नोडल अधिकारी और गौतमबुद्ध नगर के उप मुख्य चिकित्सा अधिकारी (डिप्टी सीएमओ) डॉक्टर जयेश लाल ने कहा कि अभी तक उन्हें कोई वीडियो प्राप्त नहीं हुआ और ना ही किसी ने शिकायत की है। उन्होंने कहा कि शिकायत मिलने के बाद इस मामले की जांच कराई जाएगी और संबंधित के खिलाफ कठोर कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने बताया कि पोस्टमार्टम हाउस में सुरक्षा के मद्देनजर दो सुरक्षा गार्ड तैनात किए गए हैं। उन्होंने कहा कि कोई महिला कर्मचारी पोस्टमार्टम हाउस में तैनात नहीं है।

मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने घोषणा की, 'अब हम प्रिय किसानों की योजना को लागू करेंगे

विधानसभा चुनाव नजदीक आने के साथ सभी राजनीतिक दल कड़ी मेहनत कर रहे हैं। चुनाव से पहले महाराष्ट्र में नेताओं के दौरे बढ़ गए हैं। इन दौरों के जरिए आगामी चुनाव की रणनीति पर काम किया जा रहा है। कुछ दिन पहले ही महायुति सरकार ने मुख्यमंत्री लड़की बहन योजना शुरू की थी। प्रदेश में इस योजना की खूब चर्चा हो रही है। इस प्यारी बहन योजना को लेकर सत्तापक्ष और विपक्ष के बीच आरोप-प्रत्यारोप का खेल भी चल रहा है। इस बीच, बीड में आज एक राज्य स्तरीय कृषि महोत्सव का आयोजन किया गया। इस कृषि पर्व में मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने बड़ा ऐलान किया है। मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने कृषि महोत्सव में घोषणा की कि लाडकी सिस्टर योजना

के बाद अब लड़का किसान योजना लागू की जाएगी।

उन्होंने कहा कि महागठबंधन सरकार का काम किसानों की फसलों के लिए सीधा बाजार उपलब्ध कराना है। हमारे पास पैकेट नहीं हैं, किसानों को सीधा बाजार देने का काम हमारा है। हमारी सरकार की नीति मेहनतकश, वारकरी और खुशहाल किसानों की है। आज मैं केवल इतना कह सकता हूं कि मुख्यमंत्री प्रिय बहन योजना लेकर आए। इसके बाद अन्नपूर्णा योजना आई। फिर आया प्यारे भाई का प्ल ान। अब हम प्रिय किसान योजना को लागू करने जा रहे हैं। सभी भाई प्यारे हो गए हैं, सभी बहनें प्यारी हो गई हैं, अब किसान भी प्यारे हो जाएंगे।

हरी मिर्च ठेचा

सामग्रीः
१५-२० हरी मिर्च
२-४ लहसुन की कलियां
नमक स्वादानुसार
१ छोटा चम्मच नींबू का रस
१ बड़ा चम्मच तेल
१ छोटा चम्मच जीरा

विधिः सबसे पहले हरी मिर्च को धोकर उसके दो टुकड़े कर लें. साथ ही लहसुन भी छिल लें. हल्की आंच में पैन में तेल गर्म कर लें. तेल के गर्म होते ही हरी मिर्च और लहसुन को तीन-चार मिनट के लिए भून लें. अब भूनी हुई मिर्च और लहसुन में नमक डालकर सिलबट्टे में दरदरा पीस लें। फिर उसी पैन में तेल गर्म कर जीरा का छौंक लगाएं. इसमें पिसी हुई हरी मिर्च और लहसुन डालकर थोड़ा-सा भून लें. मिर्च के भुनते ही नींबू का रस मिलाएं. तैयार है स्वादिष्ट हरी मिर्च का ठेचा. आप इसे रोटी, पराठा और दाल चावल के साथ भी खा सकते हैं।

पोटैटो हब

सामग्रीः
२ छोटे आलू
१/४ ऑलिव ऑयल
१/४ टीस्पून लौंग पाउडर
१/४ टीस्पून काली मिर्च पाउडर
१/४ टीस्पून काला नमक
१ टीस्पून चीनी
१ टीस्पून ऑरिगैनो
१ टेबलस्पून हरा धनिया

विधिः सबसे पहले आलू को धोकर बिना छीले इन्हें टुकड़ों में काट लें. मीडियम आंच पर एक पैन में तेल डालकर गर्म करने के लिए रख दें. गर्म तेल में आलू डालकर हल्का फ्राई कर लें. फ्राइड आलू को प्लेट में निकाल लें और काली मिर्च पाउडर, नमक, ऑरिगैनो और चीनी डालकर मिक्स करें. तैयार है पोटैटो हब. हरा धनिया डालकर सर्व करें.

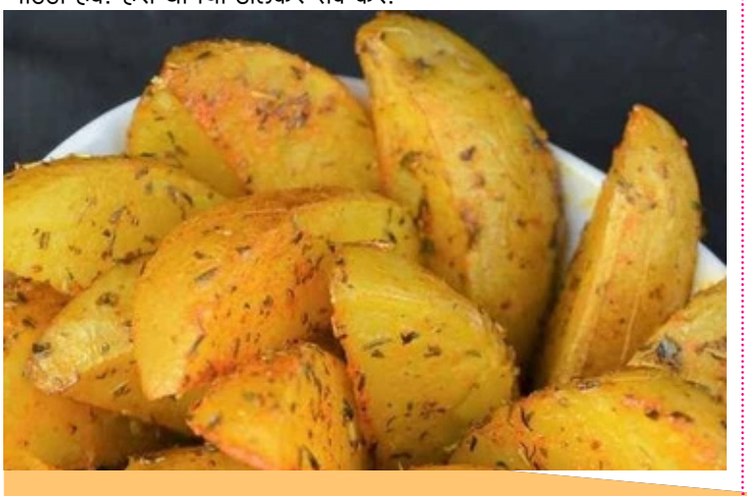

पापड़ की चटनी

सामग्रीः
४ मूंग दाल के पापड़
१ टीस्पून जीरा
१ /४ टीस्पून लाल मिर्च पाउडर
१/४ टीस्पून चाट मसाला
१ टेबलस्पून तेल
नमक स्वादानुसार

विधिः पापड़ की चटनी बनाने के लिए सबसे पहले पापड़ को गैस पर दोनों तरफ सेंक लें. सेंकने के बाद पापड़ को क्रश करके एक प्लेट पर रख लें. इसके बाद एक पैन में मीडियम आंच पर तेल गर्म करें. तेल में जीरा डालकर चटकने तक भून लें. फिर आंच धीमा करें और क्रश किया हुआ पापड़ इसमें डालें और करछी से १ से २ बार चलाएं. अब लाल मिर्च पाउडर, चाट मसाला, नमक डालकर मिलाएं. इसे १ मिनट के लिए ढककर पका लें और आंच बंद कर दें. तैयार पापड़ की चटनी. इसे रोटी के साथ खाएं.

मशरूम सूप

सामग्रीः
मशरूम - २०० ग्राम
मक्खन - २ टेबलस्पून
ताजी क्रीम - १ टेबलस्पून
प्याज बारीक कटा - १
लहसुन कली - ३-४
काली मिर्च कुटी - १/४ टी स्पून
कॉर्न फ्लोर - १ टेबलस्पून
नींबू - १
हरा धनिया कटा - २ टेबलस्पून
नमक - स्वादानुसार
विधिः

मशरूम सूप बनाने के लिए सबसे पहले मशरूम को लेकर धो लें और पोछकर उसके छोटे-छोटे टुकड़े कर लें. इसके बाद प्याज, लहसुन के बारीक-बारीक टुकड़े कर लें. अब एक कड़ाही में मक्खन डालकर उसे गर्म करने के लिए रख दें. जब मक्खन पिघल जाए तो उसमें बारीक कटे प्याज और लहसुन डाल कर भूनें. इन्हें तब तक भूनें जब तक कि प्याज का रंग गुलाबी ना हो जाए. इसके बाद मिश्रण में कटा हुआ मशरूम डालकर मिलाएं. अब इसमें काली मिर्च और स्वादानुसार नमक डालकर करछी से सभी को मिक्स कर दें.

अब मशरूम को २-३ मिनट तक पकने दें. बीच-बीच में करछी से मशरूम को चलाते रहें. मशरूम को तब तक पकाना है जब तक की नरम ना हो जाए. आप चाहें तो कड़ाही को ढककर भी मशरूम पका सकते हैं. मशरूम तब तक पकाना है जब तक कि उसमें से निकला पानी पूरी तरह से सूख ना जाए. मशरूम पक जाने पर उसका एक चौथाई भाग कड़ाही में ही छोड़ दें और बाकी भाग को मिक्सी की मदद से पीस लें. पीसने के दौरान थोड़े पानी का भी इस्तेमाल करें.

अब पिसे हुए मशरूम को वापस कड़ाही में डाल दें और इस मिश्रण में २ कप पानी मिलाएं. अब मशरूम सूप को उबलने दें. इस बीच कॉर्न फ्लोर का घोल तैयार करें और सूप में डाल दें. इसके बाद सूप को ३-४ मिनट तक और उबलने दें. फिर सूप में क्रीम डाल कर गैस बंद कर दें. अब सूप में नींबू का रस और बारीक कटी हरी धनिया पत्ती डालकर गार्निश कर दें. आपका स्वाद और पौष्टिकता से भरपूर मशरूम सूप बनकर तैयार हो गया है.

प्रोटीन सलाद

सामग्रीः
मूंग स्प्राउट्स - २ कप
मूंग बीन्स स्प्राउट्स - १/४ कप
भुना टोफू - १/२ कप
पनीर के टुकड़े - १/२ कप
प्याज कटा - १/२
ककड़ी - १
टमाटर - ३
कैप्सिकम - १/२
हरी मिर्च कटी - २
सलाद पत्तियां - १/२ कप
नींबू - १
काली मिर्च - १ चुटकी
मिक्स्ड हर्ब्स - १/४ टी स्पून
लहसुन पेस्ट - १/२ टी स्पून
नमक - स्वादानुसार

विधिः प्रोटीन सलाद बनाने के लिए सबसे पहले एक बड़ी मिक्सिंग बाउल लें. उसमें २ कप मूंग स्प्राउट्स डाल दें. इसमें पनीर के टुकड़े डालकर तीनों को अच्छी तरह से मिक्स कर लें. अब प्याज, ककड़ी, टमाटर, शिमला मिर्च और हरी मिर्च के बारीक-बारीक टुकड़े करें और इन सभी सामग्रियों को भी मिक्सिंग बाउल में डालकर अच्छी तरह से मिला लें. अब एक कटोरी में लहसुन पेस्ट, मिक्स्ड हर्ब्स, एक चुटकी काली मिर्च और नींबू रस और नमक को डालकर अच्छी तरह से मिक्स करें.इस मिश्रण को मिक्सिंग बाउल के मिश्रण में डालकर सभी को अच्छी तरह से आपस में मिला लें. अब इसमें सलाद पत्तियां, मूंग बीन्स स्प्राउट्स डालकर सभी मिलाएं. आखिर में प्रोटीन सलाद में भुने हुए टोफू को टॉप करें. आपका पौष्टिकता से भरा सलाद तैयार हो चुका है.

Wholesale Furniture Market
Ulhasnagar,Mumbai

सस्ते फर्नीचर के 5 थोक बाजार
फर्नीचर खरीदिए आधे दामों पर
एक से बढ़कर एक एंटीक आइटम

"Distance Online Learning"

OPEN REGISTRATION

SWAMI VIVEKANAND SUBHARTI UNIVERSITY
UGC Approved Meerut
Where Education is a Passion...

अब बनाइये
अपना केरियर
और भी शानदार

Professional Courses:

BA BBA B.COM B.LIB
MA MBA M.COM M.LIB

Apply Now

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

ACCREDITED WITH GRADE A NAAC

घर बैठे व किसी कारणवश आगे पढ़ाई न कर सकने
बीच में पढ़ाई छोड़ चुके विधार्थियों के
लिए डिग्री हासिल करने का
सुनहरा अवसर !

अभी एडमिशन लें और अपना साल बचायें

Contact: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in

मेष राशि

माह के आरंभ से ही बना हुआ ग्रह-गोचर कार्यक्षेत्र में सफलता तो दिलाएगा किंतु संतान संबंधी चिंता परेशान कर सकती है। शोधपरक और आविष्कारक कार्यों में अधिक सफल रहेंगे। मान-सम्मान के वृद्धि होगी। जमीन-जायदाद संबंधी मामले हल होंगे। वाहन का क्रय करना चाह रहे हों तो उस दृष्टि से भी ग्रह-गोचर अनुकूल रहेगा। इस अवधि में गुप्त शत्रुओं से बचें और न्यायिक मामले भी बाहर ही सुलझाएं। माह की ९-१० तारीख को रहें जरा बचके।

वृषभ राशि-

आपकी राशि के अनुसार बनी ग्रह स्थितियां काफी अप्रत्याशित परिणाम देंगी। सफलताओं के बावजूद कहीं न कहीं मानसिक अशांति का सामना करना ही पड़ेगा। माता-पिता के स्वास्थ्य के प्रति चिंतनशील रहें। शिक्षा-प्रतियोगिता में आशातीत सफलता मिलेगी। प्रेम संबंधी मामलों में प्रगाढ़ता आएगी। विवाह भी करना चाह रहे हों तो अवसर अनुकूल रहेगा। गुप्त शत्रु परास्त होंगे। कोर्ट-कचहरी के मामलों में निर्णय आपके पक्ष में आने के संकेत हैं। माह की २९-३० तारीख को रहें जरा बचके।

मिथुन राशि-

वर्तमान समय में बन रहे ग्रह गोचर आपके लिए बेहतरीन सफलता कारक रहेंगे। जो निर्णय लेंगे उसी में सफल रहेंगे। मान-सम्मान तथा पद की वृद्धि होगी। लिए गए निर्णय भी सराहनीय रहेंगे। अपनी साहस के बल पर विषम परिस्थितियों को भी आसानी से नियंत्रित कर लेंगे। समाज के संभ्रांत लोगों से मेलजोल बढ़ेगा। किसी भी तरह का चुनाव से संबंधित निर्णय लेना चाह रहे हैं तो अवसर अनुकूल रहेगा। मकान वाहन के क्रय का संकल्प भी पूर्ण हो सकता है माह की १४-१५ तारीख को रहें जरा बचके।

कर्क राशि-

माह का आरंभिक ग्रह-गोचर बेहतरीन सफलता दिलाएगा। आर्थिक पक्ष तो मजबूत होगा ही काफी दिनों का दिया गया धन भी वापस मिलने की उम्मीद है। स्वास्थ्य विशेष करके आंख संबंधी समस्या से सावधान रहें। आपके अपने ही लोग षड्यंत्र करने की कोशिश करेंगे। अपने सौम्य स्वभाव के बल पर कठिन परिस्थितियों को भी आसानी से नियंत्रित करने में सफल रहेंगे। संतान के दायित्व की पूर्ति होगी। नवदंपति के लिए संतान प्राप्ति और प्रादुर्भाव के भी योग हैं। माह की २५-२६ तारीख को रहें जरा बचके।

सिंह राशि-

वर्तमान समय में बनी हुई ग्रह स्थितियां आपको हर प्रकार से कामयाब करने में सहायक सिद्ध होगी। पैतृक संपत्ति संबंधी विवाद हल होंगे। शीर्ष नेतृत्व से सहयोग मिलेगा। नौकरी में भी नए अनुबंध की प्राप्ति के योग हैं। घूमने फिरने पर अधिक धन खर्च करेंगे। विदेशी कंपनियों में सर्विस अथवा नागरिकता के लिए किया गया प्रयास भी सफल रहेगा। दांपत्य जीवन में कड़वाहट न आने दें। वैवाहिक वार्ता सफल होने में थोड़ा और समय लगेगा। माह की १८-१९ तारीख को रहें जरा बचके।

कन्या राशि-

आपकी राशि में बना हुआ ग्रह-गोचर स्वास्थ्य संबंधी चिंता से तो परेशान कर सकता है किंतु, झगड़े-विवाद और कोर्ट कचहरी से संबंधित निर्णय आपके पक्ष में आने के संकेत हैं। धर्म और आध्यात्म के प्रति रुचि बढ़ेगी। जरूरतमंद लोगों की मदद के लिए आगे आएंगे। अपनी रणनीतियों और योजनाओं को गोपनीय रहते हुए कार्य करेंगे तो अधिक सफल रहेंगे। विद्यार्थियों एवं प्रतियोगिता में बैठने वाले साथियों को परीक्षा में अच्छे अंक लाने के लिए और प्रयास करने होंगे। माह की २२-२३ तारीख को रहें जरा बचके।

तुला राशि-

वर्तमान ग्रह-गोचर अत्यधिक भागदौड़ और अपव्यय का सामना करवाएंगे। भाग्योन्नति तो होगी ही लिए गए निर्णय और किए गए कार्यों का सम्मान भी होगा। विद्यार्थियों को प्रतियोगिता में अच्छे अंक लाने के लिए और प्रयास करने होंगे। स्वास्थ्य विशेष करके बाई आँख से संबंधित समस्या से सावधान रहना पड़ेगा। परिवार के वरिष्ठ सदस्यों तथा बड़े भाइयों से मतभेद बढ़ने न दें। पैतृक संपत्ति संबंधी विवाद हल होंगे। वाहन क्रय करने की दृष्टि से भी समय बेहद अनुकूल है। माह की २२-२३ तारीख को रहें जरा बचके।

वृश्चिक राशि-

कार्य-व्यापार की दृष्टि से माह आपके लिए किसी वरदान से कम नहीं है। कोई भी बड़े से बड़ा कार्य आरंभ करना हो, किसी नए अनुबंध पर हस्ताक्षर करना हो, सरकारी टेंडर के लिए आवेदन करना हो तो भी यह समय सर्वथा ल ाभदायक ही रहेगा। प्रतियोगी छात्रों के लिए भी समय बेहतरीन है। अपनी ऊर्जाशक्ति का पूर्ण उपयोग करते हुए कार्य करेंगे तो अधिक सफल रहेंगे। चुनाव संबंधी कोई निर्णय लेना चाह रहे हों तो भी समय बेहद अनुकूल रहेगा। माह की १६-१७ तारीख को रहें जरा बचके।

धनु राशि-

माह का आरंभ तो अच्छी सफलताओं के साथ होगा ही इसमें निरंतरता भी बनी रहेगी। गुप्त शत्रुओं से सावधान रहें। वैवाहिक वार्ता सफल होने में थोड़ा और समय लगेगा। ससुराल पक्ष से सहयोग के योग। कार्य-व्यापार में निरंतरता रहेगी। आपके किसी बड़े सम्मान अथवा पुरस्कार के भी घोषणा हो सकती है। केंद्र अथवा राज्य सरकार के विभागों में प्रतीक्षित कार्य संपन्न होंगे। माता- पिता के स्वास्थ्य के प्रति चिंतनशील रहें। माह की २७-२८ तारीख को रहें जरा बचके।

मकर राशि-

माह बेहतरीन सफलता कारक रहेगा। प्रतियोगिता में आशातीत सफलता मिलेगी। कार्य व्यापार में उन्नति होगी। प्रेम संबंधी मामलों में भी प्रगाढ़ता आएगी। स्वास्थ्य विशेष करके अग्नि, विष और दवावों के रिएक्शन से बचें। जो लोग आपको नीचा दिखाने की कोशिश में लगे थे वही मदद के लिए आगे आएंगे। आकस्मिक धन प्राप्ति का योग बनेगा। काफी दिनों का दिया गया धन भी वापस मिलने की उम्मीद। माह की २-३ तारीख को रहें जरा बचके।

कुंभ राशि-

अनेकों उतार-चढ़ाव के बावजूद ग्रह-गोचर आपके लिए मददगार सिद्ध होंगे। वैवाहिक वार्ता सफल होने में और समय लगेगा। दांपत्य जीवन में अलगाववाद की स्थिति उत्पन्न न होने दें। इस अवधि के मध्य साझा व्यापार करने से परहेज करें। केंद्र अथवा राज्य सरकार के विभागों में किसी भी तरह के टेंडर आदि के लिए आवेदन करना हो तो भी समय उत्तम रहेगा। स्वास्थ्य विशेष करके चर्म रोग संबंधी समस्या से सावधान रहें। प्रेम संबंधी मामलों में उदासीनता रहेगी। माह की ४-५ तारीख को रहें जरा बचके।

मीन राशि-

माह पर्यंत बना हुआ ग्रह योग आपको स्वास्थ्य संबंधी चिंता विशेष करके हृदय और नेत्र विकार से परेशान कर सकता है। आर्थिक उन्नति होगी फिर भी कहीं न कहीं मानसिक अशांति का सामना भी करना ही पड़ेगा। विदेशी मित्रों तथा संबंधियों से सुखद समाचार प्राप्ति के योग हैं। धर्म-आध्यात्म और दान-पुण्य के प्रति रूचि और बढ़ेगी। धार्मिक ट्रस्टों तथा अनाथालय आदि में भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लेंगे और दान पुण्य करेंगे। माह की २०-२१ तारीख को रहें जरा बचके।

शिल्पकला और चित्रकला का शानदार उदाहरण

अजंता की गुफाएं...

१८४४ में रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ने मेजर रॉबर्ट गिल को यहां बनी चित्रों की प्रतिकृतियां बनाने के लिए नियुक्त किया गया। लेकिन, रॉबर्ट गिल के लिए यहां काम करना आसान नहीं था, क्योंकि यहां भीषण गर्मी और वन्यजीवों का खतरा होने के साथ ही भील आदिवासियों का भी खतरा था। भील आदिवासी काफी उग्र थे और उन पर न तो कभी किसी भारतीय शासक ने हमला करने की हिम्मत दिखाई और न ही आधुनिक हथियारों से लैस अंग्रेजी सेना ने।

देश की आर्थिक राजधानी मुंबई से करीब ४५० किलोमीटर दूर, अजंता की गुफाओं को बड़े-बड़े पहाड़ों और चट्टानों को काटकर तैयार किया गया था, जो आकार में एक घोड़े की नाल की तरह है। सह्याद्रि पर्वतमाला में बनीं ये गुफाएं, औरंगाबाद के पास वघोरा नदी के पास स्थित हैं। यहीं से कुछ दूरी पर 'अजिंठा' नाम का एक गांव बसा है और इसी के आधार पर अजंता की गुफाओं का नामकरण किया गया है। इसमें कुल २९ गुफाएं हैं। यहां की दीवारों और छतों पर भगवान बुद्ध से जुड़ी विभिन्न घटनाओं को बखूबी दिखाया गया है। यहां दो तरह की गुफाएं हैं - विहार और चैत्य गृह।

विहार की संख्या २५ है, तो चैत्य गृहों की संख्या चार है। एक ओर विहार का इस्तेमाल बौद्ध रहने के लिए करते थे, तो चैत्य गृह का इस्तेमाल ध्यान स्थल के रूप में किया जाता था। इन गुफाओं के अंत में स्तूप बने हैं, जो भगवान बुद्ध का प्रतीक है।

जंगली जानवरों और स्थानीय भील समुदायों को छोड़कर अजंता की गुफाएं हजारों वर्षों तक अज्ञात रही। इन गुफाओं की खोज १८१९ में मद्रास रेजीमेंट के एक युवा सैन्य अधिकारी जॉन स्मिथ ने की थी। फिर, १९८३ में इसे यूनेस्कों द्वारा विश्व विरासत स्थल की सूची में शामिल किया गया।

कहा जाता है कि जॉन स्मिथ शिकार की तलाश में निकले थे, तभी उन्हें वघोरा नदी के सामने एक गुफा के मुहाने को देखा, जो इंसानों द्वारा बनाया हुआ लग रहा था। इसके बाद, वह अपनी टीम के साथ गुफा में गए। वहां उन्होंने दीवारों में शानदार नक्काशी देखी और उनके सामने

अजंता की गुफाओं की विशेषताएं-

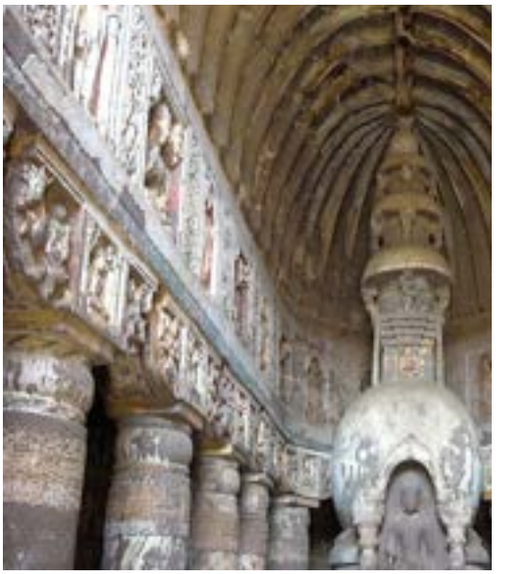

१. अजंता को अंग्रेज अधिकारी जॉन स्मिथ ने १८१९ ईं में खोजा था।

२. अजंता में निर्मित कुल २९ गुफाओं में छह गुफाएं शेष हैं। गुफा संख्या १,२,९,१०,१६ और १७।

३. गुफा संख्या १६ और १७ गुप्तकालीन हैं।

४. इन गुफाओं में की गई नक्काशी इतनी महीन है कि इसके सामने लकड़ी की नक्काशी भी फेल लगती है।

५. अजंता की गफाओं में बने चित्र फ्रेस्को तथा टेम्पेरा विधि से बनाए गए हैं। इसमें चित्र बनाने से पहले दीवारों को रगड़कर साफ किया जाता है, फिर उसके ऊपर लेप चढ़ाया जाता है।

६. अजंता की गुफा संख्या १६ में उत्कीर्ण 'मरणास्नन राजकुमारी' के चित्र ने वैश्विक स्तर पर लोगों के लिए ध्यान अपनी ओर खींचा है।

७. अजंता की गुफाओं को आप दो भागों में बांट कर देख सकते हैं। इसके एक भाग में बौद्ध धर्म के हीनयान शाखा तथा दूसरे में महायान शाखा से संबंधित चित्र उकेरे गए हैं।

८. गुफाओं में की गई चित्रकारी तिब्बत व श्रीलंका की कला पद्धति से प्रभावित है।

९. गुफा में बने चित्र मांड, गोंद और कुछ पत्तियों के सम्मिश्रण से बनाए गए हैं।

१०. चित्रों की विशेषता यह है कि- आज भी प्राकृतिक रंगो का उपयोग कर बनाए गए इन चित्रों की चमक यथावत है

ध्यान लगाते बुद्ध की एक प्रतिमा थी।

उन्होंने अपने नाम को बोधिसत्व की एक मूर्ति पर उकेरा। स्मिथ के इस खोज की खबर दुनिया में तेजी से फैलनी लगी। फिर, १८४४ में रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ने मेजर रॉबर्ट गिल को यहां बनी चित्रों की प्रतिकृतियां बनाने के लिए नियुक्त किया गया। लेकिन, रॉबर्ट गिल के लिए यहां काम करना आसान नहीं था, क्योंकि यहां भीषण गर्मी और वन्यजीवों का खतरा होने के साथ ही भील आदिवासियों का भी खतरा था। भील आदिवासी काफी उग्र थे और उन पर न तो कभी किसी भारतीय शासक ने हमला करने की हिम्मत दिखाई और न ही आधुनिक हथियारों से लैस अंग्रेजी सेना ने।

रस्सियों और सीढ़ियों की मदद से रॉबर्ट गिल गुफा के अंदर गए और वहां शानदार वास्तुकला और मूर्तिकला को देख कर हैरान रह गए। यहां बुद्ध की हजारों छवियां थी, जो आज दुनिया में करोड़ों लोगों को एक सोच के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

यहां बुद्ध की छवियों के अलावा कई जानवरों, आभूषणों, पहनावों को भी दर्शाया गया था। इनमें ग्रीक कलाओं की तरह समानताएं नजर आ रही थी। जिसे महज संयोग नहीं कहा जा सकता है। यह इस बात की ओर इशारा करता है कि भारतीय-यूनानी संस्कृति का विस्तार करीब ४०० ईसा पूर्व सिकंदर महान के दौरान हो गया था। फिर, हेलेनिस्टिक काल में यह अफगानिस्तान और भारत के व्यापारिक मार्गों के अलावा चीन और जापान तक तेजी से फैला। रॉबर्ट गिल ने अपने २७ कैनवास को दक्षिण लंदन के क्रिस्टल पैलेस में प्रर्दशित किया, लेकिन १८६६ में २३ कैनवास आग में जलकर राख हो गए। इसी बीच, १८४८ में रॉयल एशियाटिक सोसाइटी द्वारा गठित रॉयल केव टेम्पल कमीशन ने १८६१ में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की नींव रखी। अब तक अजंता की गुफाओं को लेकर चिन्ताएं काफी बढ़ चुकी थी और कुछ निडर विशेषज्ञ इस मुहिम में शामिल हो गए। कई चित्रें, दीवार टूटने से बर्बाद हो गए थे तो कुछ को उन्होंने बचा लिया था।

इसके बाद, १८७२ में बॉम्बे स्कूल ऑफ आर्ट के प्रिंसिपल जॉन ग्रिफिथ्स को नई प्रतिकृतियां बनाने की जिम्मेदारी दी गई। उन्होंने अपने छात्रों के साथ मिलकर ३०० चित्रों को बनाया। इसके बाद, लेडी हेरिंगम ने कलकत्ता स्कूल ऑफ आर्ट की मदद से १९०९ में अजंता की गुफाओं की और प्रतियां बनानी शुरू की। इसके बाद, हैदराबाद के इतिहासकार गुलाम याजदानी ने १९३० से १९५५ के बीच अजंता की गुफाओं का व्यापक अध्ययन किया और अपने फोटोग्राफिक सर्वेक्षण को चार भागों में दुनिया के सामने रखा। याजदानी के योगदानों के लिए उन्हें भारत सरकार द्वारा पद्मभूषण से भी सम्मानित किया गया था। वहीं, बीते दो दशकों में भारतीय पुरात्व सर्वेक्षण ने नई तकनीकों का इस्तेमाल करते हुए हजारों साल पहले कलाकारों द्वारा इन चित्रों को बनाने के तकनीकों का खुलासा किया है। बताया जाता है कि इन छवियों को बनाने के लिए अफगानिस्तान में मिलने वाले लैपिस लैज्यूजली यानी राजावर्त पत्थर का भी इस्तेमाल किया गया है। नीले रंग के इस पत्थर को प्राचीन इतिहास में नवरत्नों का दर्जा हासिल है।

माना जाता है कि अजंता की गुफाओं को सातवाहन काल और वाकाटक काल, दो अल ग-अलग कालों में बनाया गया है। इस गुफाओं की ऊंचाई ७६ मीटर तक है। ये गुफाएं जातक कथाओं के जरिए भगवान बुद्ध के जीवन को दर्शाती है।

इन गुफाओं को प्रमुख वाकाटक राजा हरिसेन के संरक्षण में बौद्ध भिक्षुओं द्वारा ही बनाया गया था। इतना ही नहीं, यहां चंद्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल के दौरान भारत आए चीनी बौद्ध यात्री फाहियान और सम्राट हर्षवर्धन के दौर में आए ह्वेन त्सांग की जानकारी भी पाई जाती है।

अजंता की गुफाओं में एक भाग में बौद्ध धर्म के हीनयान की झलक देखने के लिए मिल ती है, तो दूसरे में महायान संप्रदाय की। ज्यादातर गुफाओं में ध्यान लगाने के लिए कमरों के आकार अलग-अलग हैं, जिससे साफ है कि ये कमरे को महत्व के आधार पर बनाए गए होंगे।

यहां छवियों को बनाने के लिए 'फ्रेस्को' और 'टेम्पेरा', दोनों विधियों का इस्तेमाल किया गया है। इन तस्वीरों को बनाने से पहले दीवारों को रगड़कर साफ किया जाता था, फिर चावल के मांड, गोंद, पत्तियों और कुछ अन्य रासायनों का लेप चढ़ाया जाता था। सदियों बाद भी इन चित्रों की चमक पहले जैसी बनी हुई है।

OTT पर धमाल मचाने के बाद फिर चमकीं Heeramandi

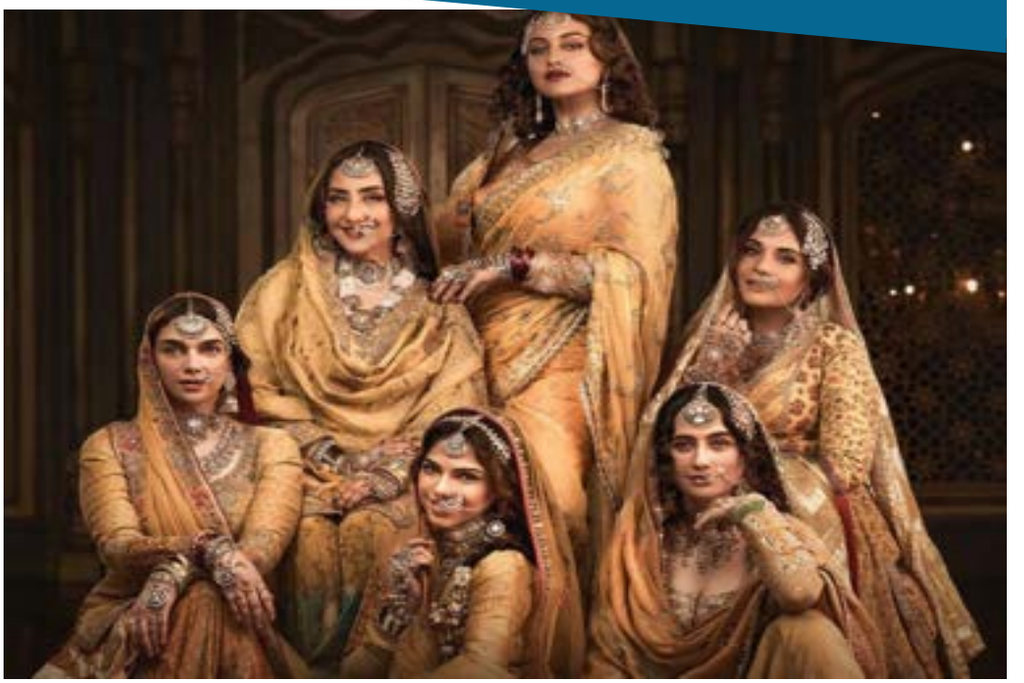

संजय लीला भंसाली की वेब सीरीज Heeramandi ओटीटी पर खूब देखी गई. इसकी जबरदस्त कहानी को फैंस का खूब प्यार मिला. वहीं अब इस वेब सीरीज को एशिया कंटेंट अवॉर्ड्स और ग्लोबल ओटीटी अवॉर्ड्स में दो कैटिगरीज में नॉमिनेट हो गई है. नैटफिलक्स पर संजय लीला भंसाली की 'हीरामंडी - द डायमंड बाजार' ने रिलीज होते ही बड़ा प्रभाव डाला। इस शो में शानदार विजुअल्स, बेहतरीन म्यूजिक, एक शानदार कहानी और एक्टर्स की शानदार परफॉर्मेंस ने दर्शकों का दिल जीता. संजय लीला भंसाली की जबरदस्त कहानी के साथ, इस शो को दर्शकों का बहुत प्यार मिला.

जिसके बाद अब ये वेब सीरीज एशिया कंटेंट अवॉर्ड्स और ग्लोबल ओटीटी अवॉर्ड्स में दो कैटिगरीज में नॉमिनेट हो गई है. एशिया कंटेंट अवॉर्ड्स और ग्लोबल ओटीटी अवॉर्ड्स ने संजय लीला भंसाली की 'हीरामंडी' को बेस्ट ओटीटी ओरिजिनल और 'सकल बन' को बेस्ट ओरिजिनल सॉन्ग के लिए नॉमिनेट कर उसकी प्रशंसा की. इससे पता चलता है कि संजय लीला भंसाली की 'हीरामंडी' कितनी इंप्रेस करने वाली है, जो हर जगह बड़ा प्रभाव डाल रही है. शो के एल्बम को दर्शकों ने खूब पसंद किया है, और यह देखना दिलचस्प होगा कि ये सीरीज कौन से अवॉर्ड्स अपने नाम करती है.

'इमरजेंसी' फिल्म को सेंसर बोर्ड से नहीं मिला सर्टिफिकेट ...

Kangana Ranaut की फिल्म 'इमरजेंसी' को लेकर बड़ी खबर है. इस फिल्म की रिलीज को महज ६ दिन बचे हैं लेकिन अभी तक फिल्म को सेंसर बोर्ड से सर्टिफिकेट नहीं मिला है. जिसके बाद कंगना ने कहा कि वो आखिर तक लड़ेंगी और हो सके तो कोर्ट का दरवाजा भी खटखटाएंगी.फिल्म 'इमरजेंसी' को लेकर लगातार कोई ना कोई बवाल मचा हुआ है. अकाली दल फिल्म के रिलीज का लगातार विरोध कर रहा है. इस फिल्म को रिलीज होने में महज ६ दिन बचे हैं. लेकिन फिल्म को अभी तक सेंसर बोर्ड की तरफ से सर्टिफिकेट नहीं मिला है. इस बीच कंगना रनौत ने रिएक्ट किया है. कंगना का कहना है वो आखिर तक लड़ेंगी. कंगना रनौत ने आएएनएस से बात की. एक्ट्रेस ने कहा- 'हम लोग फिल्म के लिए आखिरी तक लड़ेंगे, जरूरत पड़े तो कोर्ट भी जाएंगे. उम्मीद है कि मेरी फिल्म सेंसर बोर्ड से क्लियर हो जाएगी. जब इस फिल्म को रिलीज होने के लिए सर्टिफिकेट मिल जाएगा तो काफी लोग ड्रामा करेंगे.'

कीस का ५वां गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड

भुवनेश्वर, ९ अगस्तः कलिंगा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज(कीस) ने एक बार फिर सबसे बड़े संगीत पाठ के लिए एक नया गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड स्थापित करके एक और रिकॉर्ड हासिल किया है, जिसका नेतृत्व तीन बार ग्रैमी पुरस्कार विजेता रिकी केज ने किया है। १३,९४४ कीस छात्रों ने सबसे बड़े एकल समूह के रूप में भारतीय राष्ट्रगान गाकर गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में अपना नाम दर्ज कराया है। उन्होंने रिकी केज के साथ मिलकर राष्ट्रगान का एक स्मारकीय संस्करण तैयार किया है, जिसे आधिकारिक तौर पर स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या, १४ अगस्त को जारी किया जाएगा। गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स के अधिकारियों ने आज नई दिल्ली में आयोजित एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में रिकॉर्ड तोड़ने वाली इस उपलब्धि की घोषणा की।

राष्ट्रगान में रिकी केज शामिल होंगे, जिन्होंने संगीत का निर्देशन किया है। समूह प्रदर्शन में बांसुरी वादक हरिप्रसाद चौरसिया, सरोद वादक अमन और अयान अली खान, और संतूर वादक राहुल शर्मा सहित कई अन्य प्रसिद्ध कलाकार शामिल हैं।

इस उपलब्धि पर अपनी खुशी व्यक्त करते हुए कीट और कीस के संस्थापक डॉ. अच्युत सामंत ने कहा कि यह न केवल कीस के लिए बल्कि ओडिशा और भारत के लिए भी गर्व का क्षण है। कीस के छात्रों ने उत्साह और खुशी के साथ गीत गाए, अपनी संगीत प्रतिभा और पर्यावरण वकालत के प्रति समर्पण का प्रदर्शन किया। इस कार्यक्रम ने बच्चों के लिए एक यादगार अनुभव प्रदान किया और कीस के शिक्षा और सशक्तिकरण के मिशन को मजबूत किया।

महान शिक्षाविद् प्रो अच्युत सामंत को मिली ५९वीं मानद डॉक्टरेट की उपाधि

कोलकाता, १२ अगस्तः प्रख्यात शिक्षाविद् और परोपकारी प्रो. अच्युत सामंत को शिक्षा और सामाजिक कार्यों में उनके उल्लेखनीय एवं प्रशंसनीय योगदान के लिए विभिन्न देशों के कई प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों द्वारा मानद डॉक्टरेट की उपाधि प्रदान की गई है। हाल ही में कोलकाता के एक प्रमुख विश्वविद्यालय टेक्नो इंडिया यूनिवर्सिटी (ऊच्ळ) ने इन क्षेत्रों में उल्लेखनीय उपलब्धियों के लिए आज प्रो. सामंत को मानद पीएचडी की उपाधि प्रदान की गई। यह उनकी ५९वीं मानद डॉक्टरेट की उपाधि है। उन्हें विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित एक विशेष दीक्षित समारोह में यह सम्मान प्रदान किया गया। प्रो. सामंत ने विश्वविद्याल य और पश्चिम बंगाल के लोगों के प्रति उनके प्यार और स्नेह के लिए आभार व्यक्त किया।

कीट और कीस ने मनाया राष्ट्रीय खेल दिवस

ओलंपिक प्रतिभाओं को बढ़ावा देने के लिए अपनी प्रतिबद्धता पर जोर देते हुए उन्होंने उम्मीद जताई कि २०२८ में लॉस एंजिल्स ओलंपिक के लिए १५ से अधिक छात्र अर्हता प्राप्त करेंगे। उन्होंने यह भी आश्वासन दिया कि खेलों में अच्छा प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को उनकी शिक्षा के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय स्तर की सुविधाएं भी प्रदान की जाएंगी।

भुवनेश्वर, २९.८ः कीट और कीस द्वारा गत गुरुवार को राष्ट्रीय खेल दिवस मनाया गया। भारतीय हॉकी के दिग्गज मेजर ध्यानचंद की जयंती के मौके पर आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि कीट और कीस के संस्थापक डॉ अच्युत सामंत ने सभा को संबोधित करते हुए खेलों को बढ़ावा देने में कीट और कीस के अग्रणी प्रयासों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा, 'शेष भारत आज जो कर रहा है, हमने २४ साल पहले शुरू किया था।' ओलंपिक प्रतिभाओं को बढ़ावा देने के लिए अपनी प्रतिबद्धता पर जोर देते हुए उन्होंने उम्मीद जताई कि २०२८ में लॉस एंजिल्स ओलंपिक के लिए १५ से अधिक छात्र अर्हता प्राप्त करेंगे। उन्होंने यह भी आश्वासन दिया कि खेलों में अच्छा प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को उनकी शिक्षा के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय स्तर की सुविधाएं भी प्रदान की जाएंगी। डॉ सामंत ने यह भी कहा कि कीट -कीस केवल शैक्षणिक संस्थान नहीं हैं अपितु खेल उत्कृष्टता के केंद्र भी हैं।

कैटेलिटिक इनोवेटर्स ग्रुप के मुख्य उत्प्रेरक कीस में एक अन्य कार्यक्रम में बोलते हुए डॉ. सामंत की उल्लेखनीय उपलब्धियों की प्रशंसा करते हुए कहा, 'डॉ. अच्युत सामंत ने जो हासिल किया है, वह असाधारण है। उनके साथ विशिष्ट मेहमान के रूप में डॉ. अलका गुप्ता बादशाह भी थीं। '३० वर्षों में, एक व्यक्ति दुनिया का आठवां आश्चर्य बना सकता है।' उन्होंने शिक्षा की परिवर्तनकारी शक्ति पर जोर दिया, इसे 'तीसरी आंख' के रूप में वर्णित किया, जिसका उपयोग सभी के लिए सामाजिक-आर्थिक समृद्धि लाने के लिए किया जाना चाहिए। डॉ. बादशाह ने कीस के छात्रों को प्रदान की गई विश्व स्तरीय शैक्षणिक सुविधाओं की भी सराहना की।

अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सरनजीत सिंह ने पिछले दशक में हॉकी के पुनरुत्थान में ओडिशा की भूमिका की प्रशंसा की। उन्होंने कहा, 'भारत में ऐसा कोई विश्वविद्यालय नहीं है, जिसमें हमारे जैसा एस्ट्रो-टर्फ हॉकी मैदान हो। कीट और कीस में उपल ब्ध खेल बुनियादी ढांचे के साथ, मुझे उम्मीद है कि भविष्य के ध्यानचंद यहीं से निकलेंगे।' कीट के खेल महानिदेशक गगनेंदु दाश ने कीट और कीस के छात्रों द्वारा प्राप्त वैश्विक मान्यता की सराहना करते हुए कहा, 'कीट -कीस और के छात्रों को दुनिया भर में मान्यता प्राप्त है। हमारा बुनियादी ढांचा देश में किसी से कम नहीं है।' उनकी उपलब्धियों के सम्मान में पर्वतारोही बिभरानी पात्रा को ५०,००० रुपये के नकद पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम में कीट स्पोर्ट्स न्यूज़लैटर का भी शुभारंभ किया गया।

कीट के छह इंजीनियरिंग कार्यक्रमों को मिली ABET (US) से मान्यता

– WTUN वर्ल्ड टेक्नोलॉजी यूनिवर्सिटीज नेटवर्क में भी शामिल हुआ कीट

कीट को भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा SPARC योजना के तहत ऑस्ट्रेलिया-भारत क्रिटिकल मिनरल्स रिसर्च हब (AICMRH) की मंजूरी मिल गई है। हब के फोकस क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण खनिज निष्कर्षण, प्रसंस्करण, क्रिटिकलिटी असेसमेंट, आर्थिक भूविज्ञान, टिकाऊ खनन प्रथाएँ और आपूर्ति श्रृंखला विश्लेषण शामिल हैं। कीट १७ भारतीय संस्थानों में से एक सदस्य बन गया है और ११ ऑस्ट्रेलियाई संस्थान इस कार्यक्रम में शामिल हैं।

भुवनेश्वर। प्रतिष्ठित इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी प्रत्यायन बोड& (ABET), अमेरिका ने कीट डीम्ड विश्वविद्यालय के छह इंजीनियरिंग कार्यक्रमों को अगले छह वर्षों के लिए मान्यता दी है। गौरतलब है कि ABET इंजीनियरिंग और इंजीनियरिंग प्रौद्योगिकी कार्यक्रमों का प्रमुख वैश्विक प्रत्यायन संगठन है। इंजीनियरिंग शिक्षा के लिए 'गोल्ड स्टैंडर्ड' के रूप में माना जाने वाला यह कार्यक्रम यह सुनिश्चित करता है कि कार्यक्रम गुणवत्ता के मानकों को पूरा करते हैं जो वैश्विक कार्यबल में प्रवेश करने के लिए तैयार स्नातक तैयार करते हैं।

कीट डीम्ड विश्वविद्यालय में निम्नलिखित B.Tech कार्यक्रमों को ABET द्वारा मान्यता दी गई है। इनमें शामिल है B.Tech कंप्यूटर विज्ञान और इंजीनियरिंग (ABET के CAC और EAC आयोगों दोनों द्वारा मान्यता प्राप्त); B.Tech इलेक्ट्रॉनिक्स और दूरसंचार इंजीनियरिंग; B.Tech इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग; B.Tech इलेक्ट्रॉनिक्स और इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग और B.Tech मैकेनिकल इंजीनियरिंग। इसके अलावा, बी.टेक सिविल इंजीनियरिंग कार्यक्रम को पहले २०२२ में छह साल के लिए मान्यता दी गई थी।

यह मान्यता कीट डीम्ड विश्वविद्यालय के संस्थानों के एक विशिष्ट समूह में रखती है जिसमें हार्वर्ड, कैम्ब्रिज, स्टैनफोर्ड, MIT और पेनसिल्वेनिया विश्वविद्यालय जैसे प्रसिद्ध विश्वविद्यालय शामिल हैं।

शैक्षणिक उत्कृष्टता, व्यापक शोध पहल और मूल्यवान व्यावहारिक अनुभव के प्रति अपनी अटूट प्रतिबद्धता के माध्यम से कीट ने ABET के कठोर शैक्षिक मानकों को सफलतापूर्वक पूरा किया है। इन मानकों में पाठ्यक्रम की गुणवत्ता, संकाय योग्यता और परिणाम मूल्यांकन शामिल हैं। निरंतर सुधार के लिए विश्वविद्यालय का समर्पण और छात्र-केंद्रित दृष्टिकोण इस प्रतिष्ठित मान्यता को प्राप्त करने में महत्त्वपूर्ण थे, जिसने दुनिया भर में शीर्ष-स्तरीय संस्थानों में अपनी स्थिति को मजबूत किया।

ABET की सहकर्मी-समीक्षा प्रक्रिया को दुनिया भर में बहुत सम्मान दिया जाता है क्योंकि यह तकनीकी विषयों में शैक्षणिक कार्यक्रमों में महत्त्वपूर्ण मूल्य जोड़ती है, जहां गुणवत्ता, सटीकता और सुरक्षा सर्वोपरि हैं।

कीट WTUN में शामिल हुआ

एक अन्य महत्त्वपूर्ण विकास में, विश्व प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय नेटवर्क (WTUN) ने कीट के साथ नेटवर्क के कंसोर्टियम सहयोग समझौते पर हस्ताक्षर करने की घोषणा की। इसके साथ ही, कीट WTUN का सदस्य बन गया है, जो अपने छात्रों को वैश्विक प्रतियोगिताओं में भागीदारी, ब्रायन कैंटर छात्रवृत्ति पुरस्कार २०२३-२४ जीतने का मौका, हैकथॉन और एक्सचेंज प्रोग्राम सहित कई अवसर प्रदान करता है। कीट दुनिया के २० विश्वविद्यालयों में से एक है।

AICMRH में कीटः कीट को भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा SPARC योजना के तहत ऑस्ट्रेलिया-भारत क्रिटिकल मिनरल्स रिसर्च हब (AICMRH) की मंजूरी मिल गई है। हब के फोकस क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण खनिज निष्कर्षण, प्रसंस्करण, क्रिटिकलिटी असेसमेंट, आर्थिक भूविज्ञान, टिकाऊ खनन प्रथाएँ और आपूर्ति श्रृंखला विश्लेषण शामिल हैं। कीट १७ भारतीय संस्थानों में से एक सदस्य बन गया है और ११ ऑस्ट्रेलियाई संस्थान इस कार्यक्रम में शामिल हैं।

कीट -कीस के संस्थापक डॉ. अच्युता सामंत ने अपनी खुशी व्यक्त करते हुए कहा कि ये मान्यताएँ कीट के उच्च-गुणवत्ता वाले कार्यक्रमों को साबित करती हैं, जो छात्रों को वैश्विक कैरियर के लिए प्रभावी रूप से तैयार करती हैं। उन्होंने कहा कि केआईआईटी भारत का एकमात्र विश्वविद्यालय है जिसे आईईटी, यूके और एबीईटी, यूएसए दोनों से मान्यता प्राप्त है।

ओड़िशा केंद्रीय विश्वविद्यालय ने कुंडुली हाट में अंतर्राष्ट्रीय स्वदेशी दिवस मनाया

इस कार्यक्रम का विषय स्थानीय आदिवासी युवाओं को सशक्त बनाना और इको-टूरिज्म में बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर पैदा करना था।

भारत सरकार की नीति के अनुसार 'समानता और पहुंच' की चिंताओं को दूर करना और कम शैक्षणिक रूप से विकसित जिलों में लोगों द्वारा गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा तक पहुंच बढ़ाना, जहां स्नातक नामांकन अनुपात राष्ट्रीय औसत ११% से कम है, जैसे कि आदिवासी बहुल क्षेत्र कोरापुट, ओडिशा केंद्रीय विश्वविद्यालय ने १० अगस्त २०२४ को कुंडुली हाट क्षेत्र में विश्व के स्वदेशी लोगों का अंतर्राष्ट्रीय दिवस मनाया, यह कार्यक्रम विश्वविद्यालय परिसर से बाहर आयोजित किया गया। कार्यक्रम का विषय स्थानीय आदिवासी युवाओं को सशक्त बनाना और इको-टूरिज्म में बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर पैदा करना है। कार्यक्रम का विधिवत उद्घाटन विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. चक्रधर त्रिपाठी ने किया।

इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में संबलपुर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. बिष्णु चरण बारिक, विशिष्ट अतिथि के रूप में होटल प्रबंधन संस्थान, भुवनेश्वर की प्राचार्या प्रो. शारदा घोष, पूर्व सांसद श्री जयराम पांगी, आदिवासी विकास परिषद के सलाहकार और नेताजी सुभाष जन्मभूमि यात्रा के संयोजक श्री देबी प्रसाद प्रुस्ती, सामाजिक कार्यकर्ता जी. जॉन, उद्यमी और सामाजिक कार्यकर्ता श्री जुगब्रत कर, जिला पर्यटन अधिकारी सुश्री तलिना प्रधानी, जिला संस्कृति अधिकारी सुश्री प्रीतिसुधा जेना और ओड़िशा केंद्रीय विश्वविद्यालय की सह प्राध्यापिका डॉ. निर्झरिणी त्रिपाठी भी उपस्थित थीं। कार्यक्रम के समन्वयक सह समाजशास्त्र विभागाध्यक्ष डॉ. कपिला खेमुंडू ने स्वागत भाषण दिया और सेमिनार आयोजित करने के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। इस दिवस के उद्घाटन कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. चक्रधर त्रिपाठी ने क्षेत्र के लोगों के सामाजिक-आर्थिक मानकों को विकसित करने के लिए भारत सरकार के आदेश के अनुरूप विश्वविद्यालय की जिम्मेदारियों पर प्रकाश डाला। कोरापुट इको-टूरिज्म के लिए उपयुक्त एक खूबसूरत जगह है, जहां स्थानीय आदिवासी युवाओं के लिए बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर पैदा किए जा सकते हैं।

ओडिशा केंद्रीय विश्वविद्यालय स्थानीय से वैश्विक के बीच का माध्यम है और कोरापुट की क्षमता को दुनिया के सामने प्रदर्शित करने में अग्रणी भूमिका निभाएगा। उन्होंने कहा कि यहां सेमिनार आयोजित करने का उद्देश्य लोगों में इको-टूरिज्म और रोजगार के बारे में जागरूकता पैदा करना है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि भविष्य में विश्वविद्यालय ओडिशा की आर्थिक प्रगति में अग्रणी योगदानकर्ता होगा। भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के पूर्व टैगोर नेशनल फेलो प्रो. बारिक ने कोरापुट में इको-टूरिज्म के विकास पर ध्यान केंद्रित किया। कोरापुट पर्यटन का एक महत्वपूर्ण केंद्र है और यदि इसे ठीक से विकसित किया जाए तो यह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल के रूप में स्थापित होगा। ग्रामीण युवाओं को विकास प्रक्रिया में रोजगार देकर ऐसा किया जा सकता है। उन्होंने कोरापुट के पर्यटन क्षेत्रों के बुनियादी ढांचे के विकास पर भी ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने कहा कि पर्यटक कोरापुट गंतव्य के राजदूत हो सकते हैं। श्री पांगी ने कोरापुट के विकास के विभिन्न अनुभवों पर प्रकाश डाला और कहा कि समर्थन की कमी के कारण कोरापुट का सुंदर स्थान पर्यटन स्थल के रूप में लोकप्रिय नहीं हो पाया है। यदि व्यवस्थित योजना बनाई जाए तो कोरापुट को कुल्लू और मनाली की तरह विकसित किया जा सकता है। उन्होंने जोर दिया कि यदि कोरापुट में इको-टूरिज्म विकसित किया जा सकता है तो स्थानीय युवाओं को रोजगार के अवसर मिल सकते हैं।

मारवाड़ी महिला समिति, भुवनेश्वर ने भी कोलकाता निर्भया हत्या काण्ड के खिलाफ राजभवन के सामने निकाली रैली

हाल ही में कोलकाता के आर जी अस्पताल में जो विभत्स हत्याकांड हुई उसके खिलाफ मारवाड़ी महिला समिति भुवनेश्वर ने भी भुवनेश्वर राजभवन के सामने विरोध रैली निकाली। रैली के बाद मामस, भुवनेश्वर की निवर्तमान अध्यक्ष नीलम अग्रवाल ने बताया कि यह केवल एक डॉक्टर मौमिता देवनाथ की कहानी नहीं है अपितु ऐसी हजारों, करोड़ों ल इकियों की कहानी है, जो आज ऐसे दरिंदों के हवस का शिकार हो रहीं हैं। हम सरकार से, समाज से यह सवाल उठाते हैं कि इन सबको किस तरीके से बंद किया जाएगा। भारत से निर्भया हत्या काण्ड जैसी घटनाएं कब बंद होंगी? इसके लिए हम सरकार से निवेदन करते हैं कि महिलाओं को शारीरिक स्तर आत्म सुरक्षा प्रशिक्षण का क्लास शुरू किया जाए ताकि महिलाएं शारीरिक रूप से सबल और सक्षम बन सके एवं पुरुषों को इस तरीके की शिक्षा दी जाए,

ताकि वह समझ पाएं कि महिलाएं क्या है हमारी भी मां, बहन हैं । एक तरफ हम कहते हैं हम नारी पूजते हैं दूसरी तरफ नारी का यह हाल है भारत में।हमें पुरुषों को समझाना होगा, सीखाना होगा तो चलिए हमारे साथ आगे बढ़िए। बचपन से ही हमें लड़के और लड़कियों को यह सिखाना होगा कि हमें एक दूसरे का सम्मान करना है ना कि ईर्ष्या या नफरत। हमने इन सब विषयों को लेकर आज शाम भुवनेश्वर कैपिटल हॉस्पिटल में धरना दिया एवं रैली निकाली इस रैली में हमारे साथ कई डॉक्टर भी मौजूद थे। उन्होंने यह भी बताया कि उनके साथ विप्र फाउंडेशन से भी बहने उपस्थित हैं । नीलम अग्रवाल के अनुसार कुल ५० बहनों ने रैली में हिस्सा लिया। साथ ही साथ कैपिटल हॉस्पिटल के भी कई डॉक्टरों ने रैली में हिस्सा लिया।

इन सब्जियों में कई विटामिन, खनिज और एंटीऑक्सिडेंट का खजाना...

३० की उम्र के बाद आनुवांशिक कारणों, जीवनशैली में बदलाव और उम्र के साथ बीपी बढ़ने का खतरा बढ़ जाता है, कोलेस्ट्रॉल, डायबिटीज, हृदय रोग, मोटापा, हड्डियों की कमजोरी, जोड़ों का दर्द, मानसिक तनाव, चिंता, डिप्रेशन, कैंसर, पाचन तंत्र से जुड़ी बीमारियां, डर्मेटोलॉजी, बालों का झड़ना आदि का खतरा बढ़ जाता है।

३० की उम्र वह अवस्था होती है जब जिम्मेदारियों के साथ-साथ खुद की सेहत का भी ध्यान रखना बहुत जरूरी है। वास्तव में, यह वह उम्र है जब शरीर के सिस्टम बिगड़ने लगते हैं। ३० की उम्र के बाद आनुवांशिक कारणों, जीवनशैली में बदलाव और उम्र के साथ बीपी बढ़ने का खतरा बढ़ जाता है, कोलेस्ट्रॉल, डायबिटीज, हृदय रोग, मोटापा, हड्डियों की कमजोरी, जोड़ों का दर्द, मानसिक तनाव, चिंता, डिप्रेशन, कैंसर, पाचन तंत्र से जुड़ी बीमारियां, डर्मेटोलॉजी, बालों का झड़ना आदि का खतरा बढ़ जाता है।

न्यूट्रिशनिस्ट और डाइटीशियर्न के अनुसार, ३० की उम्र के बाद आपको मानसिक और शारीरिक रूप से स्वस्थ और मजबूत रहने के लिए अपनी डाइट पर ध्यान देना चाहिए। इस उम्र में अक्सर लोग खाने-पीने पर ध्यान नहीं देते हैं। इस उम्र के बाद, आपको अपने आहार में सब्जियों को शामिल करना चाहिए। हरी पत्तेदार सब्जियों में आवश्यक पोषक तत्व होते हैं। यह विटामिन, खनिज, एंटीऑक्सिडेंट और फाइबर का एक अच्छा स्रोत है। इसका सेवन प्रतिरक्षा प्रणाली को बढ़ावा देने, हड्डियों को मजबूत और स्वस्थ रखने, दृष्टि में सुधार, बीपी को नियंत्रित करने, कैंसर और मधुमेह के खतरे को कम करने और वजन कम करने में मदद कर सकता है। इसके अलावा आपको लेट्यूस लीफ, ओटमील, कोलार्ड ग्रीन, शलजम और सरसों की पत्तेदार सब्जियों आदि का सेवन करना चाहिए।

इस सब्जी में कई विटामिन, खनिज और एंटीऑक्सिडेंट होते हैं जो समग्र स्वास्थ्य के लिए आवश्यक होते हैं। यह सब्जी कैल्शियम, पोटेशियम, मैग्नीशियम और फोलेट का अच्छा स्रोत है। इसमें एंटीऑक्सीडेंट्स होते हैं जो शरीर को फ्री रेडिकल्स से होने वाले नुकसान से बचाकर कैंसर के खतरे को कम करते हैं। इसके सेवन से पाचन तंत्र स्वस्थ रहता है, वजन घटाने, बीपी नियंत्रित करने, हड्डियों को मजबूत बनाने और इम्यून सिस्टम मजबूत होने और संक्रमण व बीमारियों से लड़ता है। पाचन तंत्र स्वस्थ रहता है, दृष्टि में सुधार होता है, शरीर मजबूत होता है और हड्डियां मजबूत होती हैं।

अंजीर हेयर मास्क

अंजीर
हेअर मास्क तयार करने के लिए
४-५ अंजीर के टुकड़े
२ चमचे अंजीर तेल
४-५ चमचे दही
२-३ चमचे बेसन
१ चमचा मेथी दाने

सामग्री को उपयुक्त मात्रा में मिक्सर में पीस लें। अब उसमें दही और बेसन मिलाएं। फिर बाऊल में एलोवेरा जेल मिलाएं। यदि पेस्ट बहुत गाढ़ा हो तो थोड़ा पानी मिला सकते हैं। पेस्ट को पानी से अधिक गाढ़ा नहीं बनाना चाहिए।जैसे आप मेहंदी लगाते हैं, ठीक उसी प्रकार इस हेअर मास्क को भी लगाएं।

आमतौर पर २०-३० मिनट तक बालों पर लगाएं और फिर सुखने दें।फिर सामान्य पानी से बाल धोएं।आपकी इच्छा के अनुसार, शैम्पू का उपयोग करने के बजाय, बालों को सिर्फ पानी से धो सकते हैं। इससे उपयोग किए गए तत्व बालों में अधिक काले टिकेंगे और फायदा होगा।

उम्र और ऊंचाई के हिसाब से वजन कितना होना चाहिए?

आज के समय में हम देखते हैं कि बहुत से लोग बदलती जीवनशैली और हाई कैलोरी फूड्स के कारण वजन बढ़ने की शिकायत करते हैं। शरीर का वजन बढ़ना इन दिनों एक गंभीर समस्या है। बढ़ते वजन के कारण कई बीमारियां मानव शरीर को खोखला बनाने लगती हैं। इसलिए अपने वजन को कंट्रोल में रखना बहुत जरूरी है। उम्र के साथ शरीर के वजन में उतार-चढ़ाव होना आम बात है। फिर भी, अगर आपके शरीर का वजन अचानक बढ़ने लगे तो चिंता करना स्वाभाविक है। हर कोई नहीं जानता कि उन्हें कितना वजन करना चाहिए। वजन बढ़ने पर बहुत से लोग तनाव में आ जाते हैं। प्रत्येक की उम्र और ऊंचाई के अनुसारसही वजन होना जरूरी है। उम्र और ऊंचाई के हिसाब से आपका वजन कितना होना चाहिए, यह जानना आपकी सेहत के लिए फायदेमंद होता है।

हम कई बीमारियों को न्योता देते हैं। बहुत से लोग नहीं जानते कि उनकी ऊंचाई के आधार पर उनका वजन कितना होना चाहिए। यह गणना आमतौर पर बीएमआई (बॉडी मास इंडेक्स) पर आधारित होती है, जो एक सामान्य उपकरण है; यह किसी व्यक्ति के वजन को उनकी ऊंचाई के संबंध में मापता है। बीएमआई एक सामान्य तरीका है, जो किसी व्यक्ति के वजन का अनुमान उसकी ऊंचाई और उम्र के अनुसार लगाता है।

हालांकि, डॉ. अभिषेक सुभाष के अनुसार, 'बीएमआई वजन माप की एक भ्रामक और गलत अवधारणा है और उनका मानना है कि बीएमआई कैलकुलेटर पर बहुत कम निर्भरता होनी चाहिए। बीएमआई एक डॉक्टर या जीवविज्ञानी द्वारा तैयार नहीं किया जाता है। इसे एक गणितज्ञ ने विकसित किया था। बीएमआई में विभिन्न समस्याएं हैं। जैसे, यह मांसपेशियों, अस्थि घनत्व या समग्र शरीर संरचना और जातीय और लिंग अंतर को भी ध्यान में नहीं रखता है।

ऊंचाई से आपका आदर्श वजन क्या होना चाहिए?
हाइट ४ फीट १० इंच वजन ४१ से ५२ किलो
ऊंचाई ५ फीट वजन ४४ से ५५.७ किलोग्राम
हाइट ५ फीट २ इंच वजन ४९ से ६३ किलो
हाइट ५ फीट ४ इंच वजन ४९ से ६३ किलो
ऊंचाई ५ फीट ६ इंच वजन ५३ से ६७ किलो
हाइट ५ फीट ८ इंच वजन ५६ से ७१ किलो
हाइट ५ फीट १० इंच वजन ५९ से ७५ किलो
ऊंचाई ६ फीट वजन ६३ से ८० किलो

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

प्रतियोगिता नंबर-८७

सभी के लिए सुनहरा अवसर!

दीजिए आसान से सवालों का जवाब और

जीतिये 1,000/- का नकद इनाम!

प्रश्न १. 'दीन-ए-इलाही' धर्म किसने चलाया ?

प्रश्न २. किसे 'गरीब नवाज़' खा जाता है ?

प्रश्न ३. कुतुब मीनार कहा है ?

प्रश्न ४ . पर्वत और पहाड़ के बीच की भूमि को कहते हैं ।

प्रश्न ५ . सिल्क (रेशम) का सबसे बड़ा उत्पादक देश है ।

प्रश्न ६ . कारगिल युद्ध के समय पाकिस्तान का प्रधानमंत्री कौन था ?

प्रश्न ७ . भारत का राष्ट्रीय पक्षी है ।

प्रश्न ८ . भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना कब हुई थी ?

प्रश्न ९ . कौन सी आकृति भूमिगत जल से बनी है ?

प्रश्न १० . कंटूर रेखा दर्शाती है ।

प्रश्न ११. ३९. ४०. ४१. गांव के मेले में पंजीकरण शुल्क से किसे आय होती है ।

प्रश्न १२. 'खुदाई खिदमतगार' की स्थापना किसने की ?

प्रश्न १३. हिमालय की सबसे उत्तरी पर्वत श्रेणियों को कहते है ।

प्रश्न १४. बुद्ध के बचपन का नाम क्या था ?

प्रश्न १५ . भारत की समुद्री सीमा लम्बी है ।

आपके द्वारा सही जवाब की पहेली इस माह की २५ तारीख तक डाक द्वारा हमारे कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए। भरी गयी पहेली का रिजल्ट लॉटरी सिस्टम द्वारा निकाला जाएगा। विजेता के नाम और सही हल अगले माह के अंक में प्रकाशित किये जाएंगे। परिजन विजेता बच्चे का फोटो व उसका पहचान पत्र लेकर हमारे कार्यालय में आएं और मुंबई के बाहर रहने वाले विजेता अपने पहचान पत्र की सत्यापित प्रति डाक या मेल से निम्न पते पर भेजें।

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. ,
Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane,
PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
mangsom@rediffmail.com
Website: swarnimumbai.com

नामः.....

पूरा पताः .....

.....

.....

.....

फोन नं.: .....

'जब द्वारकाधीश श्रीकृष्ण ने महामुनि दुर्वासा के क्रोध को शांत किया था...'

जैसा कि सर्व विदित है कि महामुनि दुर्वासा सबसे अधिक क्रोधी स्वभाव के थे। उनके व्यक्तिगत जीवन में उनके अकारण और सकारण क्रोध का इतिहास हमें आज भी यह सीख देता है कि क्रोध सभी प्रकार के व्यक्तिगत अच्छाई को समाप्त कर देता है। महामुनि दुर्वासा को उनके क्रोध के कारण कोई उनको पसंद नहीं करता था। एक दिन वे पूरे ब्रह्मांड में घूम-घूमकर यह निवेदन करने लगे कि उनको कोई कम से कम एक दिन के लिए अपने घर पर रहने के लिए कहे। वे क्रोध नहीं करेंगे। लेकिन उनके क्रोध के कारण कोई भी उन्हें एक दिन के लिए अपने यहां मेहमान बनाने के लिए तैयार नहीं हुआ। वे घूमते -घूमते द्वारका गए। वहां पर भी वे घूम-घूमकर और चिल्ला -चिल्ला कर कहने लगे कि उनको कोई सिर्फ एक दिन के लिए अपने घर पर कोई मेहमान बना ले लेकिन कोई भी तैयार नहीं हुआ। जब यह खबर द्वारकाधीश श्रीकृष्ण को मिली तो वे महामुनि दुर्वासा को आदर सहित अपने राजमहल में लाए। उनका खूब आतिथ्य-सत्कार किया। एक दिन महामुनि दुर्वासा सुबह उठकर राजमहल की सभी वस्तुओं में आग लगा दी और सभी कर्मचारियों को मारने- पीटने लगे।यह देखकर द्वारकाधीश श्रीकृष्ण वहां आये। महामुनि दुर्वासा ने द्वारकाधीश श्रीकृष्ण से उनके लिए खीर पकाने को कहा। द्वारकाधीश श्रीकृष्ण की पटरानी रुक्मिणी ने स्वादिष्ट खीर पकाई। दुर्वासा महामुनि कुछ खीर खाए और शेष बची खीर को जमीन पर फेंक दी। उनका गुस्सा फिर भी शांत नहीं हुआ। वे द्वारकाधीश के रथ पर बैठ गए और पटरानी रुक्मिणी से स्वयं घोड़ा बनकर रथ चलाने का आदेश दिए। उसी समय द्वारकाधीश श्रीकृष्ण उनके सामने आ गये। महामुनि दुर्वासा ने द्वारकाधीश श्रीकृष्ण को अचानक देखकर स्तब्ध रह गए और अपने क्रोध को हमेशा- हमेशा के लिए त्याग कर और अति विनम्र होकर द्वारकाधीश से कहा कि आज दुर्वासा का क्रोध उनके समक्ष हार गया है।

मित्रों! हमेशा ध्यान रखें कि क्रोध आपके जीवन का सबसे बड़ा दोष है। आप अगर अपने क्रोध पर विजय पा लेंगे तो सबकुछ पा सकते हैं।

-अशोक पाण्डेय

श्री जगन्नाथ जी को नारियल आदि ही क्यों निवेदित किया जाता है?'

ऐसी मान्यता है कि कलियुग में इस धरती पर तीन ही वास्तविक रत्न जगन्नाथ जी ने समस्त भक्तों को प्रदान की हैः जल,अन्न और मधुर वाणी जिन्हें प्रसाद के रूप में उन्हें भक्तगण निवेदित करते हैं। जगत के नाथ कलियुग के एक मात्र पूर्ण दारुब्रह्म हैं जो पूर्ण फल नारियल स्वेच्छा से पसंद करते हैं। इसलिए उनको प्रसाद के रूप में नारियल निवेदित किया जाता है। आदिशंकराचार्य के जगन्नाथष्टकम् पढ़ने वाले और उसको अच्छी तरह से समझने वाले मेरे इस व्यक्तिगत विचार से अवश्य सहमत होंगे कि भगवान जगन्नाथ द्वारा प्रदान उपर्युक्त तीनों वास्तविक रत्न ही उनको प्रसाद के रूप में प्रतिदिन निवेदित किया जाता है जो उन्हें सबसे अधिक पसंद है।जगन्नाथ भक्त दास्य बेउरिया अपने नारियल के बगीचे से पूर्ण नारियल फल लेकर प्रतिदिन आता था और श्रीमंदिर के सिंहद्वार के सामने खड़ा हो जाता था और भगवान जगन्नाथ अपने रत्नवेदी से अपनी बाहें लंबी कर उसे सानंद ग्रहण कर लेते थे। जय जगन्नाथ जी की !

- अशोक पाण्डेय

Ram Creations
Jewelry & Gifts
28974 Orchard Lake Rd, Farmington Hills | ramcreations.com | (248) 851-1400

WORLD PLAYER
WORLD PLAYER MENSWEAR
MEGABUY ₹149-499
SAVE ₹ 100
MENS 100% CORDUROY 16 WALE WASHED SHIRTS MRP ₹ 599
MEGABUY ₹499
SAVE ₹ 100
MENS 100% COTTON SEMI FORMAL SHIRTS MRP ₹ 599
MEGABUY ₹499
SAVE ₹ 100
MENS FORMAL TROUSERS MRP ₹ 699
MEGABUY ₹599

बेटी पढ़ाओ

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ

माटी वाली

मालकिन के बाहर आँगन में निकलने से पहले उसने चुपके से अपने हाथ में थामी दो रोटियों में से एक रोटी को मोड़ा और उसे कपड़े पर लपेटकर गाँठ बाँध दी। साथ ही अपना मुँह यों ही चलाकर खाने का दिखावा करने लगी। घर की मालकिन पीतल के एक गिलास में चाय लेकर लौटी। उसने वह गिलास बुढ़िया के पास जमीन पर रख दिया। 'ले, सद्दा-बासी साग कुछ है नहीं अभी। इसी चाय के साथ निगल जा।' माटी वाली ने खुले कपड़े के एक छोर से पूरी गोलाई में पकड़कर पीतल का वह गरम गिलास हाथ में उठा लिया। अपने होंठों से गिलास के किनारे को छुआने से पहले, शुरू-शुरू में उसने उसके अन्दर रखी गरम चाय को ठण्डा करने के लिए सू-सू करके, उस पर लम्बी-लम्बी फूँक मारीं। तब रोटी के टुकड़ों को चबाते हुए धीरे-धीरे चाय सुड़कने लगी।

शहर के सेमल का तप्पड़ मोहल्ले की ओर बने आखिरी घर की खोली में पहुँचकर उसने दोनों हाथों की मदद से अपने सिर पर धरा बोझा नीचे उतारा। मिट्टी से भरा एक कनस्तर। माटी वाली। टिहरी शहर में शायद ऐसा कोई घर नहीं होगा जिसे वह न जानती हो या जहाँ उसे न जानते हों, घर के कुल निवासी, बरसों से वहाँ रहते आ रहे किरायेदार, उनके बच्चे तलक। घर-घर में लाल मिट्टी देते रहने के उस काम को करने वाली वह अकेली है। उसका कोई प्रतिद्वन्द्वी नहीं।

उसके बगैर तो लगता है, टिहरी शहर के कई एक घरों में चूल्हों का जलना तक मुश्किल हो जाएगा। वह न रहे तो लोगों के सामने रसोई और भोजन कर लेने के बाद अपने चूल्हे-चैके की लिपाई करने की समस्या पैदा हो जाएगी। भोजन जुटाने और खाने की तरह रोज की एक समस्या। घर में साफ, लाल मिट्टी तो हर हालत में मौजूद रहनी चाहिए। चूल्हे-चैकों को लीपने के अलावा साल-दो साल में मकान के कमरों, दीवारों की गोबरी-लिपाई करने के लिए भी लाल माटी की जरूरत पड़ती रहती है। शहर के अन्दर कहीं माटीखान है नहीं। भागीरथी और भीलांगना, दो नदियों के तटों पर बसे हुए शहर की मिट्टी इस कदर रेतीली है कि उससे चूल्हों की लिपाई का काम नहीं किया जा सकता। आने वाले नये-नये किरायेदार भी एक बार अपने घर के आँगन में उसे देख लेते हैं तो अपने आप माटी वाली के ग्राहक बन जाते हैं। घर-घर जाकर माटी बेचने वाली नाटे कद की एक हरिजन बुढ़िया-माटी वाली।

शहरवासी सिर्फ माटी वाली को नहीं, उसके कनस्तर को भी अच्छी तरह पहचानते हैं। रद्दी कपड़े को मोड़कर बनाये गये एक गोल डिल्ले के ऊपर लाल, चिकनी मिट्टी से छुलबुल भरा कनस्तर टिका रहता है। उसके ऊपर किसी ने कभी कोई ढक्कन लगा हुआ नहीं देखा। अपने कनस्तर को इस्तेमाल में लाने से पहले वह उसके ऊपरी ढक्कन को काटकर निकाल फेंकती है। ढक्कन के न रहने पर कनस्तर के अन्दर मिट्टी भरने और फिर उसे खाली करने में आसानी रहती है। उसके कनस्तर को जमीन पर रखते-रखते सामने के घर से नौ-दस साल की एक छोटी लड़की कामिनी दौड़ती हुई वहाँ पहुँची और उसके सामने खड़ी हो गयी।

'मेरी माँ ने कहा है, जरा हमारे यहाँ भी आ जाना।'

'अभी आती हूँ।'

घर की मालकिन ने माटी वाली को अपने कनस्तर की माटी कच्चे आँगन के एक कोने पर उड़ेल देने को कह दिया।

'तू बहुत भाग्यवान है। चाय के टैम पर आयी है हमारे घर। भाग्यवान आये खाते वक्त।'

वह अपनी रसोई में गयी और दो रोटियाँ लेती आयी। रोटियाँ उसे सौंपकर वह फिर अपनी रसोई में घुस गयी।

माटी वाली के पास अपने अच्छे या बुरे भाग्य के बारे में ज्यादा सोचने का वक्त नहीं था। घर की मालकिन के अन्दर जाते ही माटी वाली ने इधर-उधर तेज निगाहें दौड़ायीं। हाँ, इस वक्त वह अकेली थी। उसे कोई देख नहीं रहा था। उसने फौरन अपने सिर पर धरे डिल्ले के कपड़े के मोड़ों को हड़बड़ी में एक झटके में खोला और उसे सीधा कर दिया। फिर इकहरा। खुल जाने के बाद वह एक पुरानी चादर के एक फटे हुए कपड़े के रूप में प्रकट हुआ।

मालकिन के बाहर आँगन में निकलने से पहले उसने चुपके से अपने हाथ में थामी दो रोटियों में से एक रोटी को मोड़ा और उसे कपड़े पर लपेटकर गाँठ

बाँध दी। साथ ही अपना मुँह यों ही चलाकर खाने का दिखावा करने लगी। घर की मालकिन पीतल के एक गिलास में चाय लेकर लौटी। उसने वह गिलास बुढ़िया के पास जमीन पर रख दिया।

'ले, सद्दा-बासी साग कुछ है नहीं अभी। इसी चाय के साथ निगल जा।'

माटी वाली ने खुले कपड़े के एक छोर से पूरी गोलाई में पकड़कर पीतल का वह गरम गिलास हाथ में उठा लिया। अपने होंठों से गिलास के किनारे को छुआने से पहले, शुरू-शुरू में उसने उसके अन्दर रखी गरम चाय को ठण्डा करने के लिए सू-सू करके, उस पर लम्बी-लम्बी फूँक मारीं। तब रोटी के टुकड़ों को चबाते हुए धीरे-धीरे चाय सुड़कने लगी।

'चाय तो बहुत अच्छा साग हो जाती है ठकुराइनजी।'

'भूख तो अपने में एक साग होती है बुढ़िया। भूख मीठी कि भोजन मीठा ?'

'तुमने अभी तक पीतल के गिलास सँभालकर रखे हैं। पूरे बाजार में और किसी घर में अब नहीं मिल सकते ये गिलास।'

'इनके खरीदार कई बार हमारे घर के चक्कर काटकर लौट गये। पुरखों की गाढ़ी कमाई से हासिल की गयी चीजों को हराम के भाव बेचने को मेरा दिल गवाही नहीं देता। हमें क्या मालूम कैसी तंगी के दिनों में अपनी जीभ पर कोई स्वादिष्ट, चटपटी चीज रखने के बजाय मन मसोसकर दो-दो पैसे जमा करते रहने के बाद खरीदी होंगी उन्होंने ये तमाम चीजें, जिनकी हमारे लोगों की नजरों में अब कोई कीमत नहीं रह गयी है। बाजार में जाकर पीतल का भाव पूछो जरा, दाम सुनकर दिमाग चकराने लगता है। और ये व्यापारी हमारे घरों से हराम के भाव इकट्ठा कर ले जाते हैं, तमाम बर्तन भाँडे। काँसे के बरतन भी गायब हो गये हैं, सब घरों से।'

'इतनी लम्बी बात नहीं सोचते बाकी लोग। अब जिस घर में जाओ वहाँ या तो स्टील के भाँडे दिखाई देते हैं या फिर काँच और चीनी मिट्टी के।'

'अपनी चीज का मोह बहुत बुरा होता है। मैं तो सोचकर पागल हो जाती हूँ कि अब इस उमर में इस शहर को छोड़कर हम जाएँगे कहाँ!'

'ठकुराइन जी, जो जमीन-जायदादों के मालिक हैं, वे तो कहीं न कहीं ठिकाने पर जाएँगे ही। पर मैं सोचती हूँ मेरा क्या होगा! मेरी तरफ देखने वाला तो कोई भी नहीं।'

चाय खत्म कर माटी वाली ने एक हाथ में अपना कपड़ा उठाया, दूसरे में खाली कनस्तर और खोली से बाहर निकलकर सामने के घर में चली गयी।

उस घर में भी 'कल हर हालत में मिट्टी ले आने' के आदेश के साथ उसे दो रोटियाँ मिल गयीं। उन्हें भी उसने अपने कपड़े के एक दूसरे छोर में बाँध लिया। लोग जानें तो जानें कि वह ये रोटियाँ अपने बुड्ढे के लिए ले जा रही है। उसके घर पहुँचते ही अशक्त बुड्ढा कातर नजरों से उसकी ओर देखने लगता है। वह घर में रसोई बनने का इन्तजार करने लगता है। आज वह घर पहुँचते ही तीन रोटियाँ अपने बुड्ढे के हवाले कर देगी। रोटियों को देखते ही चेहरा खिल उठेगा बुड्ढे का।

साथ में ऐसा भी बोल देगी, 'साग तो कुछ है नहीं अभी।'

और तब उसे जवाब सुनाई देगा, 'भूख मीठी कि भोजन मीठा ?'

उसका गाँव शहर के इतना पास भी नहीं है। कितना ही तेज चलो फिर भी घर पहुँचने में एक घंटा तो लग ही जाता है। रोज सुबह निकल जाती है वह अपने घर से। पूरा दिन माटीखान में मिट्टी खोदने, फिर विभिन्न स्थानों में फैले घरों तक उसे ढोने में बीत जाता है। घर पहुँचने से पहले रात घिरने लगती है। उसके पास अपना कोई खेत नहीं। जमीन का एक भी टुकड़ा नहीं। झोंपड़ी, जिसमें वह गुजारा करती है, गाँव के एक ठाकुर की जमीन पर खड़ी है। उसकी जमीन पर रहने की एवज में उस भले आदमी के घर पर भी माटी वाली को कई तरह के कामों की बेगार करनी होती है।

नहीं, आज वह एक गठरी में बदल गये अपने बुड्ढे को कोरी रोटियाँ नहीं देगी। माटी बेचने से हुई आमदनी से उसने एक पाव प्याज खरीद लिया। प्याज को कूटकर वह उन्हें जल्दी-जल्दी तल लेगी। बुड्ढे को पहले रोटियाँ दिखाएगी ही नहीं। सब्जी तैयार होते ही परोस देगी उसके सामने दो रोटियाँ। अब वह दो रोटियाँ भी नहीं खा सकता। एक ही रोटी खा पाएगा या हद से हद डेढ़। अब उसे ज्यादा नहीं पचता। बाकी बची डेढ़ रोटियों से माटी वाली अपना काम चला लेगी। एक रोटी तो उसके पेट में पहले ही जमा हो चुकी है। मन में यह सब सोचती, हिसाब लगाती हुई वह अपने घर पहुँच गयी।

माटी बेचने से हुई आमदनी से उसने एक पाव प्याज खरीद लिया। प्याज को कूटकर वह उन्हें जल्दी-जल्दी तल लेगी। बुड्ढे को पहले रोटियाँ दिखाएगी ही नहीं। सब्जी तैयार होते ही परोस देगी उसके सामने दो रोटियाँ। अब वह दो रोटियाँ भी नहीं खा सकता। एक ही रोटी खा पाएगा या हद से हद डेढ़। अब उसे ज्यादा नहीं पचता। बाकी बची डेढ़ रोटियों से माटी वाली अपना काम चला लेगी। एक रोटी तो उसके पेट में पहले ही जमा हो चुकी है। मन में यह सब सोचती, हिसाब लगाती हुई वह अपने घर पहुँच गयी।

उसके बुड्ढे को अब रोटी की कोई जरूरत नहीं रह गयी थी। माटी वाली के पाँवों की आहट सुनकर हमेशा की तरह आज वह चौंका नहीं। उसने अपनी नजरें उसकी ओर नहीं घुमाईं। घबराई हुई माटी वाली ने उसे छूकर देखा। वह अपनी माटी को छोड़कर जा चुका था।

टिहरी बाँध पुनर्वास के साहब ने उससे पूछा कि वह रहती कहाँ है।

'तुम तहसील से अपने घर का प्रमाणपत्र ले आना।'

'मेरी जिनगी तो इस शहर के तमाम घरों में माटी देते गुजर गयी साब।'

'माटी कहाँ से लाती हो ?'

'माटीखान से लाती हूँ माटी।'

'वह माटीखान चढ़ी है तेरे नाम ? अगर है तो हम तेरा नाम लिख देते हैं।'

'माटीखान तो मेरी रोजी है साहब।'

'बुढ़िया हमें जमीन का कागज चाहिए, रोजी का नहीं।'

'बाँध बनने के बाद मैं क्या खाऊँगी साब ?'

'इस बात का फैसला तो हम नहीं कर सकते। वह बात तो तुझे खुद ही तय करनी पड़ेगी।'

टिहरी बाँध की दो सुरंगों को बन्द कर दिया गया है। शहर में पानी भरने लगा है। शहर में आपाधापी मची है। शहरवासी अपने घरों को छोड़कर वहाँ से भागने लगे हैं। पानी भर जाने से सबसे पहले कुल श्मशान घाट डूब गये हैं।

माटी वाली अपनी झोपड़ी के बाहर बैठी है। गाँव के हर आने-जाने वाले से एक ही बात कहती जा रही है-- 'गरीब आदमी का श्मशान नहीं उजड़ना चाहिए।'

-विद्यासागर नौटियाल

REDEFINE YOUR FUTURE!

Registration Open : Phase 2

March 11th to May 20th, 2024

NMIMS-CET 2024 NMIMS-LAT 2024

Contact: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in

SMCW SUHRC SYMBIOSIS MEDICAL COLLEGE FOR WOMEN & SYMBIOSIS UNIVERSITY HOSPITAL AND RESEARCH CENTRE

SMCW

A NAME FOR WOMEN EMPOWERMENT

MBBS Admission Now Available Through NRI Quota for NEET-UG 2024.

Get in touch with us for **Free Admission Guidance** and explore the various options available to you.

For More Information

+91 77580 84467 / +91 89836 84467

Contact: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in

•Air Tight Containers •Keeps Your Food Fresh
•Multipurpose food storage option
•100 % Food Grade Stainless Steel
•See through transparent Lid •Easy Grip
•Leak Proof •Carry As lunch Box •Fridge Friendly

एक छोटा-सा मज़ाक

स्लेज की गति धीरे-धीरे कम हो जाती है। हवा का गरजना और स्लेज का गूँजना अब इतना भयानक नहीं लगता। हमारे दम में दम आता है और आखिरकार हम नीचे पहुँच जाते हैं। नाद्या अधमरी-सी हो रही है। वह सफ़ेद पड़ गई है। उसकी साँसें बहुत धीमी-धीमी चल रही हैं... मैं उसकी स्लेज से उठने में मदद करता हूँ।

सरदियों की खूबसूरत दोपहर... सरदी बहुत तेज़ है। नाद्या ने मेरी बाँह पकड़ रखी है। उसके घुंघराले बालों में बर्फ़ इस तरह जम गई है कि वे चांदनी की तरह झलकने लगे हैं। होंठों के ऊपर भी बर्फ़ की एक लकीर-सी दिखाई देने लगी है। हम एक पहाड़ी पर खड़े हुए हैं। हमारे पैरों के नीचे मैदान पर एक ढलान पसरी हुई है जिसमें सूरज की रोशनी से चमक रही है जैसे उसकी परछाई शीशे में पड़ रही हो। हमारे पैरों के पास ही एक स्लेज पड़ी हुई है जिसकी गद्दी पर लाल कपड़ा लगा हुआ है।

चलो नाद्या, एक बार फिसलें! मैंने नाद्या से कहा... सिर्फ़ एक बार! घबराओ नहीं, हमें कुछ नहीं होगा, हम ठीक-ठाक नीचे पहुँच जाएंगे।

लेकिन नाद्या डर रही है। यहाँ से, पहाड़ी के कगार से, नीचे मैदान तक का रास्ता उसे बेहद लम्बा लग रहा है। वह भय से पीली पड़ गई है। जब वह ऊपर से नीचे की ओर झाँकती है और जब मैं उससे स्लेज पर बैठने को कहता हूँ तो जैसे उसका दम निकल जाता है। मैं सोचता हूँ-- लेकिन तब क्या होगा, जब वह नीचे फिसलने क खत़रा उठा लेगी! वह तो भय से मर ही जाएगी या पागल ही हो जाएगी।

...मेरी बात मान लो! ...मैंने उससे कहा, नहीं-नहीं, डरो नहीं, तुममें हिम्मत की कमी है क्या?

आखिरकार वह मान जाती है। और मैं उसके चेहरे के भावों को पढ़ता हूँ। ऐसा लगता है जैसे मौत का खत़रा मोल लेकर ही उसने मेरी यह बात मानी है। वह भय से सफ़ेद पड़ चुकी है और काँप रही है। मैं उसे स्लेज पर बैठाकर, उसके कंधों पर अपना हाथ रखकर उसके पीछे बैठ जाता हूँ। हम उस अथाह गहराई की ओर फिसलने लगते हैं। स्लेज गोली की तरह बड़ी तेज़ी से नीचे जा रही है। बेहद ठंडी हवा हमारे चेहरों पर चोट कर रही है। हवा ऐसे चिंघाड़ रही है कि लगता है, मानों कोई तेज़ सीटी बजा रहा हो। हवा जैसे गुस्से से हमारे बदनों को चीर रही है, वह हमारे सिर उतार लेना चाहती है। हवा इतनी तेज़ है कि साँस लेना भी मुश्किल है। लगता है, मानों शैतान हमें अपने पंजों में जकड़कर गरजते हुए नरक की ओर खींच रहा है। आसपास की सारी चीज़ें जैसे एक तेज़ी से भागती हुई लकीर में बदल गई हैं। ऐसा महसूस होता है कि आनेवाले पल में ही हम मर जाएंगे।

मैं तुम से प्यार करता हूँ, नाद्या! --मैं धीमे से कहता हूँ।

स्लेज की गति धीरे-धीरे कम हो जाती है। हवा का गरजना और स्लेज का गूँजना अब इतना भयानक नहीं लगता। हमारे दम में दम आता है और आखिरकार हम नीचे पहुँच जाते हैं। नाद्या अधमरी-सी हो रही है। वह सफ़ेद पड़ गई है। उसकी साँसें बहुत धीमी-धीमी चल रही हैं... मैं उसकी स्लेज से उठने में मदद करता हूँ।

अब चाहे जो भी हो जाए मै कभी नहीं फिसलूंगी, हरगिज़ नहीं! आज तो मैं मरते-मरते बची हूँ। --मेरी ओर देखते हुए उसने कहा। उसकी बड़ी-बड़ी आँखों में खौफ़ का साया दिखाई दे रहा है। पर थोड़ी ही देर बाद वह सहज हो गई और मेरी ओर सवालिया निगाहों से देखने लगी। क्या उसने सचमुच वे शब्द सुने थे या उसे ऐसा बस महसूस हुआ था, सिर्फ़ हवा की गरज थी वह? मैं नाद्या के पास ही खड़ा हूँ, मैं सिगरेट पी रहा हूँ और अपने दस्ताने को ध्यान से देख रहा हूँ।

नाद्या मेरा हाथ अपने हाथ में ले लेती है और हम देर तक पहाड़ी के आसपास घूमते रहते हैं। यह पहेली उसको परेशान कर रही है। वे शब्द जो उसने पहाड़ी से नीचे फिसलते हुए सुने थे, सच में कहे गए थे या नहीं? यह बात वास्तव में हुई या नहीं। यह सच है या झूठ? अब यह सवाल उसके लिए स्वाभिमान का सवाल हो गया है. उसकी इज़्ज़त का सवाल हो गया है। जैसे उसकी ज़िन्दगी और उसके जीवन की खुशी इस बात पर निर्भर करती है। यह बात उसके लिए महत्त्वपूर्ण है, दुनिया में शायद सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण। नाद्या मुझे अपनी अधीरता भरी उदास नज़रों से ताकती है, मानों मेरे अन्दर की बात भाँपना चाहती हो। मेरे सवालों का वह कोई असंगत-सा उत्तर देती है। वह इस इन्तज़ार में है कि मैं उससे फिर वही बात शुरू करूँ। मैं उसके चेहरे को ध्यान से देखता हूँ-- अरे, उसके प्यारे चेहरे पर ये कैसे भाव हैं? मैं देखता हूँ कि वह अपने आप से लड़ रही है, उसे मुझ से कुछ कहना है, वह कुछ पूछना चाहती है। लेकिन वह अपने खयालों को, अपनी भावनाओं को शब्दों के रूप में प्रकट नहीं कर पाती। वह झेंप रही है, वह डर रही है, उसकी अपनी ही खुशी उसे तंग कर रही है...। --सुनिए! --मुझ से मुँह चुराते हुए वह कहती है। --क्या? --मैं पूछता हूँ। --चलिए, एक बार फिर फिसलें।

हम फिर से पहाड़ी के ऊपर चढ़ जाते हैं। मैं फिर

से भय से सफ़ेद पड़ चुकी और काँपती हुई नाद्या को स्लेज पर बैठाता हूँ। हम फिर से भयानक गहराई की ओर फिसलते हैं। फिर से हवा की गरज़ और स्लेज की गूँज हमारे कानों को फाड़ती है और फिर जब शोर सबसे अधिक था मैं धीमी आवाज़ में कहता हूँ : --मैं तुम से प्यार करता हूँ, नाद्या।

नीचे पहुँचकर जब स्लेज रुक जाती है तो नाद्या एक नज़र पहले ऊपर की तरफ़ ढलान को देखती है जिससे हम अभी-अभी नीचे फिसले हैं, फिर दूसरी नज़र मेरे चेहरे पर डालती है। वह ध्यान से मेरी बेपरवाह और भावहीन आवाज़ को सुनती है। उसके चेहरे पर हैरानी है। न सिर्फ़ चेहरे पर बल्कि उसके सारे हाव-भाव से हैरानी झलकती है। वह चकित है और जैसे उसके चेहरे पर यह लिखा है-- क्या बात है? वे शब्द किसने कहे थे? शायद इसी ने? या हो सकता है मुझे बस ऐसा लगा हो, बस ऐसे ही वे शब्द सुनाई दिए हों?

उसकी परेशानी बढ़ जाती है कि वह इस सच्चाई से अनभिज्ञ है। यह अनभिज्ञता उसकी अधीरता को बढ़ाती है। मुझे उस पर तरस आ रहा है। बेचारी लड़की! वह मेरे प्रश्नों का कोई उत्तर नहीं देती और नाक-भौंह चढ़ा लेती है। लगता है वह रोने ही वाली है। --घर चलें? -- मैं पूछता हूँ। --लेकिन मुझे... मुझे तो यहाँ फिसलने में खूब़ मज़ा आ रहा है। --वह शर्म से लाल होकर कहती है और फिर मुझ से अनुरोध करती है: --और क्यों न हम एक बार फिर फिसलें?

हुम... तो उसे यह फिसलना 'अच्छा लगता है'। पर स्लेज पर बैठते हुए तो वह पहले की तरह ही भय से सफ़ेद दिखाई दे रही है और काँप रही है। उसे साँस लेना भी मुश्किल हो रहा है। लेकिन मैं अपने होंठों को रुमाल से पोंछकर धीरे से खाँसता हूँ और जब फिर से नीचे फिसलते हुए हम आधे रास्ते में पहुँच जाते हैं तो मैं एक बार फिर कहता हूँ : --मैं तुम से प्यार करता हूँ, नाद्या!

और यह पहेली पहेली ही रह जाती है। नाद्या चुप रहती है, वह कूछ सोचती है... मैं उसे उसके घर तक छोड़ने जाता हूँ। वह धीमे-धीमे क़दमों से चल रही है और इन्तज़ार कर रही है कि शायद मैं उससे कुछ कहूंगा। मैं यह नोट करता हूँ कि उसका दिल कैसे तड़प रहा है। लेकिन वह चुप रहने की कोशिश कर रही है और अपने मन की बात को अपने दिल में ही रखे हुए है। शायद वह सोच रही है।

दूसरे दिन मुझे उसका एक रुक्का मिलता है :'आज जब आप पहाड़ी पर फिसलने के लिए जाएँ तो मुझे अपने साथ ले लें। नाद्या।' उस दिन से हम दोनों रोज़ फिसलने के लिए पहाड़ी पर जाते हैं और स्लेज पर नीचे फिसलते हुए हर बार मैं धीमी आवाज़ में वे ही शब्द कहता हूँ :--मैं तुम से प्यार करता हूँ, नाद्या!

जल्दी ही नाद्या को इन शब्दों का नशा-सा हो जाता है, वैसा ही नशा जैसा शराब या मार्फ़ीन का नशा होता है। वह अब इन शब्दों की खुमारी में रहने लगी है। हालाँकि उसे पहाड़ी से नीचे फिसलने में पहल ` की तरह डर लगता है लेकिन अब भय और खत़रा मौहब्बत से भरे उन शब्दों में एक नया स्वाद पैदा करते हैं जो पहले की तरह उसके लिए एक पहेली बने हुए हैं और उसके दिल को तड़पाते हैं। उसका शक हम दो ही लोगों पर है-- मुझ पर और हवा पर। हम दोनों में से कौन उसके सामने अपनी भावना का इज़हार करता है, उसे पता नहीं। पर अब उसे इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। शराब चाहे किसी भी बर्तन से क्यों न पी जाए-- नशा तो वह उतना ही देती है। अचानक एक दिन दोपहर के समय मैं अकेला ही उस पहाड़ी पर जा पहुँचा। भीड़ के पीछे से मैंने देखा कि नाद्या उस ढलान के पास खड़ी है, उसकी आँखें मुझे ही तलाश रही हैं। फिर वह धीरे-धीरे पहाड़ी पर चढ़ने लगती है ...अकेल ` फिसलने में हालाँकि उसे डर लगता है, बहुत ज़्यादा डर! वह्बर्फ़ की तरह सफ़ेद पड़ चुकी है, वह काँप रही है, जैसे उसे फ़ाँसी पर चढ़ाया जा रहा हो। पर वह आगे ही आगे बढ़ती जा रही है, बिना झिझके, बिना रुके। शायद आखरि उसने फ़ैसला कर ही लिया कि वह इस बार अकेली नीचे फिसल कर देखेगी कि 'जब मैं अकेली होऊंगी तो क्या मुझे वे मीठे शब्द सुनाई देंगे या नहीं?' मैं देखता हूँ कि वह बेहद घबराई हुई भय से मुँह खोलकर स्लेज पर बैठ जाती है। वह अपनी आँखें बंद कर लेती है और जैसे जीवन से विदा लेकर नीचे की ओर फिसल पड़ती है... स्लेज के फिसलने की गूँज सुनाई पड़ रही है। नाद्या को वे शब्द सुनाई दिए या नहीं-- मुझे नहीं मालूम... मैं बस यह देखता हूँ कि वह बेहद थकी हुई और कमज़ोर-सी स्लेज से उठती है। मैं उसके चेहरे पर यह पढ़ सकता हूँ कि वह खुद़ नहीं जानती कि उसे कुछ सुनाई दिया या नहीं। नीचे फिसलते हुए उसे इतना डर लगा कि उसके लिए कुछ भी सुनना या समझना मुश्किल था।

फिर कुछ ही समय बाद वसन्त का मौसम आ गया। मार्च का महीना है... सूरज की किरणें पहले से अधिक गरम हो गई हैं। हमारी बर्फ़ से ढकी वह सफ़ेद पहाड़ी भी काली पड़ गई है, उसकी चमक खत़्म हो गई है। धीरे-धीरे सारी बर्फ़ पिघल जाती है। हमारा फिसलना बंद हो गया है और अब नाद्या उन शब्दों को नहीं सुन पाएगी। उससे वे शब्द कहने वाला भी अब कोई नहीं है : हवा खाम़ोश हो गई है और मैं यह शहर छोड़कर पितेरबुर्ग जाने वाला हूँ-- हो सकता है कि मैं हमेशा के लिए वहाँ चला जाऊंगा।

मेरे पितेरबुर्ग रवाना होने से शायद दो दिन पहले की बात है। संध्या समय मैं बगीचे में बैठा था। जिस मकान में नाद्या रहती है यह बगीचा उससे जुड़ा हुआ था और एक ऊँची बाड़ ही नाद्या के मकान को उस बगीचे से अलग करती थी। अभी भी मौसम में काफ़ी ठंड है, कहीं-कहीं बर्फ़ पड़ी दिखाई देती है, हरियाल ी अभी नहीं है लेकिन वसन्त की सुगन्ध महसूस होने लगी है। शाम को पक्षियों की चहचहाट सुनाई देने ल गी है। मैं बाड़ के पास आ जाता हूँ और एक दरार में से नाद्या के घर की तरफ़ देखता हूँ। नाद्या बरामदे में खड़ी है और उदास नज़रों से आसमान की ओर ताक रही है। बसन्ती हवा उसके उदास फीके चेहरे को सहला रही है। यह हवा उसे उस हवा की याद दिल ाती है जो तब पहाड़ी पर गरजा करती थी जब उसने वे शब्द सुने थे। उसका चेहरा और उदास हो जाता है, गाल पर आँसू ढुलकने लगते हैं... और बेचारी लड़की अपने हाथ इस तरह से आगे बढ़ाती है मानो वह उस हवा से यह प्रार्थना कर रही होकि वह एक बार फिर से उसके लिए वे शब्द दोहराए। और जब हवा का एक झोंका आता है तो मैं फिर धीमी आवाज़ में कहता हूँ : --मैं तुम से प्यार करता हूँ, नाद्या!

अचानक न जाने नाद्या को क्या हुआ! वह चौंककर मुस्कराने लगती है और हवा की ओर हाथ बढ़ाती है। वह बेहद खुश़ है, बेहद सुखी, बेहद सुन्दर।

और मैं अपना सामान बांधने के लिए घर लौट आता हूँ...।

यह बहुत पहले की बात है। अब नाद्या की शादी हो चुकी है। उसने खुद़ शादी का फ़ैसला किया या नहीं-- इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। उसका पति-- एक बड़ा अफ़सर है और उनके तीन बच्चे हैं। वह उस समय को आज भी नहीं भूल पाई है, जब हम फिसलने के लिए पहाड़ी पर जाया करते थे। हवा के वे शब्द उसे आज भी याद हैं, यह उसके जीवन की सबसे सुखद, हृदयस्पर्शी और खूब़सूरत याद है।

और अब, जब मैं प्रौढ़ हो चुका हूँ, मैं यह नहीं समझ पाता हूँ कि मैंने उससे वे शब्द क्यों कहे थे, किसलिए मैंने उसके साथ ऐसा मज़ाक किया था!...

कहानी : अन्तोन चेखव़

(मूल रूसी से अनुवाद : अनिल जनविजय)

Good Vibes Onion Hairfall Control Oil I Strengthening I Hair Growth I No Parabens, No Sulphates, No Mineral Oil, No Animal Testing (100 ml)

Good Vibes Argan Oil Hairfall Control Vitalizing Serum I Frizz Control, Shine, Stregthening I No Parabens, No Sulphates, No Animal Testing (50 ml)

दूसरी नाक

एकलौते बेटे का यूँ दिन-रात बिसूरना माँ-बाप से देखा न गया। बूढ़े ने कहा–'मेरा क्या है? पका फल हूँ! कब टपक पड़ूँ? जो कुछ है इसी के लिए है। रोज़ी का सहारा ये दो ऊँट हैं ये भी जाएँगे तो फिर खुद ही फिरंगियों की सड़क पर रोड़ी कूटने की मज़दूरी करेगा। लोग यही कहेंगे कि गफ़्फ़ार का बेटा मज़दूरी करने लगा, सो इसकी क़िसमत! मैं क्या सदा बैठा रहूँगा?' आखिर दोनों ऊँट भी बन्नू के बाज़ार में बेच दिए गए और शब्बू जब्बार की बहू बन के घर आ गई। शब्बू को इस बात का कम गर्व नहीं था कि उसकी क़ीमत गिन कर अढ़ाई सौ रुपए चुकाई गई है। पानी भरने जाती तो आधा ही घड़ा लेकर लौटती, वह भी लचकती, बलखाती। पड़ोस की मीरन ने समझाया–'ऐसा नखरा ठीक नहीं। मर्दों को काम प्यारा होता है। किसी रोज़ ऐसी मार पड़ेगी कि कमर सदा को लचक जाएगी।'

लड़के पर जवानी आती देख जब्बार के बाप ने पड़ोस के गाँव में एक लड़की तजवीज़ कर ली। लेकिन जब्बार ने हस्बा की लड़की शब्बू को जो पानी भर कर लौटते देखा, तो उसकी सुध-बुध जाती रही।

जैसे कथा कहानी में कहा जाता है कि शाहज़ादा नदी में बहता हुआ सोने का एक बाल देख सोने के केशधारी सुंदरी के प्रेम से आहत महल की अटारी में उपवास कर लेट गया था; बहुत कुछ वैसा ही हाल जब्बार का भी हुआ। मुँह से तो कुछ कह न सका पर शिथिल शरीर, चेहरे का रंग उड़ा हुआ, कुछ खोया-खोया सा वह रहने लगा।

माँ-बाप ने उसकी हालत देखकर सलाह की। मुँह-दर-मुँह नहीं पर उसे सुना दिया कि ब्याह जल्दी ही उसका हो जाएगा। लड़की भी बच्चा नहीं, बिलकुल जवान है। शमसल की बड़ी बेटी जहुन्ना आस-पास के चार गावों में एक ही लड़की है। पानी का बड़ा मटका सिर पर उठाकर धमकती दो मील चली जाती है। घर भर का काम सँभालती है अभी से! यहाँ आ जाएगी तो जब्बार की माँ को भी चैन मिलेगा। बूढ़ी हो गई बेचारी। पर जब्बार को इससे कुछ तसल्ली न हुई। वह अक्सर लंबी-लंबी आहे खींचकर चुपचाप पड़ा रहता।

एक रोज़ माँ ने आँखों में आँसू भर अपनी क़सम धराकर पूछा–तो उसने सच कह दिया। जहुन्ना की बात सुनने से भी उसने इनकार करके कहा–'या तो हस्बा की बेटी शब्बू, नहीं तो बस!...कुछ नहीं।'

माँ-बाप ने बहुत समझाया। उसे सुनता देखते तो आपस में जहुन्ना की तारीफ़ और शब्बू की निंदा करने लगते। फिर जो लोग ऐसी बेशर्मी से ब्याह करते हैं उनकी कितनी निंदा होती है, यह सब वे लड़के को काकोक्ति, अलंकार और रूपक द्वारा समझाकर हार गए। पर धुन का पक्का जब्बार न माना तो न माना।

बेटे की ज़िद्द से हार मान बूढ़ा गफ़्फ़ार एक रोज़ हस्बा से बात करने गया। जब वह लौटकर आया तो क्रोध से उसकी आँखें लाल और ग्लानि से चेहरा विरूप हो रहा था। बंदूक़ कोने में रख, कंधे की चादर ज़मीन पर फेंक वह ज़मीन पर ही बैठ गया।

जब्बार की माँ ऊँटों को बेरी की पत्तियाँ खिला रही थी। तुरंत बूढ़े के समीप दौड़ी आई। जब्बार दूर से ही उत्सुक कान लगाए था। बूढ़ा मानो फट पड़ा–'ऐसे नालायक़ बेटे से बेऔलाद भला!'

जब्बार की माँ ने घबराकर बेटे की बलाएँ अपने सिर लेते हुए नाक पर हाथ रख कर पूछा–'हाय-हाय! हुआ क्या?'

बूढ़े ने कहा–'होगा क्या? ऐसे बे-शर्म बे-ग़ैरत लड़के से और होगा क्या? तमाम इज़्ज़त खाक़ में मिल गई और घर मिट्टी में मिल जाएगा।'

माँ ने फिर बलाएँ लेकर पूछा–'हाय हुआ क्या? ऐसा क्यों कहते हो!'

बाप ने कहा–'अगर इसके ऐसे ही मिज़ाज थे तो यह क़लात के खान के यहाँ पैदा क्यों नहीं हुआ? जानती है, हस्बा ने क्या कहा? सीधे मुँह से बात भी न की। कहती है, शब्बू की बात तुम मत सोचो। उसे वह ब्याहेगा जो अढ़ाई सौ रुपए की गठरी बाँधकर लाएगा।'

अढ़ाई सौ रुपए की बात सुन जब्बार की माँ की आँखें ऊपर चढ़ गईं। बूढ़ा बोला–'तू भी बूढ़ी हो गई। तू ही बता-तूने कभी ऐसा तूफ़ान सुना है; उमर में?...अढ़ाई सौ रुपए!...कोई चीज़ ही नहीं होती?'

शमसल से मैंने जहुन्ना के लिए बात की थी। उसने लड़की के अस्सी माँगे थे, आखरि साठ पर तैयार है। उसकी लड़की भी एक आदमी है। और वह बदज़ात माँगता है–अढ़ाई सौ। और फिर तू बूढ़ी हो गई; तू ही बता, रंग ज़रा मैला हुआ तो क्या, और ज़रा साफ़ हुआ तो क्या? औरत औरत सब एक। तुझे अपने काम से मतलब कि रंग से? अभी छः महीने नहीं हुए इसके लिए बंदूक़ खरीदी थी तो वह ऊँट बेचा था। अड़ाई सौ रुपए उमर भर में कमा तो पाएगा नहीं और शान यह है! अच्छा तू ही बता–इतनी बूढ़ी हुई, अढ़ाई सौ रुपए कभी औरत के दाम सुने हैं?...अढ़ाई सौ रुपए में तो फिरंगी की तोप खरीदी जाती है।'

जब्बार ने सुना और आह को सीने में दबाकर करवट बदल ली।

एकलौते बेटे का यूँ दिन-रात बिसूरना माँ-बाप से देखा न गया। बूढ़े ने कहा–'मेरा क्या है? पका फल हूँ! कब टपक पड़ूँ? जो कुछ है इसी के लिए

Festive Collection
WELCOME THE FESTIVITIES WITH A BURST OF GLAMOUROUS COLOUR
SHOP NOW
www.festivacollection.com

नाक न रहने पर हवा होटों की अपेक्षा नाक के छेद से अधिक निकल जाती है और स्वर बिलकुल नक्की (प्लुत अनुस्वार) हो जाता है। उसी स्वर में मिनमिना कर शब्बू ने कहा–'मेम साहब कहती हैं विलायत से रबड़ की नाक मँगवाई जा सकती है।' जब्बार ने घबराकर उत्तर दिया–'बस रहने दे। हमें नाक नहीं चाहिए। मुझे तू बिना नाक के ही भली मालूम होती है। मुझे क्या नाक औरों को दिखानी है?' शब्बू उदास हो गई। उसने खाना खाने से इनकार कर दिया। जब्बार के लिए बड़ी भयंकर समस्या आ पड़ी। उसने सोचा बुरा हो इस मेम का। मैंने एक नाक काटी थी, वह दूसरी बनाने को तैयार है। जब दो दिन शब्बू ने खाना नहीं खाया तो जब्बार ने रबड़ की नाक की क़ीमत चालीस रुपए डाक्टर के यहाँ जमा करादी।

हैं। रोज़ी का सहारा ये दो ऊँट हैं ये भी जाएँगे तो फिर खुद ही फिरंगियों की सड़क पर रोड़ी कूटने की मज़दूरी करेगा। लोग यही कहेंगे कि गफ़्फ़ार का बेटा मज़दूरी करने लगा, सो इसकी क़िसमत! मैं क्या सदा बैठा रहूँगा?'

आखिर दोनों ऊँट भी बन्नू के बाज़ार में बेच दिए गए और शब्बू जब्बार की बहू बन के घर आ गई।

शब्बू को इस बात का कम गर्व नहीं था कि उसकी क़ीमत गिन कर अढ़ाई सौ रुपए चुकाई गई है। पानी भरने जाती तो आधा ही घड़ा लेकर लौटती, वह भी लचकती, बलखाती। पड़ोस की मीरन ने समझाया–'ऐसा नखरा ठीक नहीं। मर्दों को काम प्यारा होता है। किसी रोज़ ऐसी मार पड़ेगी कि कमर सदा को लचक जाएगी।'

अपनी कान तक फैली आँखें मटकाकर और हाथ का अँगूठा दिखाकर शब्बू ने कहा–'ओहो! मेरे बाप ने बारह बीसे और दस रुपए गिन कर मुझे मार खाने को ही तो यहाँ भेजा है? कोई मुझे हाथ तो लगाए? तेरा क्या है? तेरे मर्द ने तीन बीसे में तुझे लिया है।...लँगड़ी लूली हो जाएगी तो एक और सही।'

ग़ज़ब की शोख़ और शौक़ीन थी शब्बू! वह काले मखमल की वास्कट पहरती जिसकी सिलाइयों पर सीप के तीन सौ बटन टँके थे। अपने बालों में मक्खन लगाती और बाहर जाने से पहले पानी का हाथ लगाकर उन्हें सवार लेती। महीने में दो-दो बेर अपने बाल धोती।

जब्बार की माँ यह सब देखती और नाक पर हाथ रख पढ़ोसिन से कहतीं–'देखो तो, अढ़ाई सौ रुपए देकर ब्याह किया पर मुझे क्या आराम मिला? इसे तो अपने नखरों से ही छुट्टी नहीं।'

बूढ़े ने बेटे को समझाया 'जवानी की तेरी उमर है। कुछ कमाई अब नहीं करेगा तो कैसे निबाह होगा। यूँ घर बैठा रहना क्या तुझे सोहाता है! रोज़ी का एक ज़रिया मेरे ऊँट थे, सो तेरे ब्याह में खत्म हो गए। अब भी तू कुछ नहीं करेगा तो क्या मैं परदेस जाकर मज़दूरी करूँगा?

मन मार कर जब्बार को कमाई करने बन्नू जाना पड़ा, लेकिन मन उसका गाँव में ही रहता। पूरा सप्ताह जब्बार को बन्नू गए नहीं हुआ था कि वह शब्बू की याद से बेकल हो एक दिन आधी रात में उठ अपने गाँव को चल दिया।

सोलह मील चलकर जब उसे ऊषा की अस्पष्ट लाल आभा में पहाड़ी पर अपने गाँव की छतें दिखाई दीं तो वह ठिठक गया। अपने गाँव की क्रुद्ध मूर्ति और पड़ोसियों की लाँछना के विचार ने उसके पैरों में बेड़ियाँ डाल दीं। वह एक चट्टान पर बैठ अपने घर के दरवाज़े की ओर देखने लगा। उसने सोचा–पानी भरने शब्बू निकलेगी तब वह उसे एक आँख देख सकेगा। बावड़ी पर चलकर बैठूँ, शब्बू पानी भरने आएगी तो उससे दो बातें करके लौट जाऊँगा।

शब्बू पानी लेने आई तो दो सहेलियों के साथ। जब्बार तीस क़दम पर एक पत्थर की ओट में बैठ धड़कते हुए दिल से देखता रहा पर एक शब्द बोल न सका। बोलता कैसे? वह दोनों पड़ोसिने बदनाम कर देतीं। दिल पर पत्थर रखे जब्बार देखता रहा, शब्बू सहेलियों से चुहल करती, मटकती लौट गई। जब्बार आहें भरता बन्नू लौट गया।

जब्बार के विरह की आग में ईर्षा का घी पड़ गया। उसने सोचा देखो, मैं यहाँ परदेश में अकेला मर रहा हूँ और वह मौज करती है। उसे मेरा ज़रा भी ग़म नहीं। औरत की ज़ात में वफ़ा नहीं होती।

आठ दस दिन बाद यह फिर रातों रात सफ़र कर शब्बू को एक पलक देख सकने और एक चुंबन पा सकने की आशा में गाँव की बावली पर आकर बैठ गया। परंतु वह अकेली नहीं आई। पड़ोस की तीन सहेलियों के साथ अठखेलियाँ करती आई। जब्बार उनकी बात को कान लगाकर सुन रहा था।

मीरन ने शब्बू की ठोड़ी छूकर कहा–'हाय रे तेरा नखरा। गाँव के छैले तुझ पर जान दे रहे हैं, क़सम तेरे सिर की!'

शब्बू के चेहरे पर गर्व से सुरूर छा गया। वे पानी लेकर लौट गईं। जब्बार की छाती पर मानो सौ मन का पत्थर आ गिरा, पर बेबस था।

अब उसके मन में संदेह का अंकुर और जमा। संदेह मनुष्य के हृदय में आकाश बेल की तरह बढ़ता है। उसके लिए जड़ या बुनियाद की भी ज़रूरत नहीं। वह कल्पना के आकाश में ही पुष्ट होता है। संदेह को निश्चय का रूप लेते भी देर नहीं लगती।

गाँव में ऐसे कई लौंडे लुँगाड़े थे, जिन्हें फ़ितूर के अलावा कुछ काम न था। रहमान और अब्बास से हर एक बात की आशा रखी जा सकती थी। और फिर यदि कुछ दाल में काला नहीं है तो मीरन ऐसी चर्चा क्यों कर रहीं थी? और शब्बू की यह चटक-मटक किसके लिए है? देखो, उसे मेरा ज़रा भी ग़म नहीं! और मैं मरा जा रहा हूँ! जब्बार लहू के घूँट पी-पी कर रह जाता।

उसने सोचा, रुपया कमाने के लिए ही तो वह घर से दूर यहाँ पड़ा है। यूँ आठ आने-दस आने रोज़ में रुपया नहीं कमाया जा सकता। घर लौटने की आग ने उसे बावला कर दिया। एक दिन मौक़ा देख उसने एक हाथ मार ही दिया। क़िसमत अच्छी थी। वह पकड़ा भी नहीं गया और डेढ़ सौ रुपया

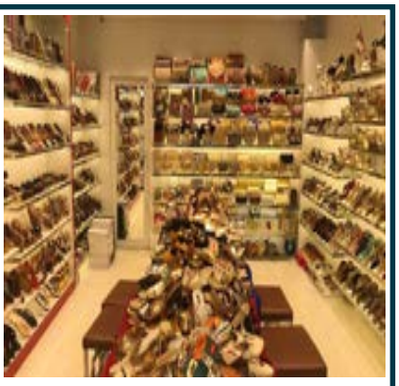

स्पेशल ऑफर के साथ

क़ाजल फुट वेयर

हमारे यहां सभी प्रकार के फुटवेयर उपलब्ध है

कर्जत स्टेशन के पास (वेस्ट)

आशापुरा ज्वैलर्स

सोने-चांदी के गहनों के व्यापारी

शिवाजी रोड, शहाड़ फाटक, उल्हासनहर-४
फोनः ०२५१-२७०९९६२

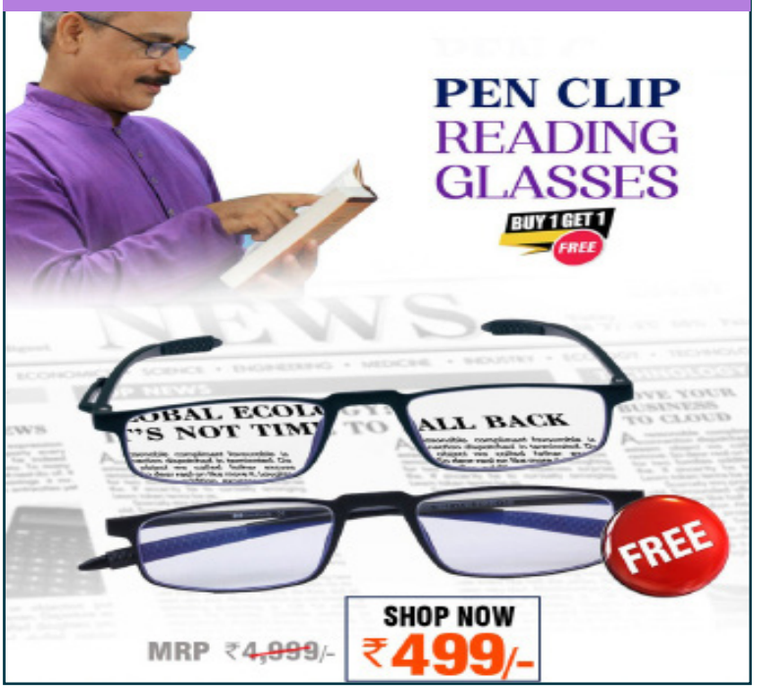

कमाकर डेढ़ महीने में घर लौट आया। जब्बार के बाप को हौसला हो गया, बेटा भूखा नहीं मरेगा।

जैसे नील का दाग़ कपड़े को नहीं छोड़ता वैसे ही जिस मन में संदेह एक बार प्रवेश कर जाता है, उसे छोड़ता नहीं। जब्बार ने शब्बू से पूछा–'क्यों? जब मैं बन्नू में था तो खूब़ मज़े उड़ते थे?।'

शब्बू भी निरी मज़दूरिन न थी। चमक कर उसने पूछा–'कैसे मज़े? किससे मज़े उड़ते थे'

जब्बार ने कहा–'क्यों गाँव में क्या कम आदमी हैं! रहमान है, अब्बास है। खूब़ बनाव-सिंगार से पानी लेने जाना होता था, क्यों?'

शब्बू ने कहा–'मैंने कभी किसी मरे की तरफ़ आँख उठाकर देखा हो तो मैं मर जाऊँ, नहीं मुझ पर झूठा इल्ज़ाम लगाने वाला मर जाए!'

जब्बार ने तड़प कर पूछा–'तू बन ठनकर अपना हुस्न दिखाने नहीं जाती थी?'

शब्बू ने उत्तर दिया–'मैं क्यों जाऊँगी दिखाने किसी को?...कोई मरा घूरा करे तो मेरा क्या क़सूर?'

जब्बार ने चुटिया कर पूछा–'तो तू यूँ बन ठनकर दिखाने को निकलती क्यों है?'

अपने सौंदर्य के अभिमान में सिर ऊँचा कर शब्बू ने कहा–'मैं क्या करती हूँ?... क्या मुँह काला कर लूँ?...मैं जैसी हूँ वैसी हूँ।'

जब्बार बड़े यत्न से शब्बू की चौकसी करने लगा। वह शब्बू से सौ क़दम दूर पर भी आदमी देख पाता तो उसे यही संदेह होता कि वह उससे आँख लड़ा रहा है। कुछ दिन में उसका खाना-पीना हराम हो गया। किसी मुसाफ़िर को गाँव से गुज़रते देखकर भी उसे यह शंका होती कि संभव है शब्बू के रूप की ख्याति सुनकर ही यह आदमी बहाने से इधर आया है। सारा गाँव उसे शब्बू के पीछे पागल दिखाई पड़ने लगा।

एक रात जब्बार ने शब्बू से पूछा–'आज तू बाहर से लौट रही थी तब राह में मुस्कुरा क्यों रही थी?'

उत्तर में शब्बू ने पूछा–'मैं कहाँ मुस्कुरा रही थी?'

जब्बार ने कहा–'और वे सब आदमी खड़े हुए क्यों देख रहे थे?'

अपने रूप की महिमा के संकेत से पुलकित होकर शब्बू ने उपेक्षा से उत्तर दिया–'मैं क्या जानूँ?'

होंठ काटकर जब्बार ने कहा–'बहुत घमंड होगा हुस्न का!... नाक काट लूँगा?'

शब्बू का मन गुदगुदा उठा। उसने कह दिया–'बारह बीसे और दस रुपए की नाक है!' और मन-मन मुस्कुराने लगी।

शब्बू सो गई। परंतु जब्बार की आँखों में नींद कहाँ। उसने पुकारा–'सुन तो!' उत्तर नदारद।

जब्बार ने सोचा–देखो तो घमंड इसका!...'मैं बेचैन पड़ा हूँ और यह मज़े में सो रही है। यह सब घमंड हुस्न का है। इसी हुस्न के पीछे गाँव के बदमाश पागल हैं। मेरी क्या आबरू है? अगर यह हुस्न न होता तो क्या मेरी आबरू यूँ मिट्टी में मिल ती?...ऐसे हुस्न से क्या फ़ायदा?

गंभीर होकर इस समस्या पर विचार कर उसने सोचा–आबरू नहीं तो कुछ नहीं। और यह हुस्न तो सब लोग देखते हैं। मेरा इस पर क्या क़ब्ज़ा? जब तक यह हुसन रहेगा तब तक मुझे आबरू और चैन कहाँ मिल सकता है?

रात के सन्नाटे में जो विचार उठते हैं वे बहुत उग्र होते हैं। दिन की तरह उस समय विचारों को बाधित करने वाली सैंकड़ों उलझनें नहीं रहती। इसीलिए भक्त समाधि रात में लगाते हैं, क़ातिल क़त्ल रात में करते हैं और चोर चोरी रात में करते हैं और विरही भी रात में ही पागल हो उठते हैं।

जब्बार अँधेरे में आँख खोले शब्बू के रूप के कारण होने वाले सब अनर्थ पर विचार कर रहा था। वह अनर्थ उसे अपरिमेय जान पड़ा। उसे सहन करना बिलकुल संभव न था।

उसने सिरहाने से पैना छुरा उठाया और अँधेरे में टटोल कर शब्बू की नाक पकड़ ली। एक ही झटके में नाक काटकर उसने फेंक दी।

शब्बू चीख उठी। जब्बार की माँ उठकर दौड़ी। रोशनी जलाई गई। पड़ोस के लोग दौड़ आए। जब्बार का बाप गुस्से में गालियाँ दे रहा था और दूसरे लोग इलाज बता रहे थे। एक बुढ़िया ने चिल्ल ा कर कहा–'अरे जल्दी से कोई भेड़ बकरी का ताज़ा, गर्म-गर्म, ज़िंदा गोश्त का टुकड़ा काटकर नाक पर रखो नहीं तो लड़की मर जाएगी!'

जब्बार की माँ ने घबराकर कहा–'इस वक़्त भेड़-बकरी कहाँ?' बुढ़िया ने उत्तर दिया–'तो तुम जानो।'

जब्बार खड़ा सुन रहा था। शब्बू की नाक उसने इसलिए काटी थी कि वह केवल उसी की होकर रहे। दूसरों की आँख उस पर पड़ना भी उसे सह्य न था। वह शब्बू को केवल अपने ही लिए रखना चाहता था। दूसरे की आँख उस पर पड़ने से उसके दिल पर घाव लगता था। उसके मर जाने की संभावना सुन उसका दिल दहल गया।

ज़िंदा गरम गोश्त नहीं मिलेगा तो क्या...! उसने वही पैना छुरा उठाया और अपनी जाँघ से ज़िंदा गरम गोश्त का टुकड़ा काट कर शब्बू की नाक पर धर दिया। जब्बार के माँ और बाप बिल कुल पागल हो बैठे और दूसरे लोग हैरान रह गए।

शब्बू चेहरे पर घाव के दर्द के मारे खाट पर पड़ी कराहती रहती और जब्बार जाँघ में पट्टी बाँधे खाट की पटिया पर बैठा शब्बू के चेहरे पर से मक्खियाँ हाँका करता। ज़ख़्म के कारण शब्बू का तमाम चेहरा सूझ गया। पानी का घूँट तक निगलना उसके लिए दूभर हो गया, तिस पर बुखार! यह हालत देखी तो जब्बार ने उसका इलाज बन्नू के फिरंगी डाक्टर वाले अस्पताल में कराने का निश्चय किया। स्वयं बड़ी कठिनाई से वह चल पाता था परंतु एक रात जब सब लोग सो रहे थे, उसने शब्बू को कंधे पर उठा लिया और बग़ल में लाठी ले वह बन्नू के लि ए चल पड़ा।

वह कुछ दूर चलता और सुस्ता लेता। कपड़ा भिगोकर पानी की बूंदें शब्बू के मुँह में टपकाता जाता। पाँचवें दिन वे लोग बन्नू के अस्पताल में पहुँच गए। बीस रोज़ में शब्बू का ज़ख्म भर पाया और उसकी तबीअत ठिकाने पाई।

नाक न रहने पर हवा होटों की अपेक्षा नाक के छेद से अधिक निकल जाती है और स्वर बिलकुल नक्की (प्लुत अनुस्वार) हो जाता है। उसी स्वर में मिनमिना कर शब्बू ने कहा–'मेम साहब कहती हैं विलायत से रबड़ की नाक मँगवाई जा सकती है।'

जब्बार ने घबराकर उत्तर दिया–'बस रहने दे। हमें नाक नहीं चाहिए। मुझे तू बिना नाक के ही भली मालूम होती है। मुझे क्या नाक औरों को दिखानी है?'

शब्बू उदास हो गई। उसने खाना खाने से इनकार कर दिया। जब्बार के लिए बड़ी भयंकर समस्या आ पड़ी। उसने सोचा बुरा हो इस मेम का। मैंने एक नाक काटी थी, वह दूसरी बनाने को तैयार है।

जब दो दिन शब्बू ने खाना नहीं खाया तो जब्बार ने रबड़ की नाक की क़ीमत चालीस रुपए डाक्टर के यहाँ जमा करादी। पर शर्त एक रही कि शब्बू नाक लगाएगी ज़रूर लेकिन ग़ैर मर्द अगर उसे घूरने लगे तो झट नाक उतार कर जेब में डाल ले।

-यशपाल

स्रोत : पुस्तक : वो दुनिया

3 Austrian Diamond
Jewellery Sets
(3AUD2)
M.R.P. : ₹1,999
Only At
₹499

गणेश चतुर्थी : २०२४

हर साल गणेश उत्सव भाद्रपद माह के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि को गणपति भगवान का जन्म हुआ था. इसीलिए इस पर्व को हर साल इस समय मनाया जाता है.गणेश चतुर्थी का पर्व साल २०२४ में ७ सितंबर, शनिवार के दिन मनाया जाएगा. इस दिन का हिंदू धर्म में बहुत महत्व है. वैसे तो गणेश चतुर्थी की धूम पूरे देश में रहती है लेकिन महाराष्ट्र में इस पर्व में बहुत हर्ष और उल्लास और उत्साह के साथ मनाया जाता है.

गणेश चतुर्थी के पर्व को भगवान गणेश के जन्म उत्सव के रुप में मनाया जाता है. रिद्धि सिद्धि के दाता भगवान गणेश की इस दिन आराधना की जाती है. हर साल गणेश उत्सव भाद्रपद माह के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि को गणपति भगवान का जन्म हुआ था. इसीलिए इस पर्व को हर साल इस समय मनाया जाता है.गणेश चतुर्थी का पर्व साल २०२४ में ७ सितंबर, शनिवार के दिन मनाया जाएगा. इस दिन का हिंदू धर्म में बहुत महत्व है. वैसे तो गणेश चतुर्थी की धूम पूरे देश में रहती है लेकिन महाराष्ट्र में इस पर्व में बहुत हर्ष और उल्लास और उत्साह के साथ मनाया जाता है.

गणेश चतुर्थी २०२४ तिथि

चतुर्थी के दिन तिथि ०६ सितंबर, २०२४ को दोपहर ३:०१ मिनट पर लग जाएगी वहीं चतुर्थी तिथि अगले दिन ०७ सितंबर, २०२४ शनिवार को शाम ५:३७ मिनट पर समाप्त होगी. भगवान गणेश का जन्म मध्याह्न काल के दौरान हुआ था इसीलिए मध्याह्न के समय को गणेश पूजा के लिये ज्यादा उपयुक्त माना जाता है

गणेश चतुर्थी २०२४ स्थापना का समय

गणेश चतुर्थी के दिन बप्पा की पूजा और स्थापना का सही मुहूर्त हैं, ७ सितंबर, २०२४ शनिवार को सुबह ११.०३ मिनट से दोपहर १.३४ मिनट तक. इस दौरान आप बप्पा की स्थापना घर में कर सकते हैं. इस साल यह अवधि कुल २.३१ मिनट की है.

गणेश चतुर्थी पर इन बातों का रखें ध्यान

गणेश उत्सव को भगवान गणेश के पुनर्जन्म का जश्न मनाया जाता है. ७ सितंबर २०२४ को मध्याह्न गणेश स्थापना के लिए सुबह ११:१० से दोपहर ०१:३९ शुभ मुहूर्त बन रहा है. १० दिन तक बप्पा की पूजा में कुछ खास नियमों का जरुर ध्यान रखें, जैसे गणेश जी की उपासना में सूखे फूल, तुलसी, केतकी का फूल, टूटे अक्षत वर्जित माने गए हैं.

१. घर में सिंदूरी गणेश बैठाना शुभ माना जाता है. इससे घर की नकारात्मक ऊर्जा का नाश होता है.
२. गणेश उत्सव के दौरान घर में गणेश जी विराजित करते हैं तो घर को कभी सूना न छोड़े न ही जहां बप्पा बैठे हों वहां अंधेरा करें. रोज सुबह-शाम आरती करना न भूलें.
३. गणेश जी की मूर्ति का चुनाव करते वक्त ध्यान रखे कि उसमें चूहा जरूर हो. मूषक यानी चूहा गणपति का वाहन है. मान्यता है बिना मूषक की गणेश मूर्ति की पूजा करने से दोष लगता है.
४. गणेश चतुर्थी पर हमेशा घर में बैठी मुद्रा में गणेश प्रतिमा स्थापित करें. शास्त्रों के अनुसार बैठे गणपति धन का प्रतिनिधित्व करते है.
५. गणेश जी की बाईं ओर वाली सूंड की प्रतिमा बहुत शुभ होती है. बाईं ओर सूंड वाली मूर्ति को वाममुखी गणपति कहा जाता है. इनकी उपासना से बप्पा जल्द प्रसन्न होते हैं.

घर में अगर गणेश जी विराजित कर रहे हैं और १० दिन से पहले ही मूर्ति विसर्जन करना चाहते हैं तो डेढ़, तीन, या पांच दिन तक गणपति बैठाएं. इसके बाद ही शुभ मुहूर्त विसर्जन करें.

गणेश चतुर्थी २०२४ शुभ योग

गणेश चतुर्थी के दिन बहुत से शुभ योगों का निर्माण हो रहा है, जो इस दिन को और विशेष बना रहे हैं. ७ सितंबर के दिन सर्वार्थ सिद्धि योग बना रहा है. इस दिन दोपहर १२:३४ से सुबह ०६:०३, ०८ सितंबर तक ये योग रहेगा. साथ ही रवि योग का निर्माण भी हो रहा है. रवि योग ६ सितंबर की सुबह ०९:२५ से लेकर ७ सितंबर को दोपहर ०६:०२ से १२:३४ तक रहेगा.इस दिन ब्रह्म योग का निर्माण भी हो रहा है. यह योग रात ११.१५ मिनट तक रहेगा.

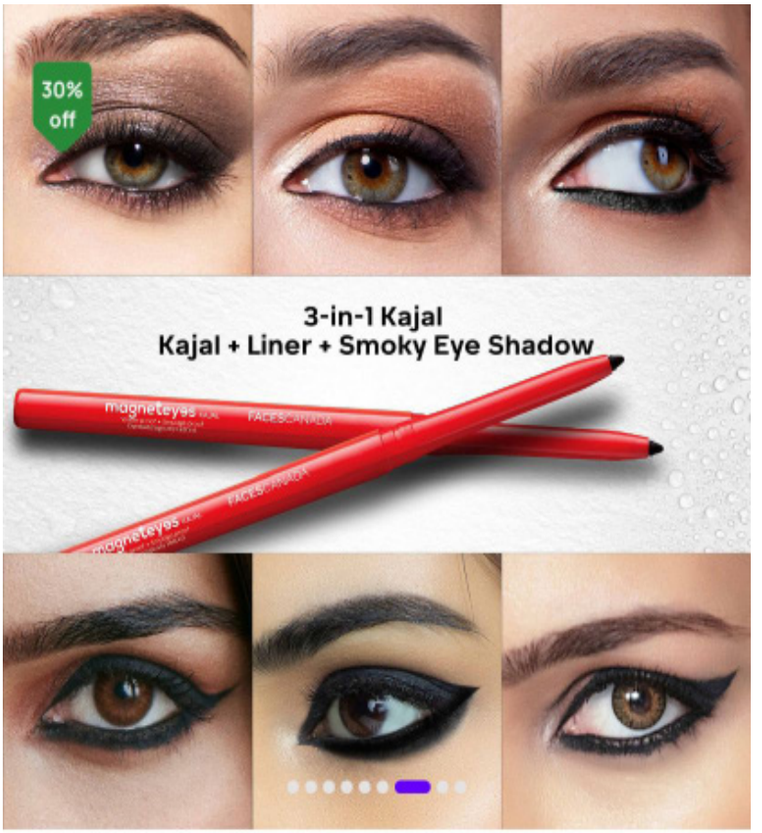

Faces Canada Magneteyes Kajal Duo Pack

Faces Canada Magneteyes Kajal Duo Pack

Adviteeyamina
Akshayadrutiya
Amazing
Offer
SOUTH INDIA
shopping mall
Kukatpally • Patny Centre
Gachibowli • Kothapet

PACK OF 5 V NECK T-SHIRT
M.R.P. :₹2,495/-
OFFER PRICE ₹599

NIRLON
12 CAVITY
NON- STICK APPAM PATRA
WITH LONG HANDLE & LID
MRP ₹999/-
SHOP NOW
₹399/-

10 BEDSHEET SETS
+ 15 PILLOW COVERS
MEGA COMBO
SHOP NOW
₹1,999/-

Easy Go Stylish
LEATHERITE TROLLY BAG
SHOP NOW
₹1,499/-

मक्का

'फसलों की रानी'

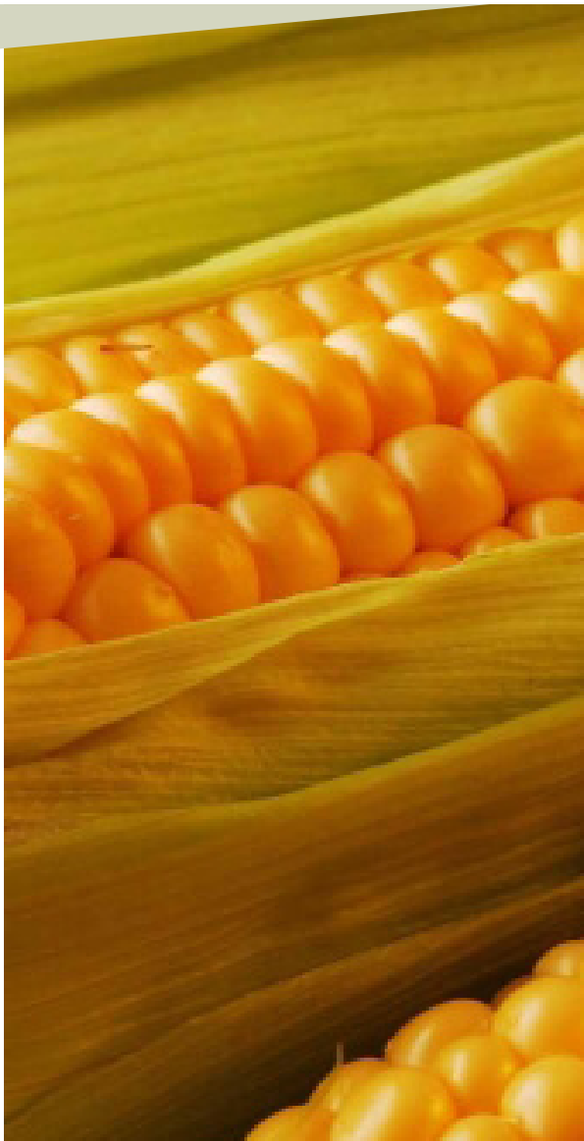

भारत में गेहूं व चावल के बाद मक्का तीसरी सबसे महत्वपूर्ण फसल के तौर पर विकसित हो रही है। भोजन के साथ ही कुक्कट पालन व एथनाल उत्पादन सहित विविध क्षेत्रों में मक्का का इस्तेमाल होने से न केवल भारत में बल्कि विश्व में भी मक्का की लोकप्रियता तेजी से बढ़ रही है। इससे देश के किसानों को गेहूं और धान की तुलना में यह फायदे वाली फसल दिख रही है। बांग्ल ादेश, नेपाल, म्यांमार, वियतनाम और मलेशिया जैसे देश भारत से मक्का के प्रमुख आयातक हैं। यह फसल मुख्य रूप से कर्नाटक, मध्य प्रदेश, केरल, बिहार, तमिलनाडु, तेलंगाना, महाराष्ट्र और आंध्र प्रदेश राज्यों में उगाई जाती है। भारत में, मक्के की खेती पूरे साल की जाती है और यह मुख्य रूप से खरीफ की फसल है, जिसके तहत मौसम के दौरान ८५ फीसदी खेती की जाती है। रबी मक्के की खेती १५ फीसदी ही की जाती है। जबकि रबी सीजन की मक्के फसल की उपज खरीफ की तुलना में ज्यादा है।

मक्का को दुनिया में खाद्यान्न फसलों की रानी कहा जाता है क्योंकि इसकी उत्पादन क्षमता खाद्यान्न फसलों में सबसे ज्यादा है. मक्का को खाने के साथ कुक्कुट आहार, पशु आहार, शराब और स्टार्च के रूप में इस्तेमाल किया जाता है. भारत में इससे १००० से ज्यादा उत्पाद तैयार किए जाते हैं. इसलिए मक्के की खेती अन्य फसलों की तुलना में ज्यादा फायदेमंद है. मक्के की खेती जायद में भी की जाती है. जायद में मक्का की खेती भुट्टो और चारे दोनों के लिए की जाती है. यह पोल्टरी वाले पशुओं की खुराक के तौर पर भी प्रयोग की जाती है। मक्की की फसल हर तरह की मिट्टी में उगाई जा सकती है क्योंकि इसे ज्यादा उपजाऊपन और रसायनों की जरूरत नहीं होती ।

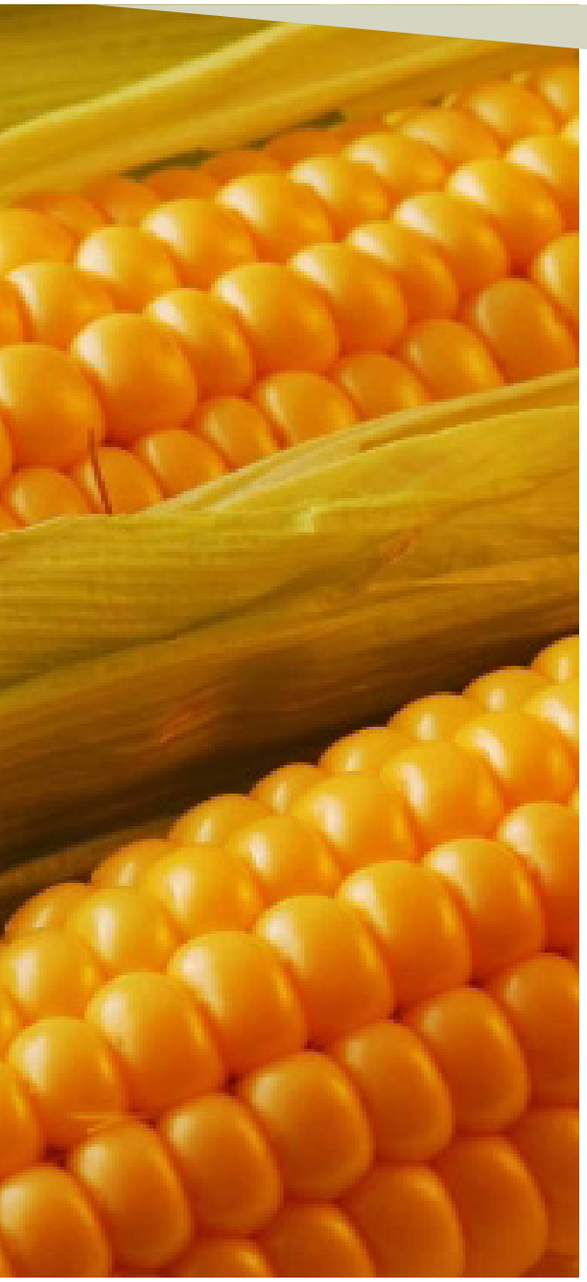

भारत में मक्का के उत्पादन का लगभग ४७ फीसदी पोल्ट्री फीड के रूप में उपयोग किया जाता है। बाकी उपज में से, १३ फीसदी का उपयोग पशुधन फ़ीड और भोजन के उद्देश्य के रूप में किया जाता है, १२ फीसदी औद्योगिक उद्देश्यों के लिए, १४ फीसदी स्टार्च उद्योग में, ७ फीसदी प्रसंस्कृत भोजन और ६ फीसदी निर्यात और अन्य उद्देश्यों के लिए उपयोग किया जाता है। किसान बिहार और छत्तीसगढ़ के कई जिलो में रबी के मौसम में गेहूं की जगह मक्के की खेती करना पसंद करने लगे हैं। गेहूं में अधिक लागत, कम उपज के चलते लोग मक्का की खेती ज्यादा करने लगे हैं। बिहार के ग्राम महदेवा जिला कटिहार के किसान रंजन कुमार ने पांच एकड़ में रबी मक्के की खेती की है। उन्होंने ने बताया कि गेहूं की तुलना में मक्के की खेती लाभदायक है। मक्के में कम पानी कम खाद में भी अच्छी उपज मिल जाती है। दूसरी तरफ गेहूं की खेती में जुताई से ल`कर कटाई तक १५ हजार से १६ हजार तक प्रति एकड़ खर्च आ रहा है और गेहूं का उत्पादन १४ से १५ कुंतल प्रति एकड़ मिल पाता है। रबी मक्के का उत्पादन २५ से २६ कुंतल तक प्रति एकड़ मिल जाता है और खर्च १० से १२ हजार रुपये ही प्रति एकड़ आता है। उन्होंने कहा हमारे यहां गेहूं भी लगभग २२०० रुपये कुंतल बिक रहा है और मक्का भी २१०० से २२०० रुपये कुंतल व्यापारी घर से खरीदारी करके बंगलादेश को निर्यात कर रहे है और मक्का की बिक्री में कोई परेशानी नही होती है। इस तरह रबी मक्के की फसल खेती हमारे जिले और आसपास के जिलों में मक्का एरिया तेजी एरिया बढ़ रहा है। और गेहूं का एरिया घट रहा है। सरकार फसलों के विविधीकरण कार्यक्रम के तहत, विभिन्न पहलों के जरिये किसानों को मक्का उत्पादन बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित कर रही है। साथ ही, सरकार ने विभिन्न पहल व पैकेजों से उद्यमियों को भी समर्थन किया है। हरियाणा सरकार भी घटते भूमि जल स्तर को देखते हुए खरीफ में धान की जगह किसानों को मक्के की खेती की सलाह दे रही क्योंकि एक किलो धान की उपज लेने में लगभग ३००० लीटर पानी की जरुरत होती है। एक किलो मक्का में २४५० लीटर पानी की जरूरत पड़ती है।

इसके इलावा यह पकने के लिए ३ महीने का समय लेती है जो कि धान की फसल के मुकाबले बहुत कम है, क्योंकि धान की फसल पकने के लिए १४५ दिनों का समय लेती है।

मक्का की फसल उगाने से किसान अपनी खराब मिट्टी वाली ज़मीन को भी बचा सकते हैं, क्योंकि यह धान के मुकाबले ९० प्रतिशत पानी और ७९ प्रतिशत उपजाऊ शक्ति को बरकरार रखती है। यह गेहूं और धान के मुकाबले ज्यादा फायदे वाली फसल है। इस फसल को कच्चे माल के तौर पर उद्योगिक उत्पादों जैसे कि तेल, स्टार्च, शराब आदि में प्रयोग किया जाता है। मक्की की फसल उगाने वाले मुख्य राज्य उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश, बिहार, हिमाचल प्रदेश, जम्मू कश्मीर और पंजाब हैं। दक्षिण में आंध्रा प्रदेश और कर्नाटक मुख्य मक्की उत्पादक राज्य हैं।

खेत की तैयारी

मक्का की खेती के लिए पर्याप्त जीवांश वाली दोमट मिट्टी अच्छी होती है. भली-भांति समतल और अच्छी जल धारण शक्ति वाली भूमि मक्का की खेती के लिए बेहतर होती है. पलेवा करने के बाद मिट्टी पलटने वाल ` हल से १०-१२ सेमी. गहरी एक जुताई तथा उसके बाद कल्टीवेटर या देशी हल से दो-तीन जुताइयां करके पाटा लगाकर खेत की तैयारी कर लेनी चाहिए.

बुवाई का समय

जिस क्षेत्र में कम बारिश होती है, वहां के किसानों के लिए यह वरदान से कम नहीं है. क्योंकि किसान ज्यादा पानी की जरूरत वाली फसलें नहीं लगा पाते हैं. वहां धान की रोपाई और कटाई देर से होती है. इस कारण रबी मौसम में गेहूं लगाने में देर होता है और उत्पादन कम मिलता है. मक्के की खेती कर जलवायु परिवर्तन के दौर में फसल चक्र सुधारने में मदद मिलेगी और किसानों को अधिक मुनाफा मिलेगा. मक्का की बुवाई के लिए साल में कभी भी खरीफ, रबी और जायद मौसम कर सकते हैं. खरीफ में बुवाई का समय मध्य जून से मध्य जुलाई है. पहाड़ी और कम तापमान वाले क्षेत्रों में मई के अंत से जून के शुरुआत में मक्का की बुवाई की जा सकती है. २०-२५ किग्रा. संकुल और १८-२० किग्रा. संकर बीज प्रति हेक्टेयर पर्याप्त होता है. बीज को २.५ ग्राम थीरम या २ ग्राम कार्बेन्डाजिम रसायन से प्रति किलो बीज को शोधित करके बोएं. मक्का की बुवाई हल के पीछे उठे हुए बेड पर लाइनों में करें. संकर व संकुल प्रजातियों की बुवाई ६० सेमी. की दूरी पर करनी चाहिए. पौधे से पौधे की दूरी २०-२५ सेमी. रखनी चाहिए.

मक्के की खेती में मुनाफा ज्यादा

मक्का को पीला सोना भी कहा जाता है. एक हेक्टेयर में मक्का की खेती से किसानों को १.५० लाख रुपये से ज्यादा का नेट मुनाफा मिल सकता है. विश्व के खाद्यान्न उत्पादन में इसका २५ प्रतिशत योगदान है। धान्य फसलों के क्षेत्रफल एवं उत्पादन की दृष्टि से मक्का का स्थान तीसरा है।

भारत में मक्का का रकबा ७.२७ मिलियन हेक्टेयर है। मक्का की असिंचित खेती खरीफ के मौसम में की जाती है। इन दोनों जलवायु क्षेत्रों में मक्का की खेती घर के आसपास के खेतों, जिन्हें बाड़ी कहते हैं में की जाती है। सिंचाई साधनों के साथ मक्के की खेती वर्ष भर की जा सकती है। देर से पकने वाली धान फसल पद्धति में जायद धान फसल के स्थान पर जनवरी - फरवरी में जायद मौसम में मक्का की खेती सफलतापूर्वक की जा सकती है।

जलवायु -

मक्का एक ग्रीष्मकालीन फसल है। सभी अवस्थाओं में तापमान लगभग २५० डिग्री सेन्टीग्रेट के आसपास होने चाहिए। पकते समय गर्म तथा शुष्क वातावरण उपर्युक्त होता है। पाला फसल की किसी भी अवस्था के लिये हानिकारक हो सकता है। असिंचित मक्के की खेती के लिए वार्षिक वर्षा २५ से.मी. से लेकर ५०० से.मी. तक पर्याप्त होता है।

भूमि का चुनाव -

अधिकतम बढ़वार और पैदावार के लिए अधिक उपजाऊ दोमट मिट्टी जिसमें वायु संचार अधिक हो, पानी का निकास उत्तम हो तथा जीवांश पदार्थ काफी मात्रा में पाया जाता हो, उत्तम होती है। मक्के की खेती ऐसी भूमि में की जानी चाहिए जिसका पी.एच.मान ६.० से ७.० तक हो।

जल भराव मक्के की फसल के लि ये बहुत हानि कारक होता है। मक्का की अधिकतम पैदावार के लिये उच्चहन भूमि उत्तम है। सामान्यतः मक्का की खेती सभी प्रकार की मृदाओं, बालुई मिट्टी से भारी चिकनी मिट्टी तक में सफलतापूर्वक की जा सकती है।

लेखकों से निवेदन

मौलिक तथा अप्रकाशित-अप्रसारित रचनाएँ ही भेजें।
रचना फुलस्केप कागज पर साफ लिखी हुई अथवा शुद्ध टंकित की हुई मूल प्रति भेजें।
ज्यादा लंबी रचना न भेजें।
सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षणिक, साहित्यक, स्वास्थ्य, बैंक व व्यवसायिक से संबंधित रचनाएँ आप भेज सकते हैं।
प्रत्येक रचना पर शीर्षक, लेखक का नाम, पता एवं दूरभाष संख्या अवश्य लिखें ; साथ ही लेखक परिचय एवं फोटो भी भेजें।
आप अपनी रचना ई-मेल द्वारा भेज सकते हैं।
रचना यदि डाक द्वारा भेज रहे हैं तो डाक टिकट लगा लिफाफा साथ होने पर ही अस्वीकृत रचनाएँ वापस भेजी जा सकती हैं। अतः रचना की एक प्रति अपने पास अवश्य रखें। स्वीकृत व प्रकाशित रचना का ही उचित भुगतान किया जायेगा।
किसी विशेष अवसर पर आधारित आलेख को कृपया उस अवसर से कम-से-कम एक या दो माह पूर्व भेजें, ताकि समय रहते उसे प्रकाशन-योजना में शामिल किया जा सके।
रचना भेजने के बाद कृपया दूरभाष द्वारा जानकारी न लें। रचनाओं का प्रकाशन योजना एवं व्यवस्था के अनुसार यथा समय होगा।

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. ,
Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane,
PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
mangsom@rediffmail.com

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

ADVERTISEMENT TARRIF

No.	Page	Colour	Rate
1.	Last Cover full page	Colour	50,000/-
2.	Back inside full page	Colour	40,000/-
3.	Inside full page	Colour	25,000/-
4.	Inside Half page	Colour	15,000/-
5.	Inside Quater page	Colour	07,000/-
6.	Complimenty Adv.	Colour	03,000/-
7.	Bottam Patti	Colour	2500/-

6 Months Adv. 20% Discount

1 Year Adv. 50% Discount

Mechanical Data: **Size of page:** **290mm x 230mm**

PLEASE SEND YOUR RELEASE ORDER ALONG WITH ART WORK IN PDF & CDR FORMAT

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. , Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane,
PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532